श्री राम जय राम जय जय राम ✿ श्री राम जय राम जय जय राम ✿ श्री राम जय राम जय जय राम

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति

स्मारिका

वर्ष-30

विक्रमी संवत् 2080 (सन् 2023-2024)

श्री राम जय राम जय जय राम ✿ श्री राम जय राम जय जय राम ✿ श्री राम जय राम जय जय राम

卐 ॐ गं गणपतये नमः 卐

!! श्रीराम !!

श्रीराम जय राम जय जय राम

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुख मूल।।

सम्पादक मण्डल

पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा

डॉ0 भगवान दास पटैरया

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'

श्री राजेश बैरागी, 'पत्रकार'

स्मारिका

विक्रमी संवत् 2080 सन् 2023–2024

वार्षिक अंक – 30

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

पंजीकृत कार्यालय : 593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली –110061

स्थानीय कार्यालय : ए–447, सैक्टर –47, नोएडा –201 303

वेबसाइट –www.shriramcharit.com ई–मेल -contactus@shriramcharit.com

दूरभाष – 0120–4305457

चल – 9811056467

मुद्रक : **AAR PACK**

प्रिंटिंग एण्ड पैकेजिंग सोलूसन्स

G-24, सैक्टर 11, नोएडा–201301

फोन : 0120–4347256

ईमेल : **aarpacknoida@gmail.com**

पाठकों से निवेदन

स्मारिका का यह वार्षिक अंक–30 आपके हाथ में है। इसके पूर्व के अंक आप हमारी वेबसाइट www.shriramcharitmanas.com पर देख सकते हैं। हमारा प्रयास रहा है कि इसमें भगवान श्रीरामजी के आदर्शों को प्रतिपादित करते हुए ऐसे लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनसे समाज में नैतिक मूल्यों का उत्थान हो। इस दिशा में हम कहाँ तक सफल हुए, यह आप ही बता सकते हैं। आशा करते हैं कि आप पत्रिका पढ़ कर हमें अपना लेख / अपनी प्रतिक्रिया अवश्य भेजेंगे, ताकि हम अगले अंक में उसे समाहित कर सकें। लेख के संदर्भ में निम्नांकित बिन्दु उल्लेखनीय हैं–

1. **लेख श्रीरामचरितमानस में वर्णित प्रसंगों पर तथा उसका शीर्षक यथासंभव चौपाई, दोहा आदि पर आधारित हो।**
2. लेख में उद्धरित दोहा–चौपाई आदि गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार हों। कृपया संदर्भ निम्नांकित प्रकार से अंकित करें।
   जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।। (5/1/1)
   5/1/1 का आशय है, पाँचवें काण्ड (सुंदरकाण्ड) के पहले दोहे की पहली चौपाई। सातों काण्डों को क्रमशः इस प्रकार से इंगित करें :– 1. बालकाण्ड, 2. अयोध्याकाण्ड, 3. अरण्यकाण्ड, 4. किष्किंधाकाण्ड, 5. सुंदरकाण्ड, 6. लंकाकाण्ड एवं 7. उत्तरकाण्ड।
3. लेख bpateria@gmail.com पर अथवा 9899004263 पर whatsapp या A 447 सैक्टर–47, नोएडा–201303 पर डाक से भी भेज सकते हैं।

स्मारिका के प्रकाशन में विज्ञापन से प्राप्त धन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। अनुरोध है कि आप भी अपने संस्थान का विज्ञापन भेजकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

विज्ञापन दरें इस प्रकार से हैं–

क्रमांक	विवरण	राशि (रुपयों में)
1.	प्रथम पृष्ठ के पीछे (दूसरा कवर पेज)	35,000
2.	अंतिम पृष्ठ (चौथा कवर पेज)	30,000
3.	अंतिम पृष्ठ के पीछे (तीसरा कवर पेज)	25,000
4.	पत्रिका के अन्दर पूर्ण पृष्ठ	15,000
5.	पत्रिका के अन्दर आधा पृष्ठ	10,000

पाठकों से प्राप्त सहयोग राशि का योगदान भी इसके प्रकाशन में सराहनीय है। इसे भेजने हेतु विवरण निम्नांकित है। ''श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति'' के नाम 'भारतीय स्टेट बैंक, सैक्टर 31, नोएडा की शाखा में चालू खाता सं0 35299035590, ब्रांच कोड : 15971, IFS Code : SBIN0015971 विज्ञापन–प्रकाशन राशि भी इसी खाते में जमा करा सकते हैं।

कृपया सहयोग राशि अथवा विज्ञापन–प्रकाशन राशि भेजकर हमें उपर्युक्त ईमेल या 09899004263 पर फोन या SMS करके सूचित करने का अनुग्रह करें, ताकि तदनुसार प्राप्ति रसीद जारी की जा सके।

अध्यक्ष की ओर से

प्रिय श्रीरामचरितमानस प्रेमियो!

आजकल हमारे देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। समाज में पाश्चात्य संस्कृति का तेजी से प्रभाव बढ़ रहा है। हम अपनी शिक्षा, व्यवहार, समाज के प्रति कर्तव्य, धर्म तथा सेवा भावना से विमुख होकर मानव–जाति का अहित कर रहे हैं। आज प्रेम और भाईचारे का स्थान हिंसा एवं वैमनस्य ने ले लिया है, जिसका प्रमुख कारण यह है कि अत्यधिक सांसारिक वैभवों को प्राप्त करने की होड़ लगी है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आपसी सद्भाव बढ़े, जन–जन में ईश्वरीय आस्था तथा भावी पीढ़ी में सुसंस्कार जाग्रत हों, इसी उद्देश्य से 'श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति, नोएडा' की सन् 1990 में स्थापना हुई, जिसका अगस्त 2015 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति में विलय हो गया है।

हमारा उद्देश्य श्रीरामचरितमानस पाठ एवं प्रवचनों के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी के पावन चरित्रों का प्रचार–प्रसार कर समाज एवं धर्म की सेवा करना है। इसके द्वारा हम सभी का कल्याण होगा। यह समिति अपने स्थापना काल से दिसम्बर 2022 तक 522 मानस पाठ, प्रवचनों आदि के कार्यक्रम आयोजित करा चुकी है। इसी कड़ी में अब तक अनेक विद्वान कथाकारों द्वारा रामकथा का आयोजन किया जा चुका है। ऐसे ही कार्यक्रम भविष्य में भी होते रहें, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

कलियुग में मनुष्य को श्रीभगवन्नाम के अतिरिक्त ऐसा कोई सुगम साधन उपलब्ध नहीं है, जिससे वह आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सके। श्रीरामचरितमानस के अनुसार– **'नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू' (1/27/7)।** इस परिप्रेक्ष्य में इस समिति और गीता रामायण समिति (नोएडा) के संयुक्त तत्वावधान में माह के प्रथम रविवार को सायंकाल वेला में श्रीराम मंदिर, सी ब्लॉक, सैक्टर–36, नोएडा में **'श्रीराम जय राम जय जय राम'** संकीर्तन प्रारम्भ किया गया है। प्रथम आयोजन रविवार 4 सितम्बर 2022 को सानंद सम्पन्न हुआ। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य की निरंतरता बनाए रखने की हमें शक्ति एवं प्रेरणा प्रदान करें।

विगत 30 वर्षों की भाँति गुरुवार दिनांक 30 मार्च 2023 को श्रीराम जन्ममहोत्सव का आयोजन महाराजा अग्रसेन भवन, सैक्टर–33, नोएडा में किया जा रहा है। इस पावन वेला में कथा व्यास रघुवंश भूषण पाण्डे कथा श्रवण कराएँगे।

श्रद्धालुओं से निवेदन है कि समारोह में उपस्थित होकर धर्म–लाभ प्राप्त करें।

समिति द्वारा आयोजित मानस पाठ एवं प्रवचन

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत) द्वारा समय–समय पर श्रीरामचरितमानस अखण्ड पाठ/ सुन्दरकाण्ड पाठ, प्रवचन (सत्संग) आदि का आयोजन किया जाता रहा है। इस क्रम में दिसम्बर 2022 तक 522 मानस पाठ, प्रवचन आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये, इसका विवरण समिति की विगत वर्षों की स्मारिका में प्रकाशित किया गया है। पिछले वर्ष 11 कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनका विवरण निम्नांकित है–

क्र.सं.	तिथि	नाम व पता जिनके निवास पर कार्यक्रम आयोजित हुए
1.	12–06–2022	श्री कमल शर्मा, A–53, सैक्टर–36, नोएडा
2.	10–07–2022	श्री ओमवीर सिंह राणा, B–28, सैक्टर–44, नोएडा
3.	04–09–2022	श्रीराम मंदिर, सैक्टर–36, नोएडा
4.	12–09–2022	पं. दिनेशचंद्र शर्मा, A-447, सैक्टर–47, नोएडा
5.	02–10–2022	श्रीराम मंदिर, सैक्टर–36, नोएडा
6.	15–10–2022	श्री गिरीश कुमार पटैरया, P-302, टोपाज पार्क, पार्क स्ट्रीट, बाकड़, पुणे (महाराष्ट्र)
7.	06–11–2022	श्रीराम मंदिर, सैक्टर–36, नोएडा
8.	12–11–2022	श्री मुकेश शुक्ला, सैक्टर–41, नोएडा
9.	04–12–2022	श्रीराम मंदिर, सैक्टर–36, नोएडा
10.	04–12–2022	पं. दिनेशचंद्र शर्मा, A-447, सैक्टर–47, नोएडा
11.	06–12–2022	श्री प्रमोद शर्मा, A-47, सैक्टर–48, नोएडा

श्रीरामकथा ज्ञान यज्ञ कार्यक्रम

क्र.सं.	तिथि	कार्यक्रम	स्थान	कथा व्यास
1.	10.04.2022	श्रीराम जन्ममहोत्सव	अग्रसेन भवन, सै0–33,नोएडा	पं. बैजनाथ शुक्ला मानस एवं भागवताचार्य
2.	04.08.2022	तुलसी जयंती समारोह	श्रीराम मंदिर सी ब्लॉक सैक्टर–36, नोएडा	पं. ओमप्रकाश त्रिपाठी (मानस कोकिल)

इस अंक में

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अध्यक्ष की ओर से		003
2.	समिति के सदस्यों की सूची		007
3.	पाठकों के विचार		009
4.	श्रीराम जन्म–महोत्सव की झलकियाँ	कथा व्यासः आचार्य पं. बैजनाथ शुक्ला	
5.	तुलसी जयंती समारोह	कथा व्यासः मानस एवं भागवताचार्य पं. ओमप्रकाश त्रिपाठी (मानस कोकिल)	
6.	जो सुनत गावत कहत समुझत ...	पं. डॉ. राम गोपाल तिवारी	
7.	गंगे! भव–सागर पार करो (कविता)	सरल शास्त्री	
8.	निज निधि तत्व विश्लेषण	प्रस्तुतिः पं. दिनेश्वर मिश्रा	
9.	कर्म का रहस्य	डॉ. सहृदय नारायण उपाध्याय	
10	दूसरि रति मम कथा प्रसंगा	श्री कैलाश त्रिपाठी	
11.	करत–फिरत रघुपति नर–लीला	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'	
12.	हम, हमारे कर्म, उनके फल और ईश्वर	श्री देवेन्द्र शर्मा	
13.	भजत कृपा करिहहिं रघुराई	श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट	
14.	श्रीरामचरितमानस मानव समाज–हिताय श्रेष्ठ संविधान	आचार्य डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त	
15.	रघुपति भगति सुमंगल मूला	श्री सचिन शर्मा	
16.	जिया कब तक उलझेगा (कविता)	कवि राजमलजी	
17.	अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा	पं. दिनेश चन्द्र शर्मा	
18.	सुन्दरकाण्ड की महिमा	श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद	
19.	श्रीहनुमान चालीसा–एक दृष्टिकोण	श्री पन्नालालजी कपूर	
20.	मंगल करनि कलिमल हरनि ...	डॉ. भगवान दास पटैरया	

21.	माँ जगजननी जानकीजी (कविता)	पं. राजेश तिवारी 'मक्खन'	
22.	विभीषण शरणागति	श्रीरामजन्म सिंह	
23.	पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा	श्री अवध किशोर दूबे	
24.	अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें	पं. राधाकृष्ण पाठक 'अतीत'	
25.	मानस में वर्णित वंदनाएँ	डॉ. विनोद कुमार शर्मा ''पट्टोजी''	
26.	पन हमार सेवक हितकारी	श्रीमती कुसुम पटैरया	
27.	श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का वर्ष 2021–22 का आय–व्यय विवरण		
28.	श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र		
29.	श्रीरामशलाका प्रश्नावली		
30.	विक्रमी संवत 2080 के व्रत, पर्व, त्योहारों की सूची		
31.	आरती एवं वन्दना		
32.	श्रीरामचरितमानस पाठ आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री		

मुखो पवित्रं यदि रामनामं। ह्रदय पवित्रं यदि ब्रह्मज्ञानं।।
चरण पवित्रं यदि तीर्थ गमनं। हस्तौ पवित्रं यदि पुण्य दानं।।

रामनाम से मुख पवित्र होता है, ब्रह्मज्ञान से ह्रदय पवित्र होता है,
तीर्थगमन से चरण पवित्र होते हैं और दान पुण्य से हाथ पवित्र होते हैं।

पुण्य किसी को दगा नहीं देता और पाप किसी का सगा नहीं होता,
जो कर्म को समझता है, उसे धर्म को समझने की जरूरत ही नहीं,
कर्मों के उत्तराधिकारी केवल हम ही होते हैं।

–भगवान गौतम बुद्ध

विशेषः स्मारिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति पंजीकृत
सदस्यों की सूची

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
1.	पं0 दिनेशचन्द्र शर्मा	ए—447, सै0—47, नोएडा—201303	9811056467	अध्यक्ष
2.	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'	216, जी0जी0 हॉस्टल वाली गली होशियारपुर, सै0—51, नोएडा	9311384212	उपाध्यक्ष
3.	पं0 डॉ0 लक्ष्मी नारायण	60, मातेश्वरीवार्ड नं0 11, नौगाँव, (छतरपुर) म0प्र0	9893772149	उपाध्यक्ष
4.	डॉ0 भगवान दास पटैरया	डी—11, सै0—36, नोएडा	9899004263	महासचिव
5.	डॉ0 रविन्द्रकुमार शर्मा	593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली—110061	9911307799	सचिव
6.	श्री लीलूराम वर्मा	सी—49, सै0—23, नोएडा	9312280743	संयुक्तसचिव
7.	श्री जे0 के0 गुप्ता	ए—87, सै0—49, नोएडा	9810997834	कोषाध्यक्ष
8.	श्री भिक्कीलाल शर्मा	ए—105, सै0—20, नोएडा	9810836348	कार्यकारीसदस्य
9.	श्री हुकमचन्द्र शर्मा	मकान नं0 ए—136, एल्फा—1, ब्लॉक—ए, ग्रेटर नोएडा—201310	9213999744	"
10.	श्री सुभाषचन्द्र मित्तल	865, जोशीरोड, करोलबाग, दिल्ली	9210364442	'
11.	श्रीमती नीलम श्रीवास्तव	एम—126, सै0—25, नोएडा	8800439949	"
12.	श्री सी0 एस0 भोगल	सी—2/103, सै0—36, नोएडा	9811026745	"
13.	श्री कृष्ण कुमार मिश्रा	12/250, कोटेश्वरनगर, पो0 रविशंकर यूनिवर्सिटी, (R.S.U.) जिला—रायपुर—492010	9406379229	"
14.	श्री मांगेराम भारद्वाज	ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा	9999232019	"
15.	डॉ0 अंकित अवाना	ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा	9871775563	"
16.	श्री अजय कुमार शर्मा	ए—447, सै0—47, नोएडा	9911220088	"
17.	डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी	1इ, लक्ष्मी रोड, डालनवाला, देहरादून	09411714660	आजीवन सदस्य
18.	श्री देवेन्द्र सिंह अवाना	B 5/6,सामने C-4/106, सै0—31, नोएडा	9811602397	"
19.	श्री सूरजभान शर्मा	ए—141, सै0—20, नोएडा	8527132634	"
20.	श्री विनोद शर्मा	ए—19, सै0—22, नोएडा	9891117721	"
21.	श्री अश्विनी कुमार भरद्वाज	बी—365, सै0—92, नोएडा—201305	9999533891	"
22.	डॉ0 मनोज कुमार पटैरया	25/3, सै0—1, पुष्पविहार, नईदिल्ली	9868114548	"
23.	श्री देवेन्द्र कुमार रावत,	266, वार्ड नं0 7, स्नेहलनगर, वर्धा (महाराष्ट्र)	9423645351	"
24.	श्री भगवान दास पाठक	फ्लैट नं0 302,तीसरी माला बी—बिल्डिंग, सुमन सूरज सोसाइटी, मोटा बराछा, सूरत (गुजरात)—394001	6352673969	"
25.	श्री रविशंकर चतुर्वेदी	904, D-13, AWHO Sandeep Vihar, SeegehalliKadugodi, बंगलौर—560067	9945169080	"
26.	श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता	सी—154, सै0—100, नोएडा	9810464009	"

27.	श्री राधे श्याम शर्मा	ए–55, सै0–27, नोएडा	9999930102	आजीवन सदस्य
28.	श्री रामेश्वर दत्त शर्मा	ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा	9953508132	"
29.	श्री रणजीत सिंह विष्ट	एफ–110, सै–20, नोएडा	9650324529	"
30.	श्री भीम सिंह	मोतीमैमोरियल, दुर्गापार्क, पो0–वसुन्धराग्राम–दल्लूपुरा, दिल्ली–110096	9810181724	"
31.	श्रीमती कुसुम पटैरया	डी–11, सै0–36, नोएडा	9811201847	"
32.	श्री ए.के. सक्सेना	मकान नं0 329, ब्लाक–एच सैक्टर–बीटा–2, ग्रेटर नोएडा	9540274589	"
33.	श्री देवीचरन शर्मा	बी–109, सै0–22, नोएडा	9350859122	"
34.	वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी	एच 129, सै0–41, नोएडा	9868943638	"
35.	श्री वेदप्रकाश बंसल	ए 33, सै0–19, नोएडा	9350732724	"
36.	श्री रघुनाथ प्रसाद शर्मा	जी–63, सै0–27, नोएडा	9899797090	"
37.	श्री सुरेन्द्र कुमार ठक्कर	बी–69, सै0–52, नोएडा	9891445905	"
38.	श्री लाल मोहन चौधरी	ए–390, सै0–47, नोएडा	9868851639	"
39.	श्री अमर सिंह सेंगर	ए–162, सै0–20, नोएडा	9971885030	"
40.	श्री भूनिधि शर्मा	डी–185, सै0–49, नोएडा	9871199809	"
41.	श्री श्रीपाल अवाना	ए–286, सै0–47, नोएडा	9210638386	"
42.	श्री यशपाल सिंह	बी–19, सै0–49, नोएडा	9810339398	"
43.	श्रीमती मधु मालती	बी–69, सै0–52, नोएडा	9891707373	"
44.	श्री विद्याराम अवाना	एच–7, सै0–27, नोएडा	9891960087	"
45.	श्रीमती भारती चतुर्वेदी	बी–2/721, कैलाश धाम, ब्लाक नं0–14, सै0–50, नोएडा	9650990257	"
46.	श्री शिवकुमार शर्मा	ए–100, सै0–33, नोएडा	9871636341	"
47.	आचार्य योगेन्द्र पाण्डे	श्रीराम मन्दिर, सै0–36, नोएडा	9810479542	"
48.	श्रीमती अर्चना शर्मा	कैलाश धाम अपार्टमेंट, ब्लॉक नं.–14 बी–1/520, सैक्टर–50, नोएडा	9968422229	"
49.	श्री परमात्मा शरण बंसल	ए–83, सै0–49, नोएडा	9810169329	"
50.	श्रीमती सीमा चौबे	एफ–13, सै0–20, नोएडा	9811323076	"
51.	श्री विपन कुमार	सी–3/149, सै0–36, नोएडा	9868139393	"
52.	श्री नरेश चौहान	एफ–18, सै0–39, नोएडा	9555955599	"
53.	श्री वी0जे0 चौधरी	बाली भगत रोड, बक्सी बाजार, कटक (उड़ीसा) 753001	9090438678	"
54.	श्री नरेन्द्र कुमार चाचान	65–ए, लखीमीपाथ, गुवाहाटी–781028	9435553023	"
55.	श्री मामचंद	ए–406, सै0–47, नोएडा	8368890732	"
56.	श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता	बी–16, सै0–49, नोएडा	9911609460	"
57.	श्री प्रेम सिंह नागर	बी–0002, अजनारा (ग्रैंड हैरीटेज) सै0–74, नोएडा	9266666052	"
58.	श्रीमती बबीता भरद्वाज	बी–365, सै0–92, नोएडा–201305	9999533891	"
59.	श्री वेदप्रकाश शर्मा	ए–36, सै0–47, नोएडा	9821213055	"
60.	श्री देवेन्द्र सिंह तोमर	ए–67, सै0–48, नोएडा	9891944556	"
61.	श्री रणवीर सिंह	ग्राम–हजरतपुर वाजिदपुर, सै0–63, नोएडा	9810634772	"

परिष्कृत एवं पठनीय सामग्री

स्मारिका का नवीन अंक पढ़ा। परिष्कृत और पठनीय सामग्री से भरा है। छपाई त्रुटिरहित है। आवरण पृष्ठ दोनों तरफ मनोहारी हैं। स्मारिका पर आपकी स्पष्ट छाप है। पाठकों को आपके श्रम और समर्पण का भरपूर लाभ मिलेगा। स्मारिका के सफल प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री गणेश शंकर त्रिपाठी, पूर्व आई0ए0एस0 अधिकारी, नोएडा, फोनः 9891910400

उच्च स्तरीय पत्रिका

मुझे श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का वार्षिक अंक 29 प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित सभी लेख उच्च स्तर के हैं। विगत कुछ वर्षों से मैं यह पत्रिका पढ़ रहा हूँ। यह एक उच्च स्तरीय पत्रिका है।

श्री एस0एस0 शुक्ला, ग्रेटर नोएडा

जनमानस को आनंदित करने वाली पत्रिका

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का 29वां अंक प्राप्त हुआ। मुख्य पृष्ठ व अन्तिम पृष्ठ पर भगवान का सुन्दर चित्र देखकर मन प्रसन्न हो गया। प्रभु को प्रणाम कर पढ़ना प्रारंभ किया। आनंद के सरोवर में सराबोर होने लगा। स्वयं को धन्य मानकर बारम्बार अध्ययन का मन करता है। पठनीय सामग्री अति उच्च कोटि की है। संपादक मंडल प्रशंसा का पात्र है। प्रभु से प्रार्थना है कि इसमें इसी प्रकार प्रति वर्ष उत्तरोत्तर प्रगति होती रहे और जनमानस को श्रीरामचरितमानस में आनंद से आप्लावित करती रहे। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

राजेश तिवारी मक्खन, झांसी (उ0प्र0), फोनः 9451131195

शुद्ध हिंदी का प्रयोग

विगत वर्ष की भाँति मुझे इस वर्ष भी श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का वार्षिक अंक 29 प्राप्त हुआ। इसमें प्रकाशित सभी लेख उच्च स्तरीय एवं ज्ञान–भक्ति से ओतप्रोत हैं। इसमें प्रयुक्त विशुद्ध हिंदी एवं रोचक भाषा शैली बहुत ही आकर्षक है।

श्री एम0के0 शर्मा, सदस्य (सेवानिवृत्त), केन्द्रीय जल आयोग, फरीदाबाद, फोनः 9811216292

प्रेरणाप्रद लेख

विगत वर्षों की भाँति मुझे स्मारिका का 29वाँ अंक प्राप्त हुआ। सभी लेख प्रेरणाप्रद हैं, किंतु मुझे एक हनुमान भक्त द्वारा प्रस्तुत **'एक ब्राह्मण की प्रेरणाप्रद कहानी'** बहुत अच्छी लगी। वर्तमान समय में जहाँ परधन हरण में लोग संकोच नहीं करते, वहीं एक ब्राह्मण ने बिना परिश्रम के अर्थात् बिना जनेऊ विक्रय के दानस्वरूप भी धन ग्रहण न करके समाज के लिए एक आदर्श उपस्थित किया है।

श्री देवकी नंदन गौतम, पूर्व आई0पी0एस0 अधिकारी, पटना, फोनः 9973000111

संस्कारों एवं सद्शिक्षा का स्रोत

'अध्यात्म–शिक्षा' ही सही विद्या है। यह विद्या समस्त विद्याओं का दीपक, सभी कार्यों का साधक एवं सभी प्रकार के धर्मों का आश्रयरूप है, यथोल्लेख है कि–

प्रदीपः सर्वविद्या नामुपायः सर्वकर्मणाम्।

आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता।। (कौटिलीय–अर्थशास्त्र **1/2/1**)

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का वार्षिक अंक 29 समस्त विद्याओं में श्रेष्ठ विद्या 'अध्यात्म' के निरूपण में अद्वितीय है। नैतिक और शील शिक्षा का इस अंक में प्राधान्य है, जो 'मानवजीवन' को कृतार्थ या धन्य बनाने में परम सहयोगी है।

'**प्रथम भगति संतन्ह कर संगा**' शीर्षक से लिखित कृति का प्रथम लेख ही मनुष्य को सही मानव बनाने में पूर्ण सामर्थ्यवान् है। स्मारिका में तीर्थों का प्रभाव–वर्णन मानव–तन, मन को पावन करता है। इसमें भगवत्–प्राप्ति के साधन भी सुग्राह्य हैं। **'वर्णानामर्थसंघानां'** लेख साहित्यिक बहुलता का परिज्ञान कराता है। इसी प्रकार अन्यान्य सद्–चरित्रांकन मानवोन्नति हेतु सुखद संविधान के रूप में निर्दिष्ट हैं। संस्कारों की शिक्षा से परिपूर्ण यह अंक मानव के लिए श्रेष्ठ संबल है।

आचार्य डॉ0 रामेश्वर प्रसाद गुप्त, दतिया (म0प्र0), फोनः 9826249448

सभी लेख मानस–मंत्रों से सराबोर

मैं श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का आभारी हूँ कि विगत वर्षों की तरह इस साल भी मुझे स्मारिका भेजी है। सभी लेख श्रीरामचरितमानस की चौपाइयों, दोहे, सोरठों से ताने–बाने

की तरह पिरोए हुए हैं अर्थात् सभी लेख मानस–मंत्रों से सराबोर हैं। प्रथम लेख **'प्रथम भगति संतन्ह कर संगा'** अपने आप में पूर्णता का परिचय है।

श्री प्रेम चन्दर, हैदराबाद, फोनः 9618085306

उत्कृष्ट लेखों का संकलन

विगत वर्षों की भाँति श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का वार्षिक अंक 29 प्राप्त हुआ, पूरी पत्रिका पढ़ी। पं. डॉ. रामगोपाल तिवारीजी का लेख बहुत अच्छा लगा। अन्य सभी लेख भी ज्ञान–भक्ति–वैराग्य से परिपूर्ण उच्च स्तर के हैं। स्मारिका की प्रिंटिंग तथा आवरण चित्र सराहनीय हैं। मेरे विचार से यह उत्कृष्ट लेखों का संकलन शोधपत्रों की तरह है। स्मारिका प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री अवध किशोर दुबे, झारखण्ड, फोन–8409925271

सहयोग राशि भेजने वालों को साधुवाद

स्मारिका प्रकाशनार्थ हमें, इस समिति के सदस्यों के अतिरिक्त राजस्थान (जोधपुर) से डॉ.वी. एस. बंसल तथा श्री ओमप्रकाश शर्मा (कोटा), मध्य प्रदेश से श्री आर.पी. निगम (जबलपुर) एवं श्री प्रकाश नारायण शर्मा (नौगाँव), श्री के0पी0 गुप्ता (बिलासपुर, छत्तीसगढ़), उत्तर प्रदेश से श्रीमती माया उपाध्याय (झाँसी) एवं श्री द्वारका प्रसाद वैद्य (झाँसी), दिल्ली से श्री राम बाबू शर्मा एवं श्री अशोक कुमार वर्मा, श्री नरेन्द्र कुमार चाचान गुवाहाटी (आसाम) से सहयोग राशि प्राप्त हुई है। कुछ पाठकों से सहयोग राशि प्राप्त हुई है, किंतु उनसे सूचना प्राप्त न होने के कारण रसीद 'गुप्त दान' लिखकर जारी की गई। हम सहयोग राशि भेजने वाले पाठकों को साधुवाद ज्ञापित करते हैं तथा आशान्वित हैं कि भविष्य में भी वे इस पुनीत कार्य हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करके हमारा उत्साहवर्धन करते रहेंगे।

अगर इंसान शिक्षा से पहले संस्कार, व्यापार से पहले व्यवहार और भगवान से पहले माता–पिता को पहचान ले, तो जिंदगी में कभी भी कोई कठिनाई नहीं आयेगी।

श्रीराम जय राम जय जय राम

❖ यह मंत्र जप एवं संकीर्तन दोनों प्रकार से साध्य है।

❖ इसमें तीन बार राम, एक बार श्री के साथ श्रीराम और तीन बार जय शब्द आया है। इससे षड्विकार –''काम–क्रोध–लोभ–मोह–मान–मत्सर'' दूर होते हैं।

❖ यह दैहिक दैविक–भौतिक त्रिताप दूर करता है।

❖ इस मंत्र की एक और विशेषता है, इसमें 13 वर्ण हैं। संभवतः किसी अन्य मंत्र में 13 वर्ण नहीं हैं। अंक ज्योतिष के अनुसार 13 का तात्पर्य है, 1+3 = 4, यह 4 का अंक इसका द्योतक है कि इस मंत्र के प्रभाव से मानव को चारों पुरुषार्थ अर्थात् धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष प्राप्त हो जाते हैं।

❖ यह महामंत्र (विजय मंत्र) तीन गुणों–'सत्–रज–तम' के आधार पर कल्याणकारी है।

- सत् रूप में इससे इंद्रियों पर विजय प्राप्त होती है और इससे भगवत् भजन में मन रमता है।
- रजोगुण के आधार पर यह महामंत्र (विजय मंत्र) दरिद्रता, अनिष्ट एवं समस्त बाधाओं पर विजय प्राप्त कराके सुख–समृद्धि प्रदान कराता है।
- तमोगुण के रूप में यह मानव की समस्त तापसी वृत्तियों पर विजय प्राप्त कराके उसे निर्मल मन बनाता है, जिससे भगवत् भक्ति प्राप्त होती है।
- इस मंत्र का एक और यह सुग्राह्य–सरलतम अर्थ हैः–

श्रीराम – हे राम,

जय राम – आपकी जय हो,

जय जय राम – मैं आपकी शरण में हूँ

इस मंत्र का जप या संकीर्तन करते समय उपर्युक्त भाव रखने से **'कि प्रभु मैं आपकी शरण में हूँ'** मानव निश्चिंत होकर सहज ही सब कुछ पा सकता है।

कलियुग में भगवन्नाम के अलावा और कोई साधन, परमार्थ पथ के साधकों के लिए उपलब्ध नहीं है, श्रीरामचरितमानस के अनुसार–

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू।। (1/27/7)

श्रीराम जन्ममहोत्सव की झलकियाँ

कथा व्यासः आचार्य पं. बैजनाथ शुक्ला, फोनः 9811543195

हमारे जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है। हमारे जैसे संस्कार होंगे हमारी भावना वैसी होगी और जैसी हमारी भावना होगी, वैसी ही हमें कार्य सम्पादन की प्रेरणा प्राप्त होगी और फिर उस प्रेरणानुसार ही हम अच्छे–बुरे कार्य करते रहते हैं। भावी नागरिकों के मन में सुसंस्कार जाग्रत करने के उद्देश्य से यह समिति प्रति वर्ष श्रीराम जन्ममहोत्सव का आयोजन करती है और इस पावन बेला में श्रीराम कथा के माध्यम से सदाचार, सत्य–प्रेम एवं समाज के हित में कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की जाती है। कोरोना महामारी के कारण विगत दो वर्षों से यह कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा था, किंतु ईश्वर की कृपा से इस वर्ष इस समिति द्वारा 30वाँ श्रीराम जन्ममहोत्सव का कार्यक्रम महाराजा अग्रसेन भवन, सैक्टर–33, नोएडा, जिला–गौतमबुद्धनगर (उत्तर प्रदेश) में चैत्र शुक्ल नवमी, विक्रमी संवत् 2079, रविवार तदनुसार 10 अप्रैल 2022 को प्रातः 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक आयोजित हुआ। इस पावन बेला में कथा व्यास आचार्य पं. बैजनाथ शुक्ला ने श्रीराम जन्म की कथा सुनाकर श्रोताओं को भाव–विभोर कर दिया। श्रीराम कथा के कुछ अंश पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत हैं :–

त्रेता युग में चैत्र शुक्ल नवमी को जब सभी नक्षत्र अनुकूल थे, तब अखिल ब्रह्माण्ड नायक, कण–कण में व्याप्त निर्गुण ब्रह्म इस धराधाम पर पावन नगरी अयोध्या में महाराज दशरथ की बड़ी रानी कौसल्याजी के महल में सगुण–साकार रूप में प्रकट हुए। कुछ भक्त इसे भगवान का प्राकट्य या अवतार कहते हैं, कुछ जन इसे उनका जन्म मानते हैं, जो भी कहें, पर यह विचारणीय है कि भगवान किस कारण से इस धराधाम पर सगुण रूप में आते हैं। इस संदर्भ में श्रीरामचरितमानस में लिखा है –

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।। (1/121/6,8)

गीता में भी इसी सिद्धांत को इस प्रकार से निरूपित किया है –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (4/7)

यह भी विचारणीय है कि धर्म की ही हानि क्यों होती है, अधर्म की क्यों नहीं होती। अधर्म ही क्यों बढ़ जाता है। इसका सीधा सा उत्तर यह है कि जिस प्रकार जल का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर होता है, उसी प्रकार से सभी का कर्ता–धर्ता मन सामान्यतया नीचे की ओर अर्थात् कुपथ की ओर भागता है। सुपथ पर चलाने के लिए प्रयास करना पड़ता है, ठीक उसी प्रकार से जैसे जल को ऊपर चढ़ाने के लिए यंत्र (मोटर) का प्रयोग करना पड़ता है। मानव की प्रवृत्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं–सात्विक, राजसी एवं तामसिक। किसी में कोई प्रवृत्ति अधिक होती है और किसी में कोई कम, पर होती सभी में हैं, यह त्रिगुणात्मक संयोग ही अच्छे–बुरे कार्य कराता रहता है और मानव अनजाने में परवश उन प्रवृत्तियों के अधीन कार्य करता रहता है। जिनमें सात्विक प्रवृत्ति की प्रबलता होती है वे अपने कार्यकलापों पर दृष्टि रखते हैं और समय–समय पर बुराइयों को दूर करने का प्रयास करते रहते हैं, ठीक उसी प्रकार से जैसे कृषक अपने खेत से खरपतबार साफ करता रहता है ताकि उसकी फसल ठीक प्रकार से पक सके। श्रीरामचरितमानस में इसका वर्णन इस प्रकार से किया गया है–

कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना।। (4/15/8)

क्या केवल दुष्टों के संहार के लिए अखिल ब्रह्माण्ड नायक निराकार ब्रह्म को अवतार लेना पड़ता है। इस संदर्भ में पंचवटी का वह प्रसंग उल्लेखनीय है–– जब श्रीरामजी कपट मृग के पीछे दौड़ते हैं और वह (मारीच) मरते समय हा लक्ष्मण! कहता है अर्थात् मानो श्रीरामजी लक्ष्मणजी को सहायतार्थ पुकार रहे हों। यह आवाज सुनकर सीताजी लक्ष्मणजी को भाई की सहायता के लिए तुरंत जाने को कहती हैं, तब लक्ष्मणजी उन्हें समझाते हैं कि जिसकी भौंहें टेढ़ी होने से अर्थात् जिसकी इच्छामात्र से प्रलय हो सकता है, उस पर स्वप्न में भी संकट नहीं पड़ सकता है, यथा–

भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहुँ संकट परइ कि सोई।। (3/28/4)

जिनकी इच्छामात्र से प्रलय हो सकता है, तब फिर दुष्टों का संहार कौन सी बड़ी बात है। इस संदर्भ में स्वयं भगवान श्रीरामजी ने विभीषण से कहा है कि मैं तुम्हारे जैसे संतों के लिए ही नर शरीर धारण करता हूँ, यथा–

तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें। धरउँ देह नहिं आन निहोरें।। (5/48/8)

श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में ही गोस्वामी तुलसीदासजी ने इस सिद्धांत को इस प्रकार से निरूपित किया है –

ब्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहिं धरि देह चरित कृत नाना।।
सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी।। (1/13/4–5)

इस प्रकार से यह सिद्धांत स्पष्ट हो जाता है कि भगवान मुख्य रूप से अपने भक्तों के लिए अवतार लेते हैं। ऐसे ही एक भक्त हुए–स्वायंभुवमनु। महाराज मनु ने बहुत समय तक राजपाट सँभाला और सुख–वैभव का भोग किया। इससे उन्हें एक दिन बहुत दुख हुआ कि भगवत्भजन के बिना पूरा जीवन बीता जा रहा है, यथा–

होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथपन।
हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभगति बिनु।। (1/142)

इस वैराग्य भावना के प्रबल होते ही उन्होंने पुत्र को राजपाट सौंपकर पत्नी शतरूपा के साथ भगवत्भजन हेतु वन को प्रस्थान किया। वे नैमिषारण्य में जाकर तप करने लगे। सर्वप्रथम उन्होंने अपने भोजन में सुधार किया। वे केवल शाक और फल का आहार लेकर सच्चिदानंद भगवान का स्मरण करने लगे, यथा–

करहिं अहार साक फल कंदा। सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा।। (1/144/1)

एक सर्वविदित कहावत है– **"जैसा खाओ अन्न वैसा होवे मन्न।"** इस सिद्धांत का उदाहरण लंकाकाण्ड में मिलता है जब रावण कुंभकर्ण को असमय में जगाता है और अपनी व्यथा बताता है। उस समय कुंभकर्ण सात्विक प्रवृत्ति में था। उसने रावण को समझाया कि तुमने जगदम्बा सीताजी का हरण करके बहुत अनर्थ कर दिया। रावण ने तुरंत उसके लिए अभच्छ भोजन का प्रबंध कर दिया और उस भोजन को ग्रहण करने के पश्चात् वह गर्जना करते हुए युद्ध करने चला गया, यथा–

महिष खाइ करि मदिरा पाना। गर्जा बज्राघात समाना।। (6/64/1)

मनु शतरूपा के कठोर तप को देखकर ब्रह्मा–विष्णु–महेश कई बार उनके सम्मुख प्रकट होकर वरदान माँगने का प्रलोभन देते रहे, किंतु वे अपने विश्वास पर अडिग रहे, क्योंकि वे उनका दर्शन करना चाहते थे जिनसे अगणित ब्रह्मा–विष्णु–महेश उत्पन्न होते हैं। उनके उग्र तप को देखकर आकाशवाणी हुई कि वर माँगो। महाराज मनु ने कहा कि जो स्वरूप शिवजी के हृदय में वास करता है और जो स्वरूप काकभुशुंडिजी के मन में रमता है, हम उस स्वरूप का दर्शन करना चाहते हैं। तब श्रीरामजी इस रूप में प्रकट हुए–

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम।। (1/146)

मनु शतरूपा अखिल ब्रह्माण्ड नायक निराकार ब्रह्म के साकार रूप का दर्शन करके धन्य हो गए। जब भगवान ने उनसे वर माँगने को कहा, तब उन्होंने उन्हीं को पुत्र रूप में माँग लिया, यथा–

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।। (1/149)

भगवान ने कहा कि मेरा जैसा मैं कहाँ खोजूँगा, मैं स्वयं तुम्हारे पुत्र रूप में उस समय अवतार लूँगा, जब तुम अयोध्या में राजा दशरथ और रानी कौसल्या के रूप में जन्म लोगे।

आपु सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप तव तनय होब मैं आई।। (1/150/2)
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी। बसहु जाइ सुरपति रजधानी।। (1/151/8)
तहँ करिं भोग बिसाल तात गएँ कछु काल पुनि।
होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत।। (1/151)

समय आने पर मनु अयोध्या में राजा दशरथ हुए और शतरूपा उनकी प्रथम रानी कौसल्या हुईं। महाराज दशरथ की दो रानियाँ और थीं–कैकेयी और सुमित्रा, किंतु वृद्धावस्था तक उन्हें कोई संतान नहीं हुई। इससे चिंतित होकर वे गुरु वसिष्ठ के पास गए, गुरुजी ने ऋंगी ऋषि से पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया और यज्ञ भगवान ने स्वयं प्रकट होकर प्रसाद दिया कि इसे रानियों में यथायोग्य दे दीजिए, आपका मनोरथ पूर्ण होगा। उस प्रसाद को ग्रहण

करके रानियाँ गर्भवती हो गईं। चैत्र शुक्ल नवमी को, जब सभी ग्रह–नक्षत्र अनुकूल थे, तब महारानी कौसल्या के कक्ष में भगवान प्रकट हुए–

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।। (1/192/छंद)

भगवान ने माता कौसल्या को पूरी कथा सुनाई, जिस प्रकार से उन्होंने वरदान माँगा था। तब उन्होंने कहा कि अब आप शिशु रूप में आ जाइए। भगवान नवजात शिशु का रूप धारण करके रुदन करने लगे। इसे सुनकर दासियाँ दौड़ी आईं और महाराज दशरथ को सूचना दी, जिसे सुनकर वे ब्रह्मानंद और फिर परमानंद में डूब गए।

दशरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।।
जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई।।
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा।।(1/193/3,5–6)

रानी कैकेयी से एक और रानी सुमित्रा से दो पुत्र हुए। चारों पुत्रों के जन्म का समाचार सुनकर पूरे अयोध्या नगर में महोत्सव आयोजित होने लगे। बधाइयाँ गाने लगे नगरवासी। उल्लेखनीय है कि समिति द्वारा आयोजित श्रीराम जन्ममहोत्सव में बधाई गीतों का गायन हुआ, जिन पर भाव विभोर होकर श्रोता नृत्य करने लगे।

गुरु वसिष्ठ ने चारों राजकुमारों का नामकरण संस्कार किया। उन्होंने महाराज दशरथ को बताया कि आपके चारों पुत्र वेद तत्व हैं। उन्होंने कहा –

जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।।
सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा।। (1/197/5–6)

अर्थात् ये जो आनंद के समुद्र और सुख की राशि हैं, जिस (आनन्द सिंधु) के एक कण से तीनों लोक सुखी होते हैं, उन (आपके सबसे बड़े पुत्र) का नाम ''राम'' है, जो सुख का भवन और संपूर्ण लोकों को शान्ति देने वाला है।

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।। (1/197/7)

अर्थात् जो संसार का भरण–पोषण करते हैं, उन (आपके दूसरे पुत्र) का नाम ''भरत'' होगा। (ये शंख के अवतार हैं।)

जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा।। (1/197/8)

अर्थात् जिनके स्मरण मात्र से शत्रु का नाश होता है, उन (आपके चतुर्थ पुत्र) का नाम शत्रुघ्न होगा। (ये चक्रसुदर्शन के अवतार हैं)

लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार।। (1/197)

अर्थात् जो शुभ लक्षणों के धाम, श्रीरामजी के प्यारे और सारे जगत के आधार हैं, गुरु वसिष्ठजी ने उन (आपके तृतीय पुत्र) का ''लक्ष्मण'' ऐसा श्रेष्ठ नाम रखा। (ये शेषावतार हैं)। नामकरण के प्रकरण में यह विचारणीय है कि चतुर्थ पुत्र का नाम तृतीय पुत्र से पहले नामकरण क्यों किया? विद्वानों का विचार है कि जीव की चारों अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व चारों राजकुमार कर रहे हैं। श्रीरामजी ब्रह्म हैं जो तुरीयावस्था के प्रतीक हैं, भरतजी सुषुप्ति, लक्ष्मणजी जाग्रत और शत्रुघ्न स्वप्नावस्था के प्रतीक हैं। जाग्रतावस्था, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाओं के बीच में नहीं हो सकती है, अतः शत्रुघ्नजी का नामकरण लक्ष्मणजी से पहले किया गया। इसका प्रमाण श्रीराम–विवाह प्रसंग में मिलता है, यथा–

सुंदरीं सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं।। (1/325/छंद)

अर्थात् सब सुन्दरी दुलहिनें सुन्दर दूल्हों के साथ एक ही मंडप में ऐसी शोभा पा रही हैं, मानो जीव के हृदय में चारों अवस्थाएँ (तुरीय, सुषुप्ति, स्वप्न और जाग्रत) अपने स्वामियों (ब्रह्म, प्राज्ञ, तैजस और विश्व) सहित विराजमान हों।

उल्लेखनीय है कि श्रीराम कथा प्रारंभ के पूर्व पं. दिनेश चंद्र शर्मा के पौत्रों (श्री प्रदीप कुमार शर्मा के दोनों पुत्रों) ने सस्वर संस्कृत के श्लोकों को सुनाया–मा0 आर्यन शर्मा ने नवग्रह स्तोत्र सुनाया और उनके छोटे भाई मा0 आरव शर्मा ने शिव ताण्डव स्तोत्र सुनाया। सस्वर शिव ताण्डव स्तोत्र को सुनकर श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका उत्साहवर्धन किया। इस पावन बेला में श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का वार्षिक अंक 29 विमोचित हुआ। इसी क्रम में डॉ. श्रीमती नीलम सिंह द्वारा रचित तीन पुस्तकें (काव्य संग्रह) 'राम प्रिय हनुमान', 'रुक जाओ वैदेही' और 'देवकी का आठवाँ पुत्र' एवं डॉ. भगवान दास पटैरया द्वारा रचित 'भगवत्कृपानुभूति' पुस्तक का भी विमोचन किया गया। पूर्व वर्षों की भाँति भगवत् विग्रह की आरती एवं भोजन प्रसाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

तुलसी जयंती समारोह

कथा व्यासः मानस एवं भागवताचार्य पं. ओमप्रकाश त्रिपाठी
(मानस कोकिल), फोनः 7991846528

मानव जीवन का परम उद्देश्य सनातन धर्म के सभी शास्त्रों में वर्णित है। युग विशेष के अनुसार साधनों में भिन्नता होती है। कलियुग में तो केवल ईश्वर के नाम का ही सहारा है। ईश्वर के नाम की महिमा तथा कल्याणकारी मार्ग का दिग्दर्शन पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित महाकाव्य श्रीरामचरितमानस में सभी के लिए उपलब्ध है। ऐसे महान रचनाकार, भक्त कवि, समाज सुधारक, लोकनायक और भविष्य दृष्टा गोस्वामी तुलसीदास की स्मृति में तुलसी जयंती समारोह आयोजित करने की परंपरा पूरे देश में है। कई संस्थाएँ इसे प्रति वर्ष आयोजित करती हैं। यह समिति भी अभी तक ऐसे छः आयोजन कर चुकी है। विगत दो वर्षों से कोरोना महामारी के कारण यह आयोजन स्थगित करना पड़ा था। अब सातवाँ तुलसी जयंती समारोह इस समिति और गीता रामायण समिति के संयुक्त तत्वावधान में श्रावण शुक्ल सप्तमी, विक्रमी संवत् 2079 तदनुसार गुरुवार 4 अगस्त 2022 को श्रीराम मंदिर, सी ब्लॉक, सैक्टर 36, नोएडा में आयोजित हुआ। इस अवसर पर कथा व्यास पं. ओमप्रकाश त्रिपाठीजी ने गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर विस्तार से बताते हुए श्रीरामचरितमानस के कुछ प्रसंगों का श्रवण कराया। उनकी ओजस्वी मधुर वाणी से श्रोताओं ने मंत्रमुग्ध होकर कथा श्रवण की। इस कथा के कुछ संक्षिप्त अंश पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत हैं :–

परमात्मा जिस जीव से जनकल्याण करवाना चाहते हैं उसका बाल्यकाल अत्यंत कठिनाई भरा होता है, ऐसा सामान्यतया देखने में आया है। बड़े–बड़े समाजसेवियों और जन कल्याण करने वाले महापुरुषों को अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा, इतिहास इसका साक्षी है। गोस्वामी तुलसीदासजी को भी जीवन में अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। इनका जन्म बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बाँदा जिले के राजापुर ग्राम में विक्रमी संवत् 1554 की श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन हुआ था। जन्म होते ही माँ स्वर्ग सिधार गईं और फिर दासी चुनियाँ ने इनका पालन पोषण किया, पर चार साल बाद उसका भी देहान्त हो गया।

अब ये अनाथ हो गए और दर–दर भटकते हुए किसी तरह जीवननिर्वाह किया। कुछ समय तक (यह कष्ट भोगने के बाद) स्वामी नरहरिदास (श्री नरहर्यानंदजी) ने ईश्वरीय प्रेरणा से उन्हें खोज लिया और काशी लाकर उनका उपनयन संस्कार कराया तथा सनातन धर्म की दीक्षा देकर वेद–पुराण–उपनिषद–स्मृतियाँ आदि समस्त शास्त्रों का अध्ययन कराया। इनकी बुद्धि अत्यंत कुशाग्र थी और कुछ वर्षों में ही ये प्रकाण्ड विद्वान हो गए। काशी लाने से पूर्व तुलसीदास को इनके गुरु ने सूकर क्षेत्र में श्रीरामचरितमानस का श्रवण कराया, परन्तु उस समय नासमझ होने के कारण ये समझ नहीं पाये। इस बात का वर्णन इन्होंने श्रीरामचरितमानस में भी किया है, यथा –

मैं पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत।। (1/30(क))

फिर गुरु–आज्ञा से वे काशी से अपने ग्राम राजापुर आए और अपने पितरों का श्राद्ध किया। उनका विवाह ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी गुरुवार, संवत् 1583 में भारद्वाज गोत्र की एक सुन्दरी कन्या रत्नावली से हुआ। वे अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करते थे और एक दिन जब वे अचानक अपने भाई के साथ माइके चली गईं, तब वे रात में ही यमुना नदी पार करके एक सर्प को रस्सी समझकर उसके सहारे खिड़की से रत्नावली के कक्ष में पहुँच गए। उनको इस तरह आया देखकर रत्नावली ने कहा –

"**मेरे हाड़–मांस के शरीर में जितनी तुम्हारी आसक्ति है, यदि उससे आधी भी भगवान में होती तो तुम्हारा बेड़ा पार हो गया होता**"।

तुलसीदासजी को पत्नी के वचन लग गए और वे वहाँ से चलकर प्रयागराज पहुँचे। वहाँ पर गृहस्थ वेश का परित्याग करके साधु वेश धारण किया। फिर वे तीर्थाटन करते हुए काशी पहुँचे और वहाँ श्रीरामकथा कहने लगे। एक प्रेत के माध्यम से उन्हें श्रीहनुमानजी के दर्शन हुए। उन्होंने हनुमानजी से विनती की कि श्रीरामजी के दर्शन करा दें। हनुमानजी ने कहा कि चित्रकूट में तुम्हें श्रीरामजी के दर्शन होंगे। वे चित्रकूट आ गए। एक दिन उन्होंने दो बड़े ही सुन्दर राजकुमारों को घोड़ों पर सवार होकर धनुष–बाण लिए देखा। वे उन्हें देखकर मुग्ध हो गए, पर पहचान न सके। पीछे से हनुमानजी ने उन्हें यह रहस्य बताया तो वे पश्चात्ताप करते रह गए। अब हनुमानजी ने उनको बताया कि कल प्रातःकाल

पुनः श्रीरामजी दर्शन देंगे। संवत् 1607 की मौनी अमावस्या बुधवार के दिन उनके सामने श्रीरामजी एक बालक के रूप में आकर कहते हैं –

''**बाबा हमें चन्दन दो**।'' हनुमानजी ने सोचा कि तुलसीदास पुनः धोखे में न रहें, अतः उन्होंने एक तोता का रूप धारण करके यह कहा –

चित्रकूट के घाट पर भइ संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसें तिलक देत रघुबीर।।

तुलसीदासजी भगवान श्रीराम की उस अद्भुत छवि को निहार कर शरीर की सुधबुध भूल गए।

इसके पश्चात् वे काशी चले गए और वहाँ प्रह्लाद घाट पर एक ब्राह्मण के घर में रहने लगे। उस समय वहाँ उनके अंदर कवित्व शक्ति का स्फुरण हुआ और वे संस्कृत में जितने पद्य लिखते रात्रि में सब गायब हो जाते। एक दिन उन्हें स्वप्न में शिवजी ने आदेश दिया कि तुम अपनी भाषा में काव्य रचना करो। तुलसीदासजी की नींद टूट गई और तब उन्हें शिव–पार्वती के दर्शन हुए। शिवजी ने कहा कि तुम अयोध्या जाकर हिंदी में काव्य लिखो। संवत् 1631 में श्रीरामनवमी के दिन वैसा ही योग था जैसा कि त्रेतायुग में श्रीरामजन्म के समय था। उसी दिन उन्होंने श्रीरामचरितमानस की रचना प्रारंभ की। इसका प्रमाण उन्होंने इस प्रकार से लिखा है –

संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा।।
नौमी भौम बार मधुमासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा।।
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं।। (1/34/4–6)

दो वर्ष 7 माह और 26 दिन में संवत् 1633 के मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पंचमी (राम विवाह के दिन) यह रचना सम्पूर्ण हुई। अब तुलसीदासजी पुनः काशी आ गए और लोगों को रामकथा सुनाने लगे। उनकी ख्याति से वहाँ के पण्डित ईर्ष्यालु हो गए और 'श्रीरामचरितमानस' की सत्यता की पुष्टि के लिए भगवान विश्वनाथ के मंदिर में सबसे नीचे श्रीरामचरितमानस और उसके ऊपर अन्य ग्रन्थ और वेद रखकर पट बंद कर दिए। सुबह देखा तो श्रीरामचरितमानस सबसे ऊपर था और उस पर **'सत्यं शिवं सुन्दरम्'** लिखा मिला। ये शब्द सभी ने आकाशवाणी से भी सुने। इसके पश्चात् पण्डितों ने उस समय के

विख्यात विद्वान श्री मधुसूदन सरस्वतीजी को यह ग्रन्थ समीक्षा हेतु भेजा। इस पर उन्होंने लिखा –

"इस काशीरूपी आनन्दवन में तुलसीदास चलता–फिरता तुलसी का पौधा है। उसकी कवितारूपी मंजरी बड़ी ही सुन्दर है, जिस पर श्रीरामरूपी भँवरा मँडराया करता है।"

श्रीरामचरितमानस के सभी प्रसंग बड़े रोचक और भगवद्भक्ति प्रदान करने वाले हैं।

(1) काकभुशुण्डिजी श्रीरामकथा सुनाने के पश्चात् गरुड़जी से कहते हैं कि मुझ जैसे अधम प्राणी पर उन्होंने कृपा की। मैंने श्रीरामजी जैसा **स्वभाव** न कहीं देखा है और न कहीं सुना है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

अस सुभाउ कहुँ सुनउँ न देखउँ। केहि खगेस रघुपति सम लेखउँ।। (7/124/4)

भगवान शिवजी भी पार्वतीजी को कथा सुनाते हुए यही कहते हैं –

उमा राम सुभाउ जेहिं जाना। ताहि भजनु तजि भाव न आना। (5/34/3)

देवगुरु बृहस्पतिजी भी इसी भाव से देवराज इन्द्र को समझाते हुए कहते हैं कि तुम भरतजी के श्रीराम मिलन में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करना, क्योंकि श्रीरामजी का स्वभाव है कि वे उनके प्रति किए गए अपराध से तो क्रोधित नहीं होते, किन्तु यदि कोई उनके भक्त के साथ अपराध कर दे, तब उनकी क्रोधाग्नि में वह भस्म हो जाता है, यथा–

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निज अपराध रिसाहिं न काऊ।।
जो अपराधु भगत कर करई। राम रोष पावक सो जरई।। (2/218/4–5)

(2) एक बार एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया कि गीता में लिखा है कि 'मैं (अर्थात् ईश्वर) सभी में समरूप से व्याप्त हूँ–

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया।। (18/61)

इसी सिद्धान्त को ध्यान में रखकर गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस के प्रारम्भ में ही लिख दिया –

सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।। (1/8/2)

इस सिद्धांत को एक कवि ने एक कविता के माध्यम से इस प्रकार से समझाया है–

ईख में मिठाई जैसे, सेंधा में नमकापन।
तिलहन में तेल जैसे, शीतलता आँवला में।।
नीम माँहि कडुवापन, मिर्च में ज्यों तीखापन।
दूध माँहि धृत जैसे, रुई छिपी बिनोले में।।
काठ में ज्यों अग्नि छिपी, बीज माँहि वृक्षा छिपा।
ऐसे ही श्रीराम छिपे, जग के सब प्राणियों में ।।

दुष्ट रावण के अत्याचार से दुखी होकर जब सभी देवता ब्रह्माजी के साथ भगवान नारायण से प्रार्थना करने जा रहे थे, तब विचार करते हैं कि भगवान के पास बैकुंठ जाएँ या फिर क्षीरसागर। उस समय शिवजी ने कहा कि वह ईश्वर तो सर्वत्र समरूप से व्याप्त है। जिस प्रकार काष्ठ में अग्नि छिपी है और रगड़ने से वह प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार प्रेमभाव (आर्त्त हृदय) से पुकारने पर वह निर्गुण–निराकार ईश्वर भी प्रकट होता है –

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।।
अग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी।।(1/185/5 एवं 7)

(3) महर्षि विश्वामित्रजी अपने आश्रम में जनकल्याण हेतु एक विशेष यज्ञ कर रहे थे, किंतु मारीच और सुबाहु उसको हर बार अपवित्र करके उनकी साधना भंग कर देते थे। उसी समय अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान का अयोध्या में अवतार हो गया था। विश्वामित्रजी ने विचार किया–

गाधितनय मन चिंता ब्यापी। हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी।।
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा।।
एहूँ मिस देखौं पद जाई। करि बिनती आनौं दोउ भाई।। (1/206/5–6)

विश्वामित्रजी अयोध्या से श्रीराम–लक्ष्मण को ले आए। मार्ग में राक्षसी ताड़का आई और मुनिजी की आज्ञा से श्रीरामजी ने एक ही बाण से उसे मारकर अपने परमधाम पहुँचा दिया।

एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।। (1/209/6)

आश्रम पहुँचकर विश्वामित्रजी ने श्रीराम–लक्ष्मण को अपने सभी आयुध सौंप दिए और कंदमूल फल भोजनार्थ दिए। दूसरे दिन प्रातःकाल मुनिजी यज्ञ करने लगे, तब मारीच और सुबाहु ने उपद्रव प्रारम्भ कर दिया। श्रीरामजी ने सुबाहु का वध कर दिया, पर मारीच को बिना नोक का बाण मारा, जिससे वह समुद्र पार जाकर गिरा। भगवान ने मारीच को जीवित छोड़ दिया, क्योंकि आगे लीला में उसकी आवश्यकता पड़ेगी। लक्ष्मणजी ने शेष सभी राक्षसों का संहार कर दिया।

(4) राजा जनक की धनुष–यज्ञ की पत्रिका पढ़कर विश्वामित्रजी श्रीराम–लक्ष्मण के साथ जनकपुर चल दिए। मार्ग में एक सुनसान आश्रम मिला। उसमें एक पत्थर की शिला देखकर श्रीरामजी ने पूछा –

पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा बिसेषी। (1/210/12)

मुनिजी की आज्ञा से श्रीरामजी ने उस शिला को अपनी चरणधूलि प्रदान की जिसके स्पर्श से वह गौतम ऋषि की पत्नी शापमुक्त होकर प्रभु श्रीराम की वंदना करके अपने पति के लोक को चली गई।

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी।। (1/211/छंद)

इस अवसर पर पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी श्री गणेश शंकर त्रिपाठीजी ने अपने सम्बोधन में बताया कि हमारे सनातन धर्म के वेद–पुराण–उपनिषद आदि ग्रन्थों में निर्गुण–निराकार ब्रह्म की उपासना के संदर्भ में सूत्र मिलते हैं। एक विचार धारा यह है कि मैं ही ब्रह्म हूँ **"अहं ब्रह्माऽस्मि"**, किंतु गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस में सगुण ब्रह्म की उपासना के सूत्र संनिहित हैं। भगवान के अवतार के साथ–साथ ही श्रीरामजी का चरित्र एक लोकनायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। समाज में किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह शिक्षा श्रीरामजी ने अपने व्यवहार से हमें प्रदान की। श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदासजी के जीवन चरित्र पर एक शोध लेख समिति की वार्षिक स्मारिका में प्रकाशित का सुझाव भी उन्होंने दिया।

तत्पश्चात् गीता रामायण समिति के महासचिव श्री सी.एस. भोगल ने कहा कि कथा व्यासजी ने तुलसीदासजी के जीवन चरित्र के बारे में जो बताया, वह मैंने पहली बार सुना

है। श्रीरामचरितमानस में धर्म–अधर्म की परिभाषा बहुत ही सहज रूप में वर्णन की गई है, ऐसा मुझे बताया गया कि उत्तरकाण्ड के 41वें दोहे की पहली चौपाई को देखें। अपने कार्यालय आकर मैंने तुरंत रामायण खोली और यह पढ़ा –

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।(7/41/1)

अर्थात् जिसमें दूसरे का हित हो इसके समान कोई दूसरा धर्म नहीं है और जिस व्यवहार से दूसरे को पीड़ा हो इसके समान कोई पाप नहीं है।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के महासचिव डॉ. भगवान दास पटैरया ने बताया कि जैसे भोगलजी ने श्रीरामचरितमानस का एक सूत्र बताया, ऐसे अनेक सूत्र श्रीरामचरितमानस में वर्णित हैं। इनको व्यवहार में लाने से हम निष्कंटक सुखमय जीवनयापन कर सकते हैं। हम सभी को गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित अर्थसहित श्रीरामचरितमानस का अध्ययन करना चाहिए। अपने मधुर कण्ठ से भक्ति–ज्ञान से परिपूर्ण तुलसी चरित्र एवं श्रीरामकथा श्रवण कराने हेतु मानस एवं भागवताचार्य पं. ओम प्रकाश त्रिपाठी, सभी आगन्तुकों तथा कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु श्रीराम मंदिर के प्रधान पुजारी आचार्य योगेन्द्र पाण्डेय को उन्होंने साधुवाद ज्ञापित किया।

पूर्व वर्षों की भाँति आरती एवं भोजन प्रसाद के साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

'स्मारिका' के लिए लेख लिखने के संदर्भ में एक लेखक ने कहा कि अब किस विषय पर लिखें, लगभग सभी विषयों पर लेख लिखे जा चुके हैं। हमारे विचार से यह वैसा ही है जैसे सागर से रत्न प्राप्त करने की बात हो। यदि कोई कहे कि अब सागर में रत्न ही नहीं रहे तो यह कितना अनुचित होगा। श्रीराम राज्य में स्वयं सागर रत्न तट पर डाल देता था – **'सागर निज मरजादाँ रहहीं। डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं।। (7/23/9),** मानस के विषय में लेख लिखने के लिए भी यही समझना चाहिए कि अभी तक तो हमने केवल तट पर गिरे हुए रत्न ही बटोरे हैं। जितनी गहराई में जाते जाएँगे उतने ही रत्न प्राप्त होते जाएँगे। ऐसे ही 'मानस' का जितना चिंतन करते रहेंगे, लेखों के विषय स्वतः मिलते जाएँगे।

जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई

पं. डॉ. रामगोपाल तिवारी, ग्रा.–निवादा, जिला–बाँदा (उ.प्र.), फोनः 9451142792

सृष्टि में सभी शरीरधारी अपने–अपने पूर्वकृत कर्मों के कारण ही भिन्न–भिन्न सुख–दुख, हानि–लाभ, संयोग–वियोग, मानापमान की सम–विषम परिस्थितियों को स्वीकार करने के लिए विवश होते हैं, क्योंकि सृष्टि की रचना का आधार कर्म ही है–

करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।। (2/219/4)

परन्तु आश्चर्य तो तब हुआ जब आजीवन परद्रोह की भावना से दुराचार करने वाला पापी रावण भगवान के धाम परम पद को प्राप्त हुआ, क्योंकि रावण के कर्मों के अनुसार तो उसको विशेषातिविशेष दुखदाई नरक की भयंकर यातना अनन्त काल तक मिलनी चाहिए थी। इस पर मंदोदरी का कथन है–

आजन्म ते परद्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं।
तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं।। (6/104/छंद)

अर्थात् मंदोदरी का प्रश्न है कि यदि रावण जैसा आजीवन दुराचारी पापी भी राम के धाम को प्राप्त हो गया तो जो **जस करइ सो तस फल चाखा** वाले कर्म सिद्धान्त का क्या होगा?

देवताओं का प्रश्न भी श्रीरामजी से यही था–

अधम सिरोमनि तव पद पावा। यह हमरें मन बिसमय आवा।। (6/110/10)

अब एक दूसरे प्रसंग पर विचार करें –

जब श्रीहनुमानजी लंका की ओर समुद्र के ऊपर आकाश मार्ग से जा रहे थे, तब समुद्र ने मैनाक पर्वत से कहा कि तुम राम के दूत पवनपुत्र हनुमान को विश्राम देकर सहयोग करो–

जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी।। (5/1/9)

मैनाक पर्वत जब श्रीहनुमानजी को विश्राम करने का प्रस्ताव करते हैं तो श्रीहनुमानजी ने उत्तर दिया कि मैं जब तक प्रभु श्रीरामजी का काम नहीं कर लेता, तब तक मैं विश्राम नहीं कर सकता –

हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।। (5/1)

सुरसा से श्रीहनुमानजी के कथनानुसार –

राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं।। (5/2/4)

यदि हम सीताजी की खोज को रामकाज मानें तो सीताजी के पास पहुँचने और सीताजी के दर्शन से पहले ही श्रीहनुमानजी को विश्राम क्यों मिल गया, क्योंकि रात्रि में श्रीहनुमानजी लंका नगर के अन्दर जब विभीषणजी से मिले तब –

एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा। पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा।। (5/8/2)

इसका मतलब सीताजी के दर्शन से पहले ही श्रीहनुमानजी द्वारा राम काज सम्पन्न हो चुका, तभी तो उनको अनिर्वचनीय विश्राम मिल गया, क्योंकि हनुमानजी का अडिग अकाट्य निश्चय था कि–

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि काहँ बिश्राम।

उपर्युक्त उल्लिखित दोनों "**जो जस करइ सो तस फल चाखा**" और "**राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम**", जिज्ञासा बिन्दु हमें गंभीर विचार के लिए प्रेरित करते हैं। सीताजी की खोज करते समय जब बन्दर समुद्र तट पर थे, तब सम्पाती ने बताया था कि जो सौ योजन समुद्र को पार कर सकेगा वही **राम काज** कर पाएगा। इस कठिनतम प्रयास में जब सभी बन्दर असमर्थता प्रकट करते हैं, तब जामवन्तजी श्रीहनुमानजी को प्रेरित करते हैं–

राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा।। (4/30/6)

तब श्रीहनुमानजी जामवन्तजी से अपनी पराक्रम क्षमता बताकर आवश्यक उचित सलाह का निवेदन करते हैं –

सिंहनाद करि बारहिं बारा। लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा।।
सहित सहाय रावनहिं मारी। आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी।।
जामवंत मैं पूँछउँ तोही। उचित सिखावनु दीजहु मोही।। (4/30/8–10)

जामवन्तजी ने श्रीहनुमानजी से कहा कि यह कोई कार्य आपको नहीं करना है, बल्कि आप तो केवल सीताजी को देखकर वापस आकर श्रीरामजी को जानकारी दीजिए तब श्रीरामजी खेल करेंगे–

एतना करहु तात तुम जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई।।

तब निज भुज बल राजिवनैना। कौतुक लागि संग कपि सेना।। (4/30/11–12)

श्रीहनुमानजी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी इस समय, इस परिस्थिति में जब माता सीताजी संकट में हैं, तब अभी श्रीरामजी को कौतुक (खेल) करने की पड़ी है। अरे जब सीताजी कुशलतापूर्वक वापस आ जाएँ, तब निश्चिन्त समय और मानसिकता में प्रभु खेल करते रहें। अभी तो किसी भी प्रकार के कौतुक से भी सर्वाधिक आवश्यक यह है कि हम ऐसा प्रयास करें कि सीताजी वापस प्रभु के पास आ जायें तो माताजी का संकट दूर हो जाये। जामवन्तजी ने श्रीहनुमानजी से एक गोपनीय रहस्यमय उद्देश्य उजागर करते हुए कहा कि जब आप सीताजी का समाचार श्रीरामजी को बताएँगे तब बलिष्ठ भुजाओं वाले कमलनेत्र भगवान श्रीरामजी खेल करने के लिए बन्दरों की सेना लेकर निशाचरों का संहार करके स्वयं श्रीरामजी ही सीताजी को वापस लाएँगे–

तब निज भुज बल राजिवनैना। कौतुक लागि संग कपि सेना।। (4/30/12)

कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं। (4/30/छंद)

श्रीहनुमानजी को पुनः आश्चर्यमय जिज्ञासा हुई कि जब सम्पूर्ण निशाचरों सहित रावण को मैं चुटकी में संहार करके अति शीघ्र सीताजी को वापस लाने की बात कर रहा हूँ, तब वही काम करने के लिए मेरे प्रभु श्रीरामजी को बन्दरों की सेना लेकर युद्ध करके, निशाचरों का संहार करके सीताजी को वापस लाने की इतनी लम्बी विलम्बित प्रक्रिया की क्या उपयोगिता और क्या औचित्य है? तब जामवन्तजी ने रहस्य खोला कि केवल खेल करना ही श्रीरामजी का इन घटनाओं का उद्देश्य है अन्यथा सीता और राम का कभी वियोग ही नहीं है –

कबहूँ जोग बियोग न जाकें। (1/49/8)

श्रीहनुमानजी इस उद्देश्य को और आगे तक समझना चाहते हैं, तब जामवन्तजी ने स्पष्ट किया कि जब बन्दरों की सेना लेकर श्रीरामजी निशाचरों का संहार करके सीताजी को वापस लाएँगे, तब यह तीनों लोकों को पवित्र करने वाला चरित्र नारदजी जैसे अन्य देवता और ऋषि मुनि कथावाचक प्रभु की पतितपावनी कथा का वर्णन करेंगे, जिसको

सुनते, गाते, समझते हुए मनुष्य परम पद को प्राप्त करेंगे। श्रीहनुमानजी के मन में तब एक प्रश्न और आया कि यदि कोई महापापी हो तो क्या रामकथा उसको भी परम पद प्रदान करेगी। इसके उत्तर में जामवन्तजी कहते हैं –

कपि सेन संग सँहारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं।।
जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई।। (4/30/छंद)

तब श्रीहनुमानजी को यह रहस्य समझ में आते ही उनकी यात्रा का उद्देश्य और राम काम का लक्ष्य बदल गया कि रामजी के अवतार और इन घटनाओं का यदि अंतिम उद्देश्य केवल श्रीरामजी की कथा का प्रचार करना ही है तो मैं अब केवल श्रीराम कथा प्रचार को ही सम्पूर्ण रामकाज समझकर सम्पन्न करके ही विश्राम करूँगा अर्थात् अब चाहे कोई कुछ भी पूछे तो मैं केवल रामकथा ही सुनाऊँगा। इस रामकथा प्रचार के लिए कठिनतम चुनौती ये भी है कि रावण ने जहाँ संपूर्ण पृथ्वी पर पुराणों की कथा, रामनाम संकीर्तन और यज्ञादि पवित्र धार्मिक कार्यों पर रोक लगा रखी है –

तेहि बहुबिधि त्रासइ देस निकासइ जो कह बेद पुराना। (1/183/छंद)

ऐसे में अपने जीवन प्राण को संकट में डालकर रामकथा के श्रोता मिलना ही कठिन है। फिर भी यदि अयोध्या, चित्रकूट आदि तीर्थों में तो रामकथा के श्रोता मिल भी सकते हैं, किंतु लंका में रामकथा का श्रोता मिलना तो असंभव ही है और श्रोता के अभाव में श्रीरामकथा प्रचार का **राम काज** कैसे सम्पन्न हो सकेगा? लेकिन अब श्रीहनुमानजी लंका की इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य श्रीरामकथा सुनाकर ही रामकाज सम्पन्न करना सुनिश्चित कर लेते हैं। लंका नगर के अंदर जब एक भवन से ब्रह्म मुहूर्त में राम राम का सुमिरन सुनाई पड़ा, तब श्रीहनुमानजी को आशा हुई कि कोई रामरसिक मिल गया तो अब श्रीरामकथा सुनाकर श्रीराम काज सम्पन्न करने में सफल हो सकूँगा। यही सोचकर विभीषणजी के समक्ष पहुँचकर सबसे पहले पूरी रामकथा सुना दी–

तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम। (5/6)

जब श्रीहनुमानजी पूरी राम कथा सुनाने में लंका जैसी निशाचरों की प्रतिकूल नगरी में सफल हो गए, तब उनको ऐसा लगा कि **राम काज** सम्पन्न हो गया और अनिर्वचनीय विश्राम भी मिल गया–

एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा। पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा।। (5/8/2)

फिर जब श्रीहनुमानजी ने अशोक वाटिका में सीताजी को दुखी देखा तो सोचा कि श्रीराम कथा सुनाकर दुख दूर करने का प्रयास करूँ –

रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा।। (5/13/5)

फिर श्रीहनुमानजी के मन में अंत में सबसे महत्वपूर्ण एक विचार आया कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सर्वाधिक पापाचारी रावण को मैं रामकथा सुनाकर प्रयोग करके देखूँ कि श्रीरामकथा पापी को परम पद प्रदान कर सकती है या नहीं तो जब श्रीहनुमानजी रावण की सभा में पहुँचे तब रावण ने प्रश्न किया कि अरे बन्दर तू कौन है और किसके बल से अशोक वाटिका उजाड़ी है? श्रीहनुमानजी ने मन ही मन सोचा कि कोई कुछ भी पूछे, पर मेरा तो अब केवल रामकथा सुनाना ही श्रीराम काज सम्पन्न करने का लक्ष्य है, तब श्रीहनुमानजी लगे रावण को रामकथा सुनाने –

सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया।।
जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा।।
जा बल सीस धरत सहसानन। अंडकोस समेत गिरि कानन।।
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता। तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता।।
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा। तेहि समेत नृप दल मद गंजा।।
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली।। (5/21/4–9)

श्रीहनुमानजी के द्वारा श्री रामकथा सुनाने का प्रत्यक्ष परिणाम यह देखा गया कि तीनों लोकों का सबसे बड़ा पापी दुष्ट दुराचारी रावण प्रभु के धाम परम पद को प्राप्त हो गया।

इस प्रकार इस प्रसंग से हमें यह प्रेरक शिक्षा मिलती है कि यदि हम अपने किए गए पाप दुष्कर्म से मुक्त होना चाहते हैं तो हमें श्री रामकथा सुननी चाहिए या हमें दुख को दूर भगाना हो तो भी हमें श्री रामकथा का आश्रय लेना चाहिए या हम किसी का परम हित करके प्रभु के अवतार का कृपामय उद्देश्य पूर्ण करना चाहते हैं तो भी हमें **श्रीरामकथा के प्रचार प्रसार के लिए श्रीरामकथा सुनना–सुनाना चाहिए**, क्योंकि –

जो सुनत गावत कहत समुझत परम पद नर पावई।

धनवान बनने के लिए एक एक कण का संग्रह करना पड़ता है और गुणवान बनने के लिए एक एक क्षण का सदुपयोग करना पड़ता है।

गंगे! भव–सागर पार करो

सरल शास्त्री, नोएडा, फोनः 9311384212

सुरनदी जाह्नवी दयामयी
पापापहारिणी पुण्यजला।
कलिकाल–विनाशिनि भीष्मजननि
भागीरथि बुद्धि करो विमला।।

हत्यापहारिणी अघहारिणि
भयहरा अभयदा भद्राणी।
ग्रहशान्तकारिणी छलहारिणि
आनन्ददायिनी कल्याणी।।

हे पतितपावनी निष्पापे
शुचि शीतल मधुरा सुधामयी।
शिव–जटाविहारिणि गिरितनया
स्वर्गापवर्ग–सोपानमयी।।

शिव–शीश–जटाओं में शोभित
जल–कण शशि मोती माला सी।
कल–कल स्वर करती अठखेली
चंचल मतवाली बाला सी।।

सुरभूमि–तपोवन से अपने
आँचल में भर औषध–मोती।
बह रही धरा निर्मल धारा
जीवों के पापों को धोती।।

भगवत्पद प्राप्त करातीं तुम
संसार भला करने वाली।
सच्चित आनन्दमयी गंगे
स्वादिष्ट सुधा सी जलवाली।।

मुख 'गंगा' शब्द निकलते ही
अन्तर्मन–मल त्यों कट जाता।
राकेश–रश्मियों से छाया
ज्यों सघन अँधेरा छट जाता।।

गंगे माँ! तेरा गंगाजल
कलिकाल–पाप हरने वाला।
हरि–चरणकमल का चरणोदक
भव–सिंधु पार करने वाला।।

नर्तन करती चंचल लहरें
जल–मंच नयन–मन को भातीं।
तब भक्ति भरे निर्मल मन में
संसार–तरंग न रह पातीं।।

गंगे! जग–जीवन रूप तुम्हीं
जग–जीवों को जीवन देतीं।
शरणागत पतितों तक को भी
पावन कर कंठ लगा लेतीं।।

भव–वारिधि पार उतरने का
कोई न खुला पथ हो जिनको।
कल्याणस्वरूपे! गंगे! माँ
तुम सेतु–स्वरूपा हो उनको।।

जग–ठुकराया दुखिया रोता
जो शरण तुम्हारी आ जाता।
गंगे माँ! तव अनुकम्पा से
वह भव–सागर से तर जाता।।

यह सोच तुम्हारे चरणों में
गंगे माँ! आया दुखी 'सरल'।
करुणा कर करुण–तरंगों से
अब शमन करो भव–व्याल–गरल।।

जब तक 'गढ़' तीर्थ रहा गंगे
माँ की अनुकम्पा दृष्टि रही।
मन रहा न प्यासा, विषयों में
भटका न, मिला जो तृप्ति रही।।

वे स्वर्णिम दिन थे जीवन के
उमड़ाता परमानन्द अरे।
आसक्ति न थी जग–भोगों में
मन में मोती से भाव भरे।।

माँ चरण–कमल को छोड़ यहाँ
आया, यह भूल हुयी मेरी।
उसका ही दंड मिला मुझको
अब दुर्लभ गंगारज तेरी।।

तेरी करुणा का डोर–छोर
गंगे माँ! जब से छूटा है।
तब से ही पंच लुटेरों* ने
मिलजुल कर मुझको लूटा है।।

---

* पंच विषयः–शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध।

गंगे! मेरी यह अभिलाषा
मायिक संसार विराग रहे।
मधुलोलुप मधुकर से मन का
तव चरण–कमल अनुराग रहे।।
हे पतितपावनी गंगे माँ
भव–सिन्धु तुम्हीं मेरी गति हो।
दो दुर्लभ भक्ति मुझे अपनी
तव चरण–कमल मेरी रति हो।।
कलि–पापनाशिनी निर्झरिणी
शरणागत पापी पाप हरो।
भव–सिंधु तारने वाली माँ
मुझको भव–सागर पार करो।।

'मानस' चिंतन

हनुमानजी ने विभीषण से कितना कहा था कि जब आपको रामजी से इतना स्नेह है कि उनके दर्शन की उत्कट लालसा है, यथा –

तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा।। (5/7/2)

तो आगे भी बढ़ो न? तुम एक पग बढ़ोगे तो प्रभु पग सात, लेकिन विभीषण आगे नहीं बढ़े तो रामजी ने हनुमानजी वाला कार्य (संत को असंत की मंडली से निकालने का कार्य) घोर विरोधी रावण से ही करा लिया। **बड़ी न्यारी लीला है मेरे रामजी की।**

विश्वास शब्द में विष भी है और आस भी है। यह स्वयं पर निर्भर करता है कि आप किसे चुनते हैं।

निज निधि तत्त्व विश्लेषण

पं. दिनेश्वर मिश्रा, कानपुर, फोनः 7881102951

पुष्प वाटिका का प्रसंगः–

लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए।।
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने।। (1/232/3–4)

प्रभु के अन्वेषणार्थ चकित, चिन्तित श्रीसीताजी को जब सखियों ने दिखाया कि देखो! वे लता की ओट में खड़े हैं। आश्चर्य, जो अभिन्न हैं, उनको दूसरे दिखला रहे हैं। अब देखिए, उनको देखने के बाद नेत्रों में लोभ की भावना आ गयी। संसार में व्यक्ति को अन्य बातों का भले ही संतोष हो जाए, पर लोभी व्यक्ति को धन का संतोष कभी नहीं होता, इसलिए लोभ की वृत्ति के लिए कहा गया कि –

काम बात कफ लोभ अपारा। (7/121/30)

यहाँ पर यह पूछा जा सकता है कि श्रीसीताजी में भी लालच? परन्तु इसका संकेत यही है कि ईश्वर को लेकर यह भाव ठीक नहीं है कि "मैंने तो भगवान को देख लिया, बस! अब कुछ पाना शेष नहीं है, अपितु होना यह चाहिए कि जैसे लोभी को चाहे जितना भी धन मिल जाए, फिर भी उसे धन की इच्छा बनी ही रहती है, ठीक उसी प्रकार से ईश्वर के संबंध में भी यह भाव हो जाए तो वही श्रेष्ठतम स्थिति है। इसीलिए गोस्वामीजी को कहना पड़ा–

कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।। (7/130ख)

अर्थात् जैसे कामी पुरुष को स्त्री प्रिय लगती है तथा लोभी को धन प्रिय होता है, वैसे ही मुझे राम प्रिय लगें। भगवान ने पूछ लिया कि क्या केवल कामी का ही दृष्टांत पर्याप्त नहीं था, जो लोभी का धन प्रिय होने का दृष्टांत भी सम्मिलित कर लिया? गोस्वामीजी ने कहा– नहीं महाराज! एक से ही बात बनती नहीं, क्योंकि कामी को भले ही सुन्दरता

प्रिय लगती हो, किंतु पा लेने के बाद धीरे–धीरे उस सौन्दर्य के प्रति उसका आकर्षण कम होने लगता है, पर "**लोभिहि प्रिय जिमि दाम**", मैंने इसलिए कहा क्योंकि लोभी की वृत्ति यह होती है कि पा लेने के बाद भी धन के प्रति उसका आकर्षण कभी कम नहीं होता। यहाँ पर श्रीसीताजी के लालची नेत्रों का लालच कैसा है, देखिए –

हरषे जनु निज निधि पहिचाने।। (1/232/4)

भगवान राम निधि हैं। अन्तर यही है कि भगवान श्रीराम को जनकपुरवासियों ने देखा तो नेत्र खोलकर देखा, पर जब श्रीसीताजी ने देखा तो नेत्र मूँद लिए, किंतु भाई दोनों के देखने में यह अन्तर क्यों? गोस्वामीजी ने कहा कि भगवान राम तो निधि हैं और निधि यदि बाहर लुट रही हो तो लोग लूटने के लिए बड़ी संख्या में दौड़ पड़ेंगे। भगवान राम जब जनकपुर में आए तो हुआ भी यही –

धाए धाम काम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।। (1/220/2)

जैसे खजाने को दरिद्र लूट रहे हों। यहाँ पर तुलसीदासजी ने एक मधुर संकेत दिया। उन्होंने कहा कि दूसरे का धन हो तो व्यक्ति लूटेगा, पर अपना धन कहीं खो गया हो और मिल जाए, तो व्यक्ति पहला कार्य यही करेगा कि उसे लाकर तुरंत घर में बंद करके रख देगा कि किसी भी तरह इसकी सुरक्षा हो। इसलिए तुलसीदासजी ने श्रीसीताजी के संदर्भ में एक शब्द और जोड़ दिया। उन्होंने कहा–

हरषे जनु निज निधि पहिचाने।। (1/232/4)

"**निज निधि**" का अभिप्राय यह है कि अन्य लोग तो मानो दरिद्र के समान इस निधि को पाना चाहते हैं, पर वे जिनकी निज निधि है, वे तो श्रीसीताजी ही हैं और जब निज निधि मिल गयी तो फिर लोभी जो करता है, वही श्रीसीताजी ने किया–

लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी।। (1/232/7)

उन्होंने तुरन्त किवाड़ बंद कर लिए। मानो ईश्वर को पा लेने के बाद उसे भीतर बंद कर लिया, अर्थात् ईश्वर को पा लेने के बाद ऐसा भाव उत्पन्न हो जाए जैसा दशरथजी का था। यह जनकपुर के दूतों के प्रसंग में वर्णित है। दशरथजी ने जब उन दूतों से पूछा कि क्या तुम लोगों ने मेरे पुत्रों को अपनी आँखों से अच्छी तरह से देखा? हम कैसे मान

लें? तब दूतों ने उत्तर दिया–महाराज! क्या बताएँ? जब से आपके पुत्रों को देखा है, तब से हमारी आँखों को और कोई भाता ही नहीं है, क्योंकि –

देव देखि तव बालक दोऊ। अब न आँखि तर आवत कोऊ।। (1/293/5)

दृष्टि निरपेक्ष हो गयी अर्थात् अब और कुछ देखने की इच्छा ही नहीं रह गयी। तो यह कपाट ही सर्वत्र रक्षा करता है। संयोग में भी कपाट है और वियोग में भी कपाट है। श्रीहनुमानजी जब लंका से लौटकर आते हैं तो प्रभु ने पूछ लिया–

कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की।। (5/30/8)

सीता जीवित है क्या? कैसे जीवित है? हनुमानजी ने कहा–महाराज! जैसे कोई वस्तु जहाँ रखी हो वहाँ पर किवाड़ बंद हो, ताला लगा हो और पहरेदार भी बैठा हो तो फिर वस्तु सुरक्षित ही रहेगी। उसी तरह वहाँ पर भी श्रीसीताजी के प्राण पर किवाड़ लगे हैं, ताला लगा है और रक्षक भी है–

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।। (5/30)

आपका नाम ही प्रहरी है। वे निरंतर आपके नाम का जप करती रहती हैं और नाम जप के साथ वे निरंतर आपके ध्यान में डूबी हुई हैं, मानो वही कपाट है, किवाड़ है। इसका अर्थ है कि हमारी दृष्टि पर जब तक ऐसा कपाट न हो कि जो बुरी वृत्तियों को अपनी दृष्टि में प्रविष्ट होने से रोके, तब तक आना और जाना रुक नहीं सकता और जब कपाट बंद हो गया तो फिर बाहर की अन्य वस्तुओं का प्रवेश संभव नहीं। हनुमानजी ने कहा कि पहरेदार और कपाट के साथ–साथ वहाँ पर तो ताला भी है– **लोचन निज पद जंत्रित।** वे निरंतर अपने चरणों की ओर देख रही हैं।

तुलसीदासजी की इस अद्‌भुत भावना के मूल में रहस्य यह है कि वस्तुतः श्रीसीताजी व भगवान राम के चरण चिह्न एक जैसे ही हैं। अन्तर केवल इतना है कि श्रीसीताजी के दायें चरण में जो चिह्न हैं वे भगवान श्रीराम के बायें चरण में तथा बायें वाले दाहिने में। इसलिए लोगों को दिखाई दे रहा है कि वे अपने चरणों को देख रही हैं और इतना वर्णन करने के बाद श्रीहनुमानजी ने उलटकर प्रभु से ही पूछ लिया–**जाहिं प्रान केहिं बाट**। कि प्रभु! जरा आप ही बताइए कि जहाँ आपके नाम का पहरा लगा हुआ हो, आपके ध्यान का

किवाड़ लगा हो और जहाँ पर अंतःकरण की वृत्ति निरंतर आपके चरणों में लगी हो, वहाँ प्राण जा सकता है क्या? और जब परम भक्त ने श्रीसीताजी की उस दिव्य स्थिति का वर्णन किया तो प्रभु समझ गए। मानो यह संकेत सबके लिए है कि अनुकूलता में भी किवाड़ बंद कीजिए तथा प्रतिकूलता में भी किवाड़ बंद कीजिए। अनुकूलता है तो प्रभु को हृदय में लाकर किवाड़ बंद कीजिए और लंका जैसी प्रतिकूलता की स्थिति में बाहर से कोई प्रविष्ट न हो जाए, इसलिए भी किवाड़ बंद कीजिए। श्रीहनुमानजी ने प्रतिप्रश्न के माध्यम से एक चुनौती भरा संकेत और दिया। उन्होंने कहा– महाराज् कपाट बंद हो, ताला लगा हो और पहरा लगा हो, फिर भी यदि वस्तु चोरी चली जाए, तब न तो ताले को और न ही किवाड़ को पकड़ा जाएगा, अपितु सबसे पहले पहरेदार को ही निकाला जाएगा। श्रीहनुमानजी का संकेत था कि जब आपके नाम का पहरेदार, श्रीसीताजी ने रख छोड़ा है और उसके रहते हुए भी यदि प्राण चला जाए, तो सबसे पहले आपके नाम को ही संसार से निकाला जाएगा कि जब वह श्रीसीताजी के प्राण की रक्षा नहीं कर पाया तो हमारी रक्षा क्या कर पायेगा। इसका सीधा सा संकेत यही है कि अनुकूल या प्रतिकूल किसी भी परिस्थिति में हमें भगवान को ही धारण करना चाहिए। हाँ यह जरूर कहा जाएगा कि अनुकूलता में एक अलग आनंद है –

लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी।। (1/232/7)

के रूप में तो प्रतिकूलता में भी सुरक्षा है, यथा–

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।। (5/30)

यह साधना का दिव्य तत्त्व है तथा भावना की लहरें हैं कि **हम जीवन में भगवान को किन–किन परिस्थितियों में और किन–किन रूपों में स्वीकार करें।**

चार धाम	–	**बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, द्वारका।**
चार मुनि	–	**सनत, सनातन, सनंद, सनतकुमार।**
चार वर्ण	–	**ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।**
चार नीतियाँ	–	**साम, दाम, दंड, भेद।**
चार वेद	–	**सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।**

कर्म का रहस्य

डॉ. सहृदय नारायण उपाध्याय, झाँसी (उ.प्र.), फोनः 7860039496

कर्म क्या है और अकर्म क्या है? यह निर्णय करने में बड़े–बड़े महापुरुष तथा विद्वान भी मोहित एवं भ्रमित हो जाते हैं। इस समस्या का समाधान भगवान श्रीकृष्ण गीता में बताते हैं कि शास्त्र द्वारा ही कर्म का निर्णय होना चाहिए। मानस में कर्मयोग ही भक्तियोग का अंग है, इसलिए भक्ति की प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम कर्मयोग के पालन की आवश्यकता है। लक्ष्मणजी ने अरण्यकाण्ड में भक्तियोग के सम्बन्ध में भगवान राम से प्रश्न किया थाः–

एक बार प्रभु सुख आसीना। लछिमन बचन कहे छलहीना।। (3/14/5)
कहहु ग्यान बिराग अरु माया। कहहु सो भगति करहु जेहिं दाया।। (3/14/8)

प्रभु ने बल दिया कर्म पालन पर, वे अनुज से कहने लगे :–

प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती।। (3/16/6)

निज कर्म की व्याख्या मानस में अलग से तो नहीं की गयी, पर विभिन्न पात्रों के जीवन में उठने वाली समस्याओं के माध्यम से उत्तर मिल जाता है। मानस में भगवान राम कर्म में स्वधर्म को अत्यंत महत्त्व देते हैं। वास्तव में धर्म तो एक प्रकार से कर्म का ही स्वरूप है। 'धर्म' अर्थात् जिसे हम धारण करते हैं अर्थात् अपने कर्म द्वारा उसे आचरण में लाते हैं। परशुरामजी द्वारा चुनौती दिए जाने पर भी उनसे युद्ध के लिए प्रस्तुत न होकर श्रीरामजी स्वधर्म को सच्चा अर्थ प्रदान करते हैं, क्योंकि स्वधर्म से राम के क्षत्रिय धर्म का पालन हो जाता है। वे परशुरामजी को भी स्वधर्म पालन में देखना चाह रहे थे, इसीलिए बार–बार उन्हें मुनि या विप्र कह कर सम्बोधित करते रहे। यह स्वधर्म के स्थान पर धर्म में आशक्ति का अच्छा उदाहरण है। वर्णाश्रम व्यवस्था में ब्राह्मण का स्थान क्षत्रिय से ऊँचा है, अतएव अहिंसा का भी स्थान हिंसा से ऊँचा है, फिर भी परशुरामजी को श्रीरामजी द्वारा विप्र कहने से असम्मान का अनुभव होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ऐसा होना कोई अस्वाभाविक नहीं है। परशुरामजी को हिंसा में व्यक्तिगत गौरव लगता है। प्रभु राम इसी की आसक्ति से परशुरामजी को अलग करना चाहते हैं, तभी उन्हें कहना पड़ा :–

बिप्रबंस कै असि प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई।। (1/284/5)

परशुरामजी को इस व्याख्या से नया दर्शन प्राप्त होता है। वास्तविक निर्भयता वहीं है, जहाँ व्यक्ति स्वयं निर्भय होकर दूसरों को अभयदान देता है, अतः ऐसी निर्भयता के पीछे विवेक द्वारा बुद्धि पर नियंत्रण होना आवश्यक है। भगवान राम का संकेत इसी ओर था, जिससे उस मान्यता का खंडन होता है जो परशुरामजी की थी। सामान्यतया जब कोई व्यक्ति किसी के आगे नहीं झुकता, तब वह उसकी आंतरिक दुर्बलता समझी जा सकती है, पर भगवान राम के झुकने से अर्थात् उनके शील के आगे परशुरामजी पराजित हो जाते हैं। इस पराजय में पराजित भी अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है, यह एक ऐसा अद्भुत संघर्ष था कि क्षत्रिय ने शस्त्र न उठाकर संघर्ष के स्थान पर स्वयं को पराजित स्वीकार कर लिया, लेकिन भगवान राम ने अपने विनय एवं शील गुण से परशुरामजी को स्वधर्म में प्रतिष्ठापित कर दिया।

गीता में स्वधर्म की व्याख्या में वर्ण धर्म को ही प्रधानता दी गई है, क्योंकि यदि सब लोग स्वधर्म का निर्णय अपने आप लेंगे तो एक अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी तथा एक उच्छृंखल मनोवृत्ति को ही स्वधर्म का रूप दे देंगे, अतः वर्ण धर्म के माध्यम से इस मनोवृत्ति को रोकने का प्रयास किया गया है। भगवान श्रीकृष्ण वर्ण धर्म को मानवीय कृति नहीं मानते, अपितु वह वर्ण विभाजन को अपनी (ईश्वरीय) कृति मानते हैं :–

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। (गीता 4/13)

गीता की तरह मानस में भी वर्ण धर्म को ही स्वधर्म के रूप में प्रस्तुत किया गया है। रामराज्य में आदर्श समाज का चित्रण इस तरह किया गया है :–

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग।। (7/20)

बहिरंग दृष्टि से गीता एवं मानस की शब्द रचना में भिन्नता है, किन्तु भावनात्मक रूप से दोनों साम्य हैं। गीता में चारों वर्णों के गुण तथा कर्म का वर्णन किया गया है, वहीं मानस में यह दिखाने की चेष्टा की गयी है कि ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं जो किसी वर्ण विशेष में जन्म लेकर स्वधर्म का पालन न कर रहे हों। मानस की दृष्टि में ऐसे लोग शोक करने योग्य हैं, यथा –

सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना। तजि निज धरमु बिषय लयलीना।। (2/172/3)

हिन्दू धर्म पुनर्जन्मवादी है और उसकी दृष्टि में ब्राह्मण अपने स्वधर्म से च्युत होने पर निम्न वर्ण में जन्म ले सकता है तथा शूद्र भी स्वधर्म पालन करते हुए ब्राह्मण हो सकता है, क्योंकि कर्म–चक्र किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। इसीलिए श्रीकृष्ण कहते हैं कि स्वधर्म का पालन करना चाहिए। इसमें गीता तथा मानस का समान दृष्टिकोण है।

कर्म जीवनयापन की बाध्यता है, किन्तु प्रत्येक कर्म व्यक्ति के जीवन में बंधन की सृष्टि करता है। इस कर्मबंधन से मुक्त होने के लिए भगवान श्रीकृष्ण गीता में यज्ञ कर्म का आदेश देते हैं।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः (3/9) अर्थात् यज्ञ के निमित्त किए जाने वाले कर्मों को छोड़कर सब कर्म कर्मों से बांधते हैं। श्रीकृष्ण जीवन की प्रत्येक क्रिया को ही यज्ञ कर्म के रूप में परिवर्तित करने का आदेश देते हैं।

अग्नि और आहुति का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है? बहिरंग रूप से देखने पर अग्नि में डाली जाने वाली आहुति पूरी तरह जलकर नष्ट हो जाती है। दूसरी ओर आहुति में डाला जाने वाला अन्न यदि पृथ्वी में डाला जाये तो बोने वाले को अंकुरित होकर कई गुना लाभ देता है। अन्न को अग्नि में जलाना अनुचित लगता है, किन्तु गीता का आग्रह है कि भूमि से अन्न प्राप्त करने के लिए यज्ञ की आवश्यकता है। यदि मेघ द्वारा वर्षा नहीं हो तो भूमि से उसमें डाला गया अन्न भी वापस नहीं मिल सकता। यज्ञ से ही मेघ का निर्माण होता है। भूमि एवं जल से अन्न की उत्पत्ति को तो हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं। अन्नोत्पादन में पंचभूतों का सहयोग आवश्यक है।

भौतिकवादी प्रकृति को जड़ रूप में देखकर उस पर अधिकार करने का प्रयास करता है, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से प्रत्येक जड़ पदार्थ में चेतन तत्व विद्यमान है, क्योंकि चेतन सर्वत्र समरूप से समाहित है। पदार्थ को चेतन करने वाला ही उसकी दृष्टि में देवता है, अतः वह प्रकृति के विभिन्न अंगों के स्वामी देवताओं से प्रार्थना करता है कि वे उसे अभीष्ट वस्तु प्रदान करें। श्रीकृष्ण यही आदेश देते हैं कि यज्ञ के द्वारा यजन करने पर देवता समस्त कामनाओं को पूर्ण करते हैं। इस तरह परस्पर एक दूसरे को संतुष्ट करते हुए परम श्रेय को प्राप्त करें।

वस्तुतः यज्ञ रहित समाज कभी सम्भव ही नहीं है। अग्नि कुंड एवं वेद ऋचाओं से भले ही यज्ञ न हो, पर किसी न किसी प्रकार का यज्ञ समाज में चलता ही रहता है। यज्ञ तो आदान–प्रदान की प्रक्रिया है। प्रत्येक व्यक्ति में हमेशा यह आशा रहती है कि यदि मैं किसी के लिए कुछ कर रहा हूँ तो वह हमारे लिए कालान्तर में या अभी कुछ न कुछ करे, अतः देवताओं की आराधना न करने पर भी देवशक्तियाँ अपनी ओर से अपने कर्तव्य का निर्वाह करती हैं तो व्यक्ति या समाज के लिए यह लज्जाजनक है कि वे किसी से निरंतर दान ग्रहण करने पर भी उसके प्रति कृतज्ञ न बने। प्रकृति को जड़ मानकर उसे अपनी इच्छा के अनुकूल चलाने की प्रवृत्ति को शास्त्रीय दृष्टि से आसुरी वृत्ति कहा गया है। पुराणों में शक्तिशाली दैत्यों में यही प्रवृत्ति थी। जलती हुई लंका को रावण मेघ वर्षा के माध्यम से बुझाना चाहता है, पर वह असमर्थ हो जाता है। यही बात आज भी समान रूप से कही जा सकती है। अध्यात्मवादी प्रार्थना से प्रसाद प्राप्त करता है, इसलिए उसकी देवाराधना यज्ञमूलक है। अग्नि में आहुति देने की प्रक्रिया कर्मकांड विधि के साथ–साथ हमारे सामाजिक दर्शन का भी प्रतीक है। जब किसान भूमि में अन्न डालता है तो उस उपज में उसका स्वयं का अधिकार होता है, पर मेघ बनकर जो वर्षा होती है, उसमें व्यक्ति का ही नहीं, पूरे समाज का भला होता है। इस प्रकार से जब हमारा स्वार्थ समाज–हित में एकाकार हो जाता है, तब वह यज्ञमूलक हो जाता है। जब तक अपने स्वार्थ को हम सामाजिक हित से सम्बद्ध नहीं कर लेते हैं, तब तक उस कर्म को यज्ञभावना विहीन के रूप में ही देखा जाता है और वैसा कर्म परस्पर संघर्ष एवं द्वेष का प्रेरक बन जाता है।

मानस में यज्ञ तत्व की विस्तृत व्याख्या प्राप्त होती है। इसमें छः यज्ञों का वर्णन किया गया है। इनमें से तीन यज्ञों को सुरक्षा प्रदान की जाती है और तीन यज्ञ नष्ट कर दिए जाते हैं। जिन यज्ञों को सुरक्षा प्रदान की गई वे हैं – महाराज दशरथ द्वारा किया गया पुत्रेष्टि यज्ञ, श्रीराम–लक्ष्मण द्वारा विश्वामित्रजी का यज्ञ एवं धनुष यज्ञ। ये तीनों जनकल्याणकारी थे। दक्ष द्वारा शिवजी को अपमानित करने की दृष्टि से किया गया यज्ञ तथा रावण और मेघनाद द्वारा निजी स्वार्थ हेतु किए गए यज्ञ नष्ट किए गए।

यज्ञ कर्म केवल कर्मकांड की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि वह भावना और विचार से प्रेरित जीवन–दर्शन है, जो व्यक्ति को क्रमशः स्वार्थ से ऊपर उठाता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण

ने श्रद्धापूर्वक गीता का पाठ करने को ज्ञान यज्ञ कहा है –

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः।। (18/70)

इससे पूर्व भी गीता के अध्याय 4 में भी भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को यज्ञ (कर्म यज्ञ /ज्ञान यज्ञ) के भेद को समझाते हुए कहते हैं कि द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ अत्यन्त श्रेष्ठ है, क्योंकि सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाहित हो जाते हैं, यथा–

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।। (4/33)

श्रीरामचरितमानस पर व्याख्यान–शृंखला को भी हम ज्ञान यज्ञ कहते हैं। इस प्रकार से सभी सत्कर्म यज्ञ स्वरूप ही हैं, पर सकाम भाव से किए जाने पर बंधनकारी हैं, **किन्तु निष्काम भाव से सम्पादित होने पर ठीक उसी प्रकार से मोक्षप्रदायक हैं, जैसे कि भुने हुए अन्न से अंकुर नहीं निकलते हैं। यही कर्म का रहस्य है।**

गायत्री मंत्र का अर्थ

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। (यजुर्वेद)

शब्दार्थः– भूः = सत्, भुवः = चित्, स्व = आनन्द स्वरूप, सवितुः देवस्य = सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, संहारकर्ता (अखिल ब्रह्माण्ड नायक), वरेण्यं भर्गः तत् = वरण करने योग्य उस सर्वोत्कृष्ट तेज का (हम), धीमहि = ध्यान करते हैं, यः = जो (वह) परमात्मा, नः = हमारी, धियः = बुद्धि को, प्रचोदयात् = सत् की ओर प्रेरित करें।

भावार्थः– सत् चित् आनन्द स्वरूप अखिल ब्रह्माण्ड नायक (अपने इष्ट का ध्यान करें) के वरण करने योग्य उस सर्वोत्कृष्ट तेज का हम ध्यान करते हैं, जो (वह) हमारी बुद्धि को सत् की ओर प्रेरित करे, अर्थात् हमारी बुद्धि को शुभ प्रेरणा दे।

दूसरि रति मम कथा प्रसंगा

श्री कैलाश त्रिपाठी, औरैया (उ.प्र.), फोनः 9897939095

गोस्वामी तुलसीदासजी के शब्दों में श्रीराम शबरी से कहते हैं–''मेरी कथा के प्रसंगों में रति होना दूसरी भक्ति है।'' यहाँ 'रति' शब्द का प्रयोग किया गया है। बहुत से विद्वानों व आचार्यों ने कथा के संदर्भ में 'रति' शब्द के वास्तविक अर्थ को न मानते हुए अनुराग या प्रेम लिया है। यहाँ यह संज्ञान में लेना आवश्यक है कि 'रति' शब्द में प्रबल आसक्ति निहित है। दूसरा यह कि रति (रमण) में मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार अर्थात् अन्तःकरण चतुष्टय का जैसा केन्द्रीयभूत विलय होता है, वैसा विलय अन्यत्र दृष्टिगत नहीं होता। यहाँ पर गोस्वामीजी द्वारा रति शब्द के प्रयोग की प्रासंगिकता हम दो रूपों में देखते हैं–(1) कथा में मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार अर्थात् अंतःकरण चतुष्टय का पूर्ण विलय और (2) कथा प्रसंगों में एकांतिक तथा सांसारिक कार्यों को करते हुए भी मानसिक रमण करना।

कथा श्रवण क्यों और कैसे–

गीता के अनुसार उठना–बैठना, देखना–सुनना, सोना या बोलना आदि सभी कर्म के अन्तर्गत आते हैं। तदनुसार कथा श्रवण एक कर्म है। कर्म में कर्ता का उद्देश्य निहित होने पर उसका मन, बुद्धि और चित्त अनवरत अपने उद्देश्य में समाहित होने से यह कार्य अधिक सार्थक और सफल होता है। निरुद्देश्य कर्म व्यर्थ एवं विपरीत फलदायक हो सकता है, जबकि सोद्देश्य कर्म सार्थक और अपेक्षित फलदायक होगा। इस दृष्टि से श्रोता का कथा श्रवण में अपना कोई उद्देश्य होना आवश्यक है, जो प्रत्येक श्रोता के लिए अपने अध्यात्म मार्ग, साधन व साधनावस्था के अनुरूप पृथक–पृथक हो सकता है। आज हम देखते हैं कि बड़ी संख्या में श्रोता कथा सत्संगों में जाकर कथा श्रवण करते हैं, परंतु उनमें उनका अपना कोई विशेष उद्देश्य निर्धारित न होने के कारण विशेष लाभ नहीं होता। कथा श्रवण आज की यह विडम्बना है कि श्रोता उसके उद्देश्य से अनभिज्ञ हैं। शब्द श्रोत्र ज्ञानेन्द्रिय का विषय है, अतः बिना सुविचारित प्रयोजन के कथा श्रवण केवल मनोरंजन मात्र है। इसी आशय का संकेत ''मानस'' के प्रारम्भ में ही गोस्वामी तुलसीदासजी ने किया हैः–

बुध बिश्राम सकल जन रंजनि। रामकथा कलि कलुष बिभंजनि।। (1/31/5)

इसलिए श्रोता को सर्वप्रथम विचार पूर्वक यह जानना होगा कि कथा श्रवण में उसका अपना उद्देश्य क्या है? मानव जीवन का शास्त्र सम्मत परम उद्देश्य उस विशिष्ट अवस्था पर पहुँचना माना गया है जिस अवस्था में कुछ पाना शेष नहीं रहता, कुछ करना शेष नहीं रहता, कुछ जानना शेष नहीं रहता, कोई कामना नहीं होती अर्थात् व्यक्ति आप्तकाम हो जाता है। उस अवस्था को शास्त्रों में विभिन्न अध्यात्म मार्गों, साधन व साधना पद्धतियों के भेद से भगवद्प्राप्ति, मुक्ति आदि विभिन्न नामों से जाना जाता है। शास्त्रों ने उस विशिष्ट अवस्था तक पहुँचने के अनेक मार्ग बताये हैं तथा भिन्न–भिन्न मार्गों की विभिन्न साधनावस्थाओं के अनुरूप बहुत से सहायक साधन भी बताये हैं। कुछ साधन विभिन्न मार्गों व स्थितियों में सहायक एवं उपयोगी हैं, जबकि कुछ साधन किसी विशिष्ट मार्ग व साधनावस्था विशेष के लिए ही उपयोगी हैं। विभिन्न मार्गों में सहायक साधन उनकी साधनावस्थाओं के अनुरूप अलग–अलग हो सकते हैं तथा किसी मार्ग विशेष की प्रारम्भिक अवस्था में जो साधन बहुत उपयोगी हैं, हो सकता है कि उस अवस्था को पार कर लेने पर उसकी आवश्यकता न रहे। आगे की अवस्थाओं पर पहुँचने के लिए उसे अन्य साधनों का आश्रय लेना पड़े। कुछ साधन मार्ग विशेष में बहुत उपयोगी हैं, लेकिन उनका दूसरे मार्ग में कोई उपयोग नहीं। कुछ साधन स्वतंत्र पूर्ण मार्ग भी हैं और वे अन्य मार्गों के लिए बहुत उपयोगी सहायक साधन भी सिद्ध होते हैं। यह साधक पर निर्भर है कि वह उनका किस रूप में आश्रय ले रहा है। उसे तदनुरूप ही कथा का श्रवण करना होगा।

कथा सुनने वाले अधिकांश श्रोता अपने लिए किसी एक मार्ग विशेष तथा अपनी साधनावस्था के अनुरूप सहायक साधनों का निर्धारण न कर पाने के कारण विभ्रम और दोलायमान की स्मृति में बने रहने से किसी मार्ग पर आगे नहीं बढ़ पाते। बहुत से श्रोता कथा श्रवण करते हुए विभिन्न मार्गों, दर्शनों एवं साधनों की चर्चा सुनने या करने मात्र को ही पुण्य या साध्य मानकर वहीं उसकी इतिश्री कर देते हैं। उन्होंने भ्रमवश साधन या साधन की चर्चा को ही साध्य मान लिया होता है। कुछ श्रोताओं के लिए कथा श्रवण केवल मनोरंजन है। जिन महापुरुषों को उस परमावस्था या प्राप्तव्य की प्राप्ति हुई है, उन्हें वह अपने लिए किसी एक मार्ग विशेष का निर्धारण कर उसके अनुरूप सहायक साधनों को

तीव्रतम साधना का रूप देते हुए निरन्तर आगे बढ़ने से हुई। स्वामी विवेकानन्द अल्प समय में ही अपने गन्तव्य तक जा पहुँचे थे, क्योंकि वह अविलम्ब किसी एक मार्ग का आश्रय लेकर उसके अनुरूप सहायक साधनों को तीव्रतम साधना का रूप देते हुए आगे बढ़ते गए। इसमें साधक की अपने साधन में निष्ठा और साधना की तीव्रता ही मुख्य है।

यहाँ हमारा अभिप्राय यह है कि यदि श्रोता अभी तक गन्तव्य तक पहुँचने के लिए किसी मार्ग का निर्धारण नहीं कर पाया है तो उसे सर्वप्रथम कथा सत्संग के माध्यम से अपनी रुचि, प्रवृत्ति, परिस्थिति और परिवेश के अनुरूप किसी उपयुक्त मार्ग का चयन करना है। कथा श्रवण में यही उसका अपना उद्देश्य होगा। उसे कथा सुनते समय सतत अपने उद्देश्य के प्रति जागरूक रहकर विभिन्न मार्गों, साधनों, साधना पद्धतियों के विषय में ठीक–ठीक जानने–समझने का प्रयास करना होगा और जो अपने लिए किसी एक मार्ग का निर्धारण कर चुके हैं उन्हें उसी मार्ग की विभिन्न साधनावस्थाओं और उनकी बारीकियों पर विशेष ध्यान देते हुए कथा का श्रवण करना चाहिए तथा तदनुसार अपनी साधना को तीव्रतम रूप देते हुए आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। कथा श्रवण एक स्वतंत्र साधन भी है और सहायक साधन भी। यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर है कि वह इसे किस रूप में ले रहा है। 'मानस' में गोस्वामीजी लिखते हैं :–

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।। (3/35/8)
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।। (3/36/ 6)

"नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई।" से तात्पर्य है कि कोई भी भक्ति के इन नौ साधनों में से केवल किसी एक का भी आश्रय ले सकता है और सभी का भी। परन्तु साधक द्वारा यदि इनमें से एक से अधिक अर्थात् दो, चार, पाँच या सभी साधनों का आश्रय लिया जाता है तो उसे इनमें से किसी एक को मुख्य साधन का रूप देते हुए अन्य साधनों को सहायक साधन के रूप में लेना होगा। अभिप्राय यह है कि बहुत से साधन मुख्य साधन मार्ग के रूप में भी हो सकते हैं और सहायक साधन के रूप में भी। यदि कथा श्रवण को हमने एक स्वतंत्र साधन मार्ग के रूप में लिया है तो उसके श्रवण का रूप दूसरा होगा और यदि हमने इसे सहायक साधन के रूप में लिया है तो श्रवण का रूप दूसरा होगा। यदि हम कथा श्रवण को एक स्वतंत्र या मुख्य साधन के रूप में लेकर कथा सुन रहे हैं और केवल

कथा के माध्यम से ही गन्तव्य तक पहुँचना चाहते हैं तो निश्चित रूप से हमें राजा परीक्षित या धुन्धकारी की भाँति कथा सुननी होगी।

उल्लेखनीय है कि कथा श्रवण का रूप श्रोता के उद्देश्य एवं प्रयोजन पर आधारित होगा। 'मानस' में माँ पार्वती (श्रोता) भगवान शंकर (वक्ता) से सर्वप्रथम कथा श्रवण का अपना उद्देश्य स्पष्ट करती हैं :–

तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना। कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना।। (1/108/2)

स्पष्ट है कि यहाँ श्रोता का उद्देश्य अपने अज्ञान को दूर करना है। इसी प्रकार भरद्वाजजी का याज्ञवल्क्य से रामकथा सुनने में उनका एक विशिष्ट उद्देश्य है। वे कहते हैं:–

जैसें मिटै मोर भ्रम भारी। कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी।। (1/47/1)

कथा श्रवण अपने उद्देश्य को ध्यान में रखकर तदनुरूप होना चाहिए। 'मानस' में भगवान शंकर पार्वतीजी से कहते हैं कि यदि तुम अज्ञान की निवृत्ति चाहती हो तो तुम्हें कथा के प्रति आदर का भाव रखकर कथा सुननी चाहिए। यहाँ श्रोता के अपने उद्देश्य के अनुरूप श्रवण में बुद्धि और विचार की प्रधानता नहीं, आदर की प्रधानता अपेक्षित है। यदि कथा का श्रवण उद्देश्य के अनुरूप नहीं किया गया अर्थात् कथा के प्रति आदर का भाव न होकर बुद्धि और विचार की प्रधानता रही तो अज्ञान की निवृत्ति के स्थान पर उसमें वृद्धि की ही संभावना अधिक है, जैसे कि सती ने जब भगवान शंकर के साथ कुंभज ऋषि के आश्रम में कथा सुनी थी, तब वहाँ उससे संशयों के शमन के स्थान पर संशयों के अंकुर ही उत्पन्न हुए थे, इसीलिए भगवान शंकर यहाँ अब पार्वतीजी से कहते हैं :–

मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु।। (1/120घ)

आशय यह है कि कथा का श्रवण उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए।

श्रीमद्भागवत से भी कथा के श्रवण में श्रोता का उद्देश्य और उद्देश्य के अनुरूप कथा के श्रवण की पुष्टि होती है। राजा परीक्षित द्वारा शुकदेवजी से किए गए प्रारम्भिक प्रश्न में कथा के उद्देश्य का स्पष्ट संकेत है। वे कहते हैं कि जो पुरुष सर्वथा मरणासन्न है उसको क्या करना चाहिए?

अतः पृच्छामि संसिद्धिं योगिनां परमं गुरुम्।
पुरुषस्येह यत्कार्यं म्रियमाणस्य सर्वथा।। (1/19/37)

वे पुनः आगे कहते हैं :–

कथयस्व महाभाग यथाहमखिलात्मनि।
कृष्णे निवेश्य निःसंगं मनस्त्यक्ष्ये कलेवरम्।। (2/8/3)

महाभाग शुकदेवजी आप मुझे ऐसा उपदेश दीजिए कि मैं अपने मन को आसक्ति रहित करके भगवान श्रीकृष्ण में तन्मय करके अपना शरीर छोड़ सकूँ।

हमें समाज में कथा श्रवण के प्रायः दो रूप दिखायी देते हैं– (1) समष्टिपरक और (2) व्यष्टिपरक। समष्टिपरक कथा श्रवण से हमारा आशय यह है कि जब कोई वक्ता विभिन्न प्रवृत्तियों और रुचियों वाले सैकड़ों–हजारों श्रोताओं या साधकों को एक मंच से कथा सुना रहा होता है तो इसमें वक्ता द्वारा अलग–अलग विभिन्न मार्गों एवं साधनों की चर्चा सामूहिक रूप से विभिन्न प्रकार के श्रोताओं या साधकों को दृष्टिगत रखते हुए की जाती है। श्रोताओं को चाहिए कि वे इसे ठीक से समझते हुए केवल अपने साधन मार्ग और साधनावस्था सम्बन्धी बातों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए उन्हीं का आश्रय लें। अन्य मार्गों या साधनों की बातों को उनसे न जोड़ें। यदि वह अन्य मार्गों या साधनों की बातों को अपने से जोड़ लेंगे तो निश्चित रूप से भ्रमित हो जायेंगे।

व्यष्टिपरक कथा श्रवण से हमारा आशय यह है कि जब कोई वक्ता किसी व्यक्ति या साधक विशेष को उसके आध्यात्मिक मार्ग, साधन या साधनावस्था के अनुरूप आध्यात्मिक चर्चा करता है, उसके प्रश्नों या जिज्ञासाओं का सम्यक् उत्तर देता है, उसकी साधनागत समस्याओं का समाधान करता है तथा उसे तब तक विभिन्न प्रकार से समझाता है, जब तक कि वह ठीक–ठीक उस श्रोता या साधक की समझ में न आ जाये। इतना ही नहीं, वह आवश्यकतानुसार ध्यान आदि की साधनागत समस्याओं का प्रयोगात्मक या क्रियात्मक स्तर पर भी समाधान करता–करवाता है। उत्तरकाण्ड में काकभुशुण्डि और लोमश ऋषि का संवाद, भरतजी द्वारा श्रीराम से सन्तों के लक्षण जानने सम्बन्धी प्रश्न करना और श्रीराम द्वारा उसका उत्तर देना, अरण्यकाण्ड में लक्ष्मणजी का श्रीराम से कुछ आध्यात्मिक प्रश्नों

की जिज्ञासा करना और श्रीराम द्वारा उनका समुचित समाधान करना आदि प्रसंग व्यष्टिपरक कथा श्रवण की ओर संकेत करते हैं।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि समष्टिपरक कथा श्रवण के अतिरिक्त व्यष्टिपरक कथा श्रवण भी नितान्त आवश्यक है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि शुकदेवजी द्वारा राजा परीक्षित को सुनायी गई श्रीमद्भागवत कथा भी व्यष्टिपरक ही थी। भले ही उसे राजा परीक्षित के साथ अन्य बहुत से लोगों ने सुना हो। आज श्रीमद्भागवत कथा का स्वरूप व्यष्टिपरक से बदलकर समष्टिपरक हो जाने से श्रोता को जो लाभ होना चाहिए वह नहीं हो पाता। कथा श्रवण की उपयोगिता, उद्देश्य एवं श्रवण विधि से अनभिज्ञ बहुधा लोग कथा श्रवण को पुण्य मानते हैं, परन्तु वे नहीं जानते कि श्रवण के साथ उसका मनन व निधिध्यासन भी आवश्यक है। वस्तुतः मनन और निधिध्यासन श्रवण के ही अंग हैं। यदि हम कथा श्रवण के उद्देश्य, उपयोगिता, श्रवण विधि आदि को ठीक–ठीक समझें और तदनुरूप उनका आयोजन और अनुसरण करें तभी यथेष्ट लाभ हो सकता है।

तुलसीदासजी लिखते हैं कि हरि कथा केवल सत्संग से सुलभ होती है। सत्संग के बिना हरि कथा दुर्लभ है। कथा से मनुष्य का मोह नष्ट होता है और मोह नष्ट होने पर ही श्रीराम के चरणों में अनुराग दृढ़ होता है, **अतः भक्ति या आराध्य के प्रति प्रेम सुदृढ़ करने के लिए कथा श्रवण का आश्रय आवश्यक है।**

बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग।। (7/61)

राम कथा में मानवीय मूल्यों का जय घोष है, जिसके आश्रय में युगों–युगों से मानवता पोषण पाती आ रही है। नित्य नवीनता इस कथा की सबसे बड़ी शक्ति है। राम कथा भारतीय संस्कृति की एक ऐसी कथा है जो सर्व सामान्य के सुख–दुख में सहभागी और सहगामी होकर जन–गण–मन के अन्तस में रम गई है, क्योंकि यह जन सामान्य की आध्यात्मिक यात्रा का पाथेय भी है। इसमें बहुत कुछ ऐसा है जो सहज में अनुकरणीय है और विश्वसनीय भी। **सारांश स्वरूप यह कहना है कि चाहे जैसे सुनें, जिससे सुनें, जिस उद्देश्य से सुनें कथा श्रवण सभी प्रकार से मंगलकारी है,** यथा–

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की। (1/10/छंद)

करत–फिरत रघुवर नर–लीला

श्री जगदीशप्रसाद शर्मा 'सरल', साहित्याचार्य, नोएडा, फोनः 9311384212

जिन दिनों भगवान श्रीराम अपनी धर्मपत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ दंडकवन में पंचवटी पर निवास कर रहे थे, उन दिनों उनके वनवास का तेरहवाँ वर्ष चल रहा था। अभी रामावतार का मुख्य लक्ष्य राक्षसराज रावण का संहार कार्य शेष था। भगवान श्रीराम अपने अवतार के लक्ष्य पर विचार कर ही रहे थे, तभी लंकापति रावण की बहिन शूर्पणखा आकाश में विचरण करती हुयी पंचवटी की ओर आयी। गोदावरी नदी के किनारे बनी पर्णकुटी पर उसकी दृष्टि पड़ी। वहाँ बैठे दोनों राजकुमारों को देखकर वह कामातुर हो गयी। वह मायाविनी आसुरी माया से सुंदर रूप धर कर राम के पास आकर बोली– "हे नवयुवक! अब तक मुझे मेरा मनचाहा वर नहीं मिला, इसलिए मैं अभी तक कुँआरी हूँ। अब तुम्हें देखकर मेरा मन तुम पर आसक्त हुआ है, अतः मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ।"

मम अनुरूप पुरुष जग माहीं। देखेउँ खोजि लोक तिहु नाहीं।।
तातें अब लगि रहिउँ कुमारी। मनु माना कछु तुम्हहि निहारी।। (3/17/9–10)

श्रीराम बोले– सुन्दरी! मैं तो विवाहित हूँ। जैसी तुम कुँआरी हो, वैसा ही मेरा छोटा भाई लक्ष्मण कुँआरा है, अतः लक्ष्मण के पास जाओ। तब शूर्पणखा ने लक्ष्मण के पास जाकर उनसे अपने विवाह का प्रस्ताव रखा। लक्ष्मण बोले– मैं तो उनका दास हूँ। क्या तुम दासी का जीवन जीना चाहोगी? दोनों से ठुकराई जाने पर शूर्पणखा खिसिया कर अपने असली रूप में आ गयी और सीता को मारने झपटी। तभी श्रीराम का संकेत पाकर लक्ष्मण ने उसके नाक–कान काट कर लंकापति रावण को युद्ध चुनौती दे डाली।

नाक–कान कटने पर शूर्पणखा आग–बबूला हो उठी। वह अपने अपमान का बदला लेने के लिए घायल नागिन सी फुफकारती हुयी अपने भाई खर–दूषण के पास पहुँची। बहिन की दुर्दशा देखकर खर–दूषण के क्रोध का ठिकाना न रहा। वे 14000 सैनिकों को लेकर राम–लक्ष्मण पर धावा बोलने पंचवटी की ओर चल पड़े।

इधर श्रीराम ने सीता को लक्ष्मण के साथ कन्दरा में भेज दिया और स्वयं अकेले खर–दूषण का सामना करने के लिए धनुष तान कर खड़े हो गए। राक्षसों ने आते ही राम पर हमला बोल दिया, परन्तु अकेले राम ने उन सबको क्षण भर में ही मौत के घाट उतार दिया। सर्वज्ञ राम मोहार के छत्ते पर कंकड़ मारने का दुष्परिणाम भली–भाँति जानते थे, इसलिए उन्होंने यह कहकर कि मैं अब नर–लीला करूँगा, सीता को अग्नि देव को सौंप दिया। दूसरे शब्दों में कहूँ तो असली सीता तो अग्नि में समा गई थीं और सीता की छायामूर्ति पंचवटी पर रह गयी थी–

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला। मैं कछु करबि ललित नरलीला।।
तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा। जौ लगि करौं निसाचर नासा।। (3/24/1–2)

उधर खर–दूषण के मारे जाने पर शूर्पणखा ने लंका जाकर लंकापति रावण को अपने अपमान और सेना सहित खर–दूषण के वध का समाचार सुनाया। फिर सीता के अद्भुत सौंदर्य का वर्णन कर उसकी कामवासना को भड़काया। इससे तिलमिला कर अहंकारी रावण योजना के तहत साधु का वेश बनाकर छल से राम की पत्नी सीता (सीता की छायामूर्ति) को अपहरण कर ले गया।

जब श्रीराम मारीच (मायावी मृग) का वध कर लौट रहे थे, तब लक्ष्मण को अपनी ओर आता देखकर किसी अनहोनी की कल्पना से उनका माथा ठनका। आश्रम में जनकनन्दिनी सीता को न देखकर ज्ञानी राम साधारण मनुष्य की तरह व्याकुल हो गए –

आश्रम देखि जानकी हीना। भए बिकल जस प्राकृत दीना। (3/30/6)

केवल दुखी ही नहीं, पत्नी के विरह में तो राम पागल से हो गए थे। फूट–फूट कर रोते हुए वे पशु–पक्षियों और कीट–पतंगों से पूछते फिरे कि क्या तुमने मेरी मृगनयनी सीता को देखा है –

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।। (3/30/9)

अपनी प्राणप्रिया सीता की खोज में विरह–व्याकुल राम काँटों से भरे वन के कँकरीले मार्ग में नंगे पैर चलकर पहाड़ों और टीलों (छोटे पहाड़) पर सीता को खोजने की नर–लीला करते फिरे –

कंटकमय वन–पथ गिरि टीला। करत–फिरत रघुवर नर–लीला।। – (सरल)

भगवान श्रीराम सीता की खोज में महीनों वन–वन भटकते फिरे। अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि भगवान श्रीराम तो सर्वज्ञ थे, तब तो वे यह बात भली–भाँति जानते ही थे कि सीता कहाँ हैं? फिर वे उन्हें खोजते महीनों वन–वन क्यों भटकते फिरे? यदि राम को मनुष्य ही मानें तो भी उन्हें जटायु गीध के द्वारा सीता का पता तो चल ही गया था– जब राम दंडकवन में सीता को खोज रहे थे, तब मार्ग में उन्हें मरणासन्न गीधराज जटायु मिले तो जटायु ने राम को बतलाया था–हे नाथ! रावण ने मेरी यह दशा की है। उसी दुष्ट ने जानकीजी का हरण किया है और वह उन्हें लेकर दक्षिण दिशा में गया है। सीताजी बहुत विलाप कर रही थीं –

नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही।।
लै <u>दच्छिन दिसि</u> गयउ गोसाईं। बिलपति अति कुररी की नाईं।। (3/31/2–3)

जब जटायु से सीता के हरण का पता चल ही गया था, तब सीता की खोज में वे महीनों वन–वन क्यों भटकते रहे? सीधे लंका क्यों नहीं गए?

भगवान श्रीराम सर्वज्ञ हैं, इसमें कोई संशय नहीं है। उन्हें निश्चित रूप से यह पता था कि सीता का हरण लंकापति रावण ने किया है और वे लंका की अशोक वाटिका में हैं। सीता की खोज में वन–वन भटकना तो उनकी नर–लीला थी और नर–लीला करने की बात वे अपनी प्राणप्रिया सीता को बता भी चुके थे – **"मैं कछु करबि ललित नरलीला"**।

वन–वन भटकने का दूसरा कारण यह था कि भगवान राम अपना अपमान तो सहन कर लेते हैं, परन्तु अपने भक्त का अपमान सहन नहीं करते। उनके भक्त का अपमान करने वाला भले ही उनका परमप्रिय क्यों न हो, उसे वे क्षमा नहीं करते, अतः उसे अपने अपराध का प्रायश्चित्त करना ही पड़ता है। श्रीराम की प्राणप्रिया सीता ने रामभक्त लक्ष्मण का अपमान किया था। संत तुलसीदास ने संकेत भर किया है –**मरम बचन जब सीता बोला**, यही कारण था कि जब तक सीता ने अपने अपराध का प्रायश्चित्त नहीं किया, तब तक सर्वज्ञ भगवान राम प्राणप्रिया सीता को खोजने का नाटक ही करते रहे। जब उन्हें हनुमान द्वारा सीता के प्रायश्चित्त करने का पता चला – **अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। (5/31/3)** (छोटे भाई समेत प्रभु के चरणों में मेरा प्रणाम कहना)। श्रीरामचरितमानस का आधार अध्यात्म रामायण के अनुसार तो सीताजी ने लक्ष्मण से क्षमा माँगी है – 'हे कुलनन्दन!

मेरे द्वारा अज्ञानवश कहे कठोर वचनों के लिए मुझे क्षमा करें।' फिर क्या, राम विशाल वानर सेना लेकर त्रिलोकविजयी रावण का सकुल संहार करने के लिए लंका को सहर्ष अविलम्ब चल पड़े थे –

अब बिलंबु केहि कारन कीजे। (5/34/7)

हरषि राम तब कीन्ह पयाना। (5/35/4)

भगवान श्रीराम की नर–लीला को देखकर तो देवर्षि नारद को भी बड़ा दुख और आश्चर्य हुआ था। अब मैं पाठकों का ध्यान इस प्रसंग की ओर आकृष्ट करता हूँ। जब अनुज सहित भगवान श्रीराम भगवती सीता की खोज में भटकते–भटकते पम्पा सरोवर पर पहुँचे और सरोवर के स्वच्छ पावन जल में स्नान कर एक वृक्ष की छाया में बैठ गए। उस समय श्रीराम परम प्रसन्न थे।

जब देवर्षि नारद ने दंडकवन में भगवान राम को नारि–विरह में बहुत दुखी देखा तो वे सोच रहे थे कि मेरे ही शाप के कारण भगवान राम को नारि–वियोग का दुख भोगना पड़ रहा है –

बिरहवंत भगवंतहि देखी। नारद मन भा सोच बिसेषी।।

मोर साप कर अंगीकारा। सहत राम नाना दुख भारा।। (3/41/5–6)

यह सोचकर देवर्षि नारद विरहाकुल भगवान श्रीराम को देखने के लिए पम्पा सरोवर पर गए तो वहाँ राम को सुख पूर्वक बैठे हुए देखा –

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी। (3/43/1)

भगवान राम को परम प्रसन्न देखकर नारद प्रणाम कर बोले– प्रभु! एक बात पूछूँ।

प्रभु बोले – देवर्षि! पूछिए, क्या पूछना चाहते हो?

नारदजी ने पूछा–प्रभु! दंडकवन में तो आप बड़े विरहाकुल थे। आपको विरहाकुल देखकर तब मैं यह सोच रहा था कि मैंने क्रोध में आकर तुम्हें जो शाप दिया था – ''जिस स्त्री के साथ मैं विवाह करना चाह रहा था, उसी से मेरा वियोग करा कर मेरा बड़ा अहित किया है, इससे तुम भी स्त्री–वियोग में दुखी होगे –

मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी। नारि बिरहँ तुम्ह होब दुखारी।। (1/137/8)

मेरे उस शाप के कारण ही आप कष्ट उठा रहे हैं, परन्तु अब तो आप बड़े प्रसन्न लग रहे हैं, यह क्या है?

भगवान राम बोले – देवर्षि! दंडकवन में जो आपने मुझे विरहाकुल अवस्था में देखा था, वह मेरी मंच की लीला थी और अब जो देख रहे हो, यह मंच के पीछे की लीला है। मंच की लीला दूसरों को दिखाने के लिए की जाती है और मंच के पीछे की लीला अपने लिए की जाती है।

भगवान राम को परम प्रसन्न जानकर नारद पुनः बोले – हे नाथ! जब आपने अपनी माया से मुझे मोहित किया था, तब मैं विवाह करना चाह रहा था, लेकिन आपने मेरा विवाह नहीं होने दिया। इसका क्या कारण था?

राम जबहिं प्रेरेउ निज माया। मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया।।

तब बिबाह मैं चाहउँ कीन्हा। प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा।। (3/43/2–3)

भगवान राम नारद के प्रश्न का उत्तर देते हुए बोले – देवर्षि! नारी अवगुणों की जड़ है, पीड़ा देने वाली और सब दुखों की खान है, इसलिए मैंने तुम्हारा विवाह नहीं होने दिया था –

अवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि।

ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि।। (3/44)

शास्त्र के अनुसार भी स्त्री में **आठ अवगुण** – साहस, झूठ, चंचलता, छल, भय, मूर्खता, अपवित्रता और निर्दयता सदा ही रहते हैं –

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं।।

साहस अनृत चपलता माया। भय अबिबेक असौच अदाया।। (6/16/2–3)

यह सुनकर नारद बोले – प्रभु! मैं आपकी इस बात को नहीं मानूँगा, क्योंकि आप ही दंडकवन में रोते हुए कह रहे थे – हा गुणों की खान जानकी! हा रूप, शील, व्रत और नियमों के पालन में परम पवित्र सीते! तुम कहाँ हो?

हा गुन खानि जानकी सीता। रूप सील ब्रत नेम पुनीता।। (3/30/7)

भगवन! नारी मेरे लिए अवगुणों की जड़ और आपके लिए गुणों की खान। प्रभु आप तो समदर्शी हैं, फिर नारी के विषय में दो–दो मापदंड क्यों?

भगवान राम नारद के प्रश्न का उत्तर देते हुए बोले – नारद! नारी के विषय में अलग–अलग मापदंड आश्रम के कारण हैं – मैं गृहस्थी हूँ और तुम बाल संन्यासी हो। मैं गृहस्थ में अनुरक्त हूँ और आप गृहस्थ से विरक्त हैं। **गृहस्थी पुरुष नारी को समस्त गुणों की खान के रूप में देखे और विरक्त पुरुष नारी को अवगुणों की खान के रूप में देखे।** यह अलग–अलग व्यवस्था शास्त्रों ने दी है, इसलिए नारी के विषय में ये दोनों ही कथन सत्य हैं। हमें अपने–अपने आश्रमानुसार मापदंड अपनाने चाहिए। आप विरक्त संत हो, इसलिए मैंने उस अवगुणों की खान नारी के साथ तुम्हारा विवाह नहीं होने दिया था।

देवर्षि नारद पुनः बोले – प्रभु! अपना विवाह कराने के लिए मैंने तो आपके हाथ भी जोड़े तो भी मेरा विवाह नहीं होने दिया और जिसके साथ मैं विवाह करना चाह रहा था, उस विश्वमोहिनी को स्वयं ही ले गए –

अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई।।
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आन भाँति नहि पावौं ओही।। (1/132/5–6)
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा। (1/135/4)

दूसरी ओर भगवान शिव विवाह करना नहीं चाह रहे थे तो भी उनका विवाह कराने के लिए आपने स्वयं हाथ जोड़े। आपके शिव से तीन संबंध (सेवक, सखा और स्वामी) हैं और तीनों ही निभाये – विनती कर सेवक का, स्नेह से सखा का और पार्वती से विवाह की आज्ञा देकर स्वामी का संबंध निभाया –

अब बिनती मम सुनहु सिव जौं मो पर निज नेहु।
जाइ बिबाहहु सैलजहि यह मोहि मागें देहु।। (1/76)

देवर्षि नारद ने पुनः प्रश्न किया – भगवान शिव विवाह कराना नहीं चाह रहे थे, फिर भी उनका विवाह करा दिया, परन्तु मैं विवाह करना चाह रहा था तो भी मेरा विवाह क्यों नहीं होने दिया?

भगवान राम नारद को समझाते हुए बोले – तुम मेरे छोटे बेटे हो और शिव मेरे बड़े बेटे हैं। छोटा बेटा ही अपने विवाह की बात अपने पिता से कह सकता है, परन्तु बड़ा बेटा अपने विवाह की बात अपने पिता से नहीं कह पाता। छोटा बेटा होने के कारण तुमने अपना विवाह कराने की बात मुझसे कही। 'नारद' शब्द का अर्थ है – जिसके दाँत न हों।

'ना' माइने नहीं और 'रद' माइने दाँत। 'नारद' शब्द का अर्थ है – जिसके अभी दाँत न निकले हों अर्थात् दुधमुँहा बच्चा। जिसके दाँत न निकले हों तो वह तो नासमझ ही बेटा होगा। उसे तो यहाँ तक पता नहीं होता कि उसे किसके साथ विवाह करना चाहिए और किसके साथ नहीं। नारद! तुम्हें पता है कि तुम किसके साथ विवाह करना चाह रहे थे?

''विश्वमोहिनी से,'' नारद ने तुरंत उत्तर दिया।

राम बोले – ''विश्वमोहिनी'' का अर्थ है – जिसने सारे विश्व को मोहित कर रखा है। वह विश्वमोहिनी मेरी माया है और मैं मायापति। विश्वमोहिनी मेरी माया थी –

''सोइ हरिमाया सब गुन खानी।'' (1/130/5)

और मैं मायापति। फिर मैं तुम्हारा क्या लगा?

''आप मेरे पिता हैं,'' नारद ने उत्तर दिया।

तब श्रीराम बोले – तो फिर मेरी माया विश्वमोहिनी तुम्हारी माता हुयी न । अब तुम स्वयं सोचो की तुम किसके साथ विवाह करना चाह रहे थे। अपनी माता के साथ विवाह करने की बालहठ कर रहे थे, इसलिए मैंने तुम्हें विश्वमोहिनी के साथ विवाह करने से रोका था।

दूसरी तरफ मेरे बड़े बेटे शिव की पत्नी सती (शिव की पूर्व पत्नी) ने मेरी परीक्षा लेने के लिए मेरी पत्नी सीता का वेश धारण कर लिया था यानी सती ने शिव की माता का वेश धारण कर लिया था, इसलिए शिव ने सती का त्याग कर दिया था –

एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं। सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं।। (1/57/2)

मैंने शिव से सती का त्याग करने को नहीं कहा था। मैंने तो उनसे लोककल्याण के लिए पार्वती (सती का पुनर्जन्म) से विवाह करने को कहा था। तुम लोक–मर्यादा भंग करने जा रहे थे। तुम माता से विवाह कर बहुत बड़ा अनर्थ करने जा रहे थे, इसलिए मैंने तुम्हें विवाह करने से रोका था। छोटा बेटा अपने पिता पर निर्भर रहता है, इसलिए तुम्हें अनर्थ करने से रोकना मेरा परम कर्तव्य था। फिर भी तुम क्रोध से आपे से बाहर हो गए और मुझे शाप तक दे डाला। परन्तु मेरे बड़े बेटे शिव को क्रोध नहीं आया, बल्कि उन्होंने मेरी आज्ञा को अपना परम धर्म मानकर शिरोधार्य किया। दूसरी बात शिव–विवाह के समय शिव की बहुत हँसी उड़ायी और स्वयं मैंने भी हँसी उड़ायी। मैंने देवताओं से कहा – दूल्हे

के अनुरूप बरात नहीं है, इसलिए तुम लोग अपने दल के साथ अलग–अलग होकर चलो। मेरा कहना मान कर सब देवता अपने–अपने दल सहित अलग–अलग होकर चलने लगे।

शिव की हँसी उड़ायी जाने पर भी उन्हें लेश मात्र भी क्रोध नहीं आया, बल्कि वे मन ही मन मुसकाये – **मनहीं मन महेसु मुसुकाहीं। (1/93/3),** परन्तु तुम तो इतना बुरा मान गए कि क्रोधवश मुझे शाप ही दे दिया– **यही शिव और तुम में अन्तर है**। तभी तो शिव के समान मुझे और कोई प्रिय नहीं है –

कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें। (1/138/6)

अब प्रश्न यह उठता है कि जब भगवान को नारद का विवाह कराना ही नहीं था, तब उन्होंने अपनी माया से मोहित कर देवर्षि नारद के मन में विवाह की कामना क्यों भड़कायी?

देवर्षि नारद को कामदेव पर विजय प्राप्त करने का अभिमान हो गया था। भक्त नारद भगवान राम की कृपा के किले में बैठकर तप कर रहे थे, इसलिए प्रबल कामदेव और उसकी सेना के बाण उन तक नहीं पहुँच पाए, परन्तु नारद इसे अपनी विजय मान रहे थे। इसी अभिमानवश वे अपने को कामारि शंकर से भी बड़ा समझने लगे थे। इतना ही नहीं, गर्वोन्मत्त नारद सीधे कैलाश पर गए और वहाँ भगवान शिव को अपने तप और काम–विजय की गाथा सुनायी –

मार चरित संकरहि सुनाए। (1/127/6)

अन्तर्यामी भगवान शिव नारद के मन में उमड़ रहे अहंकार को जान गए। उन्होंने नारद को अपना परम प्रिय समझ कर समझाया कि तुमने यह काम–विजय गाथा मुझे सुनायी है, इसे भूल से भी भगवान विष्णु को कभी मत सुनाना। अगर इसकी चर्चा चले तो भी छिपा लेना। भगवान शिव के मना करने पर भी नारद उसी क्षण क्षीर सागर को चल पड़े। अन्तर्यामी भगवान विष्णु जान गए कि नारद अभिमान में फूले आ रहे हैं। भगवान विष्णु बड़े विनोदी हैं। नारद के पहुँचते ही उनके प्रणाम करने से पहले ही भगवान विष्णु ने अपने आसन से उठकर नारद को अपने गले लगाया और उन्हें अपने ही आसन पर बिठाकर उनके पास बैठ गए।

भगवान ने दूसरा व्यंग्य यह किया कि आज आपने बहुत दिनों बाद दर्शन दिए। नारद भगवान की व्यंग्य भरी वाणी को समझ नहीं पाए। वे अपने मन में सोच रहे थे कि भगवान को मेरी काम–विजय का पता लग चुका है, इसलिए ये यह समझ गए कि नारद अब पहले वाला नारद नहीं रहा, तभी तो इन्होंने मुझे अपने बराबर का दर्जा दिया है। यह सोचकर नारद फूले नहीं समाये और उन्होंने भगवान को आद्योपान्त अपनी काम–विजय गाथा सुना डाली। भगवान को अहंकार पसंद नहीं, इसलिए उन्होंने अपने प्रिय भक्त नारद के मन में उपजे अहंकार के वृक्ष को जड़ सहित उखाड़ने के लिए ही अपनी माया से वन–मार्ग में सुंदर महानगर और विश्वमोहिनी के स्वयंवर की रचना कराकर नारद के मन में विश्वमोहिनी से विवाह करने की कामना भड़कायी थी।

अब मैं पाठकों को पुनः पम्पा सरोवर पर लिए चलता हूँ, जहाँ भगवान राम ने नारद को उनके विवाह को रोकने का कारण बतलाया। उसे सुनकर नारद बहुत प्रसन्न हुए और भगवान श्रीराम के चरण–कमलों में भक्तिभाव से प्रणाम कर ब्रह्मलोक को चले गए। नारद के जाते ही राम–लक्ष्मण भी ऋष्यमूक पर्वत की ओर चल दिए। वहाँ उनकी भेंट रामभक्त हनुमान से हुयी। हनुमान ने श्रीराम की मित्रता सुग्रीव से करायी। श्रीराम ने बालि–वध कर सुग्रीव को किष्किंधा के राजसिंहासन पर बैठाया और सुग्रीव ने सीता माता का पता लगाने वानरों को भेजा। जब राम को हनुमान से सीता का पता चला, तब श्रीराम वानर सेना लेकर लंका को चल पड़े।

जब श्रीराम ने वानर सेना सहित समुद्र किनारे पहुँच कर डेरे डाल दिए, तब लंकापति रावण का अनुज विभीषण श्रीराम की शरण में आया। शत्रु के भाई के आने की सूचना मिलने पर श्रीराम ने अपने मंत्रियों से सलाह ली। नीतिकुशल सुग्रीव अपना परामर्श देते बोले – नाथ! यह हमारे शत्रु लंकापति रावण का भाई है। हो सकता है यह मायावी असुर हमारा भेद लेने आया हो, इसलिए इसे बंदी बना लिया जाए।

सचिवों का परामर्श सुनने के बाद शरणागतवत्सल भगवान श्रीराम ने कहा – मेरा प्रण है कि मैं शरणागत का परित्याग नहीं कर सकता, इसलिए विभीषण को सादर मेरे पास ले आइये। यदि लंकापति रावण ने विभीषण को मेरा भेद लेने भेजा है तो भी मुझे

उससे कुछ भय नहीं है, क्योंकि संसार में जितने भी राक्षस हैं, उन सबको लक्ष्मण एक क्षण में ही मार सकते हैं –

जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते।। (5/44/7)

यह बात श्रीराम ने लक्ष्मण की प्रशंसा में वैसे ही नहीं कही, बल्कि वे ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के दौरान लक्ष्मण की अद्‌भुत शक्ति को स्वयं देख चुके थे। जितने समय में श्रीराम ने राक्षस सुबाहु को मारा, उतने समय में लक्ष्मण ने राक्षसों की समस्त सेना का संहार कर दिया था –

पावक सर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निसाचर कटकु सँघारा।। (1/210/5)

जब अकेले लक्ष्मण ही संसार के समस्त राक्षसों का एक क्षण में संहार कर सकते थे, तब राम–रावण–युद्ध, युद्ध के दौरान राम–लक्ष्मण का नाग–पाश में बँधना, लक्ष्मण के अचेत होने पर राम का फूट–फूट कर रोना, भगवान श्रीराम की नर–लीला ही तो थी। जनकनन्दिनी सीता का हरण होने पर प्राणप्रिया के विरह में सर्वज्ञ भगवान राम का उनकी खोज में साधारण मनुष्य की भाँति विलाप करते हुए वन–वन भटकने से लेकर रावण–संहार तक भगवान राम की नर–लीला ही थी और इस नर–लीला का उद्‌देश्य था, भक्त–कल्याण। भक्त जन इस लीला को सुनकर और गाकर सहज ही अपना कल्याण कर सकें। भक्तवत्सल भगवान श्रीराम भक्तों के कल्याण के लिए ही तो काँटों से भरे वन–पथ पर नंगे पैर चलकर, दुर्गम पहाड़ों और टीलों पर नर–लीला करते फिरे थे –

कंटकमय वन–पथ गिरि टीला। करत–फिरत रघुवर नर–लीला।। (सरल)

तीन देव – ब्रह्मा, विष्णु, शंकर	**तीन देवियाँ – महासरस्वती, महालक्ष्मी, महागौरी।**
तीन लोक – पृथ्वी, आकाश, पाताल।	**तीन गुण – सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण।**
तीन स्थिति – ठोस, द्रव, वायु।	**तीन स्तर – प्रारंभ, मध्य, अंत।**
तीन पड़ाव – बचपन, जवानी, बुढ़ापा।	**तीन रचनाएँ – देव, दानव, मानव।**
तीन समय – भूत, भविष्य, वर्तमान।	**तीन काल – प्रातः, मध्याह्न, सायं।**
तीन शक्ति – इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति।	

हम, हमारे कर्म, उनके फल और ईश्वर

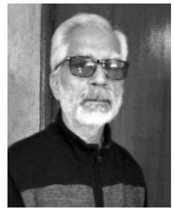

श्री देवेन्द्र शर्मा, गुरुग्राम, फोनः 9810199441

करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा। (2/219/4)

जिस प्रकार से ईश्वर अनंत है और उनकी महिमा को जानना जीव की बुद्धि–मन–वाणी से परे की बात है, उसी प्रकार से धर्म और कर्म की गति भी गहन बताई गई है। इसका तात्पर्य यह है कि अनेक बार हमें पता हीं नहीं लगता कि हम धर्म के स्थान पर अधर्म तो नहीं कर रहे हैं और सुकर्म के स्थान पर कुकर्म तो नहीं कर रहे हैं। इसलिए भक्ति–मार्गी जन अनजाने में किए गए अपराधों (अवांछित कर्मों) के लिए नित्य ही भगवान से क्षमा मांगते रहते हैं। कर्मों के बारे में हम सभी को यह ध्यान रखना अति आवश्यक है कि कर्मों की गति गहन ही नहीं, अमिट भी है, अर्थात् कर्म तो उनका फल भोग लेने पर ही मिटते हैं, यह बात अलग है कि कर्मों के भोगने का स्वरूप या प्रक्रिया भिन्न–भिन्न हो सकती है।

बहुत से लोगों के मन में यह होता है कि पूजा–पाठ करके बुरे कर्मों के प्रभाव को समाप्त किया जा सकता है, लेकिन, भगवान श्रीकृष्ण गीता के 18वें अध्याय के 12वें श्लोक में पूरी तरह से स्पष्ट करते हैं कि कर्मों का अच्छा, बुरा और मिश्रित फल तो मरने के बाद भी अवश्य ही मिलता है, यथा –

अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित्।।

नारद पुराण में भी यही भाव है –

नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। (नारद पुराण, पूर्व भाग–31/69)

अर्थात् मनुष्य जो कुछ अच्छा या बुरा कर्म करता है, उसका फल उसे भोगना ही पड़ता है। अनन्त काल बीत जाने पर भी, यहाँ तक कि सौ करोड़ कल्प बीत जाने पर भी,

अर्थात् प्रलय–काल बीत जाने पर पर, (पूर्व) जीवन–काल में किए गए कर्म के फल को भोगे बिना उस कर्म का नाश नहीं होता।

नित्य स्मरणीय करुणानिधान भगवान श्रीकृष्ण गीता में सखा अर्जुन के प्रति उपदेश में कहते हैं कि सर्वव्यापी (निराकार) परमेश्वर न तो किसी के पाप–कर्म को और न किसी के शुभ–कर्म को ग्रहण करता है (5/15)। प्रातः स्मरणीय पूज्य गोस्वामी तुलसीदासजी भी श्रीभगवान के इन्हीं वचनों की पुनः प्रतिष्ठा श्रीरामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में करते हैं कि भगवान न तो किसी के पुण्य कर्मों को ग्रहण करते हैं और न ही पाप कर्मों को, यथा–

जद्यपि सम नहिं राग न रोषू। गहहिं न पाप पूनु गुन दोषू।। (2/219/3)

अर्थात् ईश्वर किसी के भी कर्म–विधान में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। इस संसार में जीवों के कर्म ही अत्यधिक प्रधान हैं और जो जैसा करता है, उसे वैसा फल भोगना ही पड़ता है।

गीता में रुचि रखने वाले श्रद्धालु यह कह सकते हैं कि 9वें अध्याय का 27वाँ श्लोक तो उपर्युक्त कथन से पूर्णतया विरोधाभाषी है, जिसमें वे कहते हैं कि हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है और जो तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर (9/27), लेकिन श्रीभगवान इसी अध्याय के 28वें श्लोक में तुरंत ही अपने इन वचनों का स्पष्टीकरण भी प्रस्तुत कर देते हैं कि हे अर्जुन! ऐसा करने से तू कर्म–बंधन अर्थात् कर्तापन के अभिमान से मुक्त हो जाएगा और इसी को कर्म–संन्यास योग कहा जाता है। मानो, श्रीभगवान यह कहना चाहते हैं कि कर्तापन का अभिमान, जो जीव को कर्म–फल के बंधन में बांधता है, तू उससे तो मुक्त होने का प्रयास कर, क्योंकि कर्मों का फल प्रदान करना तो मेरे ही हाथ में है, वह तो वैसे भी तेरे हाथ में नहीं है, तुझे तो केवल कर्म करने का ही अधिकार प्राप्त है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।। (2/47)

और मेरे द्वारा कहे गए उपर्युक्त वचनों का पालन करने से ही तू कर्म–फल में आसक्ति से अर्थात् कर्तापन के अभिमान से मुक्त हो सकता है। यही बात पूज्य श्रीगोस्वामीजी श्रीरामचरितमानस में प्रभु श्रीराम के द्वारा श्रीभरतजी के प्रति कहलवाते हैं कि–

कालरूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता। सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता।। (7/41/5)

अर्थात् हे भरत! जीवों को उनके शुभ और अशुभ कर्मों का फल देने वाला तो मैं हूँ, जीव का कर्म–फल पर कोई अधिकार नहीं है।

पुनः विचार करें तो भी यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवों को उनके शुभ और अशुभ कर्मों का फल तो मिलना निश्चित ही है, परन्तु वह जीव की आकांक्षा के अनुसार न हो कर श्रीभगवान की इच्छा कृपा पर निर्भर करता है।

उपर्युक्त संक्षिप्त चर्चा से इतना तो सरलता से समझ में आ ही जाता है कि हम, हमारे कर्मों और ईश्वर के बीच क्या सम्बन्ध है और यह भी स्पष्ट हो जाता है कि जब ईश्वर किसी के शुभ–अशुभ कर्म को ग्रहण नहीं करते तथा फल भोगे बिना कर्म भी अक्षुण रहता है, तब जीव के पास अपने किए कर्म के फल को भोगने के अतिरिक्त और कोई विकल्प है ही नहीं। निवेदक की दृष्टि में अशुभ–कर्म के फल दो प्रकार से भोगे जाते हैं, एक तो सर्व–साधारण की तरह अनेक प्रकार के शारीरिक–मानसिक दुःख और पीड़ाओं को भोग कर और दूसरे यह कि ज्ञान हो जाने पर कि हमसे अमुक पाप कर्म हो गया है, तो फिर गुरुजनों से उस अशुभ–कर्म का तप आदि के द्वारा प्रायश्चित्त जानकर उसमें प्रवृत्त हो जाए और यह तो सर्वविदित है कि तप तो कष्ट युक्त ही होता है और किए गए कर्मों के फल का शमन करने हेतु प्रायश्चित्त रूपी इस प्रक्रिया द्वारा भी तप आदि का कष्ट तो अपने ही शरीर को भोगना होता है। अब इसके बाद कर्म और कर्मों के फल की व्यावहारिकता के बिंदु पर चर्चा करना भी अनिवार्य हो जाता है।

कर्मों के फल की व्यावहारिकता के बिंदु पर निवेदन है कि हमारे सनातन–धर्म के ग्रंथ प्रमाणित करते हैं कि साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या कही जाए, यहाँ तो आदि–अंत से परे परमेश्वर श्रीभगवान भी जब मनुष्य रूप में अवतार लेते हैं तो उन्हें भी प्रकृति के नियमों और कर्म–फल को स्वीकार करना पड़ता है, हालाँकि वे उससे परे हैं– **(गीता 4/14),** फिर भी लोक शिक्षा हेतु कर्मफल स्वीकार करते हैं। उदाहरण के तौर पर भगवान श्रीराम ने अधर्मी वानर–राज बाली का वध छुपकर किया, एक प्रकार से वह छल की श्रेणी में आता है। धर्म हेतु एक अधर्मी का वध करने पर भी श्रीभगवान ने उसका बदला श्रीकृष्णावतार में चुकाया और एक बहेलिए (पूर्व जन्म में बाली) का बाण उनके परम–धाम

लौटने का कारण बना। लंकापति रावण तो घोर पापी था, लेकिन, वह ब्राह्मण–वंशी भी था, यद्यपि भगवान श्रीराम ने रावण का वध भी धर्म की पुनः स्थापना के लिए किया, फिर भी प्रभु श्रीराम को ब्रह्म–हत्या के पाप–कर्म के फल के शमन हेतु प्रायश्चित्त करना पड़ा, जिसका अनेक प्रकार का वर्णन पढ़ने–सुनने को मिलता है। देवताओं के लिए संकट बने वृत्रासुर का वध करने पर देवराज इंद्र को भी ब्रह्म–हत्या का प्रायश्चित्त करना पड़ा। सर्वविदित है कि महाभारत के युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण की प्रमुख भूमिका थी। यद्यपि, यह युद्ध भी धर्म की पुनर्स्थापना के लिए ही हुआ था, लेकिन दोनों ओर की सेना में मारे गए अनेक लोग ऐसे भी थे, जो कि निर्दोष थे। यदि उनका कोई दोष था भी तो केवल इतना ही था कि उन्होंने इस युद्ध में या तो कौरवों का साथ दिया या फिर पांडवों का साथ दिया। युद्ध के अंत में कौरवों की माता सती गांधारी ने भगवान श्रीकृष्ण को शाप दे दिया कि तुम्हारे कारण ही मेरा कौरव वंश नष्ट हुआ, अतः तुम भी अपने यादव कुल को अपने नेत्रों से नष्ट होते देखोगे और ग्रंथ बताते हैं कि वैसा हुआ भी। ऐसे और भी अनगिनत उदाहरण हमारे ग्रंथों में उपलब्ध हैं, जो कि किए गए कर्मों का फल भोगे बिना, उन कर्मों की अक्षुणता को दर्शाते हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों की बात छोड़ भी दें तो वर्तमान में भी अनेक ऐसी घटनाएँ सामने आती हैं, जिनमें मामूली सी कहा–सुनी ही एक दूसरे की मार–काट का रूप ले लेती है।

कर्मों के फल की व्यावहारिकता के बिंदु पर आगे निवेदन है कि सत्संग तथा हमारे सनातनी ग्रंथों के अनुसार मनुष्य के द्वारा किसी भी कर्म के सम्पादन में, मनुष्य के जन्म और शरीर से जुड़े 14 तत्वों का पूरा–पूरा योगदान होता है। जिनमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (कान, नेत्र, नाक, जिह्व और त्वचा), पाँच कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, मुँह, उपस्थ–2) तथा अन्तःकरण चतुष्टय मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, इन चार तत्वों को मिलाकर कुल 14 तत्व होते हैं, जो मनुष्य के द्वारा किसी भी कर्म को करने हेतु बनते हैं। इनमें भी मन सर्व–प्रधान है, जो सदैव स्वतंत्र रहना चाहता है। जैसे ही मन किसी कर्म को करने का संकल्प करता है और विकल्प ढूँढ़ता है, तो पहले कही गई पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ, मनुष्य के संकल्प के अनुसार सक्रिय हो जाती हैं। इस संदर्भ में ''**बुद्धि**''–मनुष्य को उचित–अनुचित का ज्ञान कराती है, ''**चित्त**'' में संचित संस्कार कर्म करने की प्रक्रिया तय करते हैं और ''**अहंकार**''

(अर्थात् मैं) मनुष्य से कर्म करवाता है। पाँच ज्ञानेन्द्रियों में ''नेत्र'' और मुख में स्थित ''जिह्वा'', ये दोनों कर्मेन्द्रियों का भी काम करते हैं, जैसे किसी को डराना हो तो सबसे पहले उसे क्रोध भरी दृष्टि से देखा जाता है। कहा भी गया है कि सर्वप्रथम तो सामने खड़े व्यक्ति के नेत्रों से ही पता लग जाता है कि उसके मन/हृदय में आपके प्रति स्नेह है या घृणा। ''जिह्वा''– भोज्य पदार्थों का रसास्वादन तो करती ही है, किंतु ''वाणी'', अर्थात् यह जिह्वा वचन बोलने का काम भी करती है। कहा गया है कि मधुर–वाणी अमृत के समान होती है और यदि वाणी कठोर/कटु हो तो सामने वाले की मृत्यु का हेतु बनने का काम कर देती है। महारानी द्रौपदी के द्वारा दुर्योधन के प्रति बोला गया एक कटु–व्यंग्य तो महाभारत के युद्ध का आधार बन गया, जिसमें करोड़ों योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए और इसी कारण से संसार के हरेक क्षेत्र और समाज में वचनों को बहुत ही संभल कर बोलने की शिक्षा दी जाती है।

प्रातः स्मरणीय पूज्य श्रीगोस्वामीजी श्रीरामचरितमानस में जिह्वा (जीभ) को कमान अर्थात् धनुष तथा उससे निकले वचनों को बाणों (तीरों) की संज्ञा देते हैं। प्रसंग है अयोध्याकाण्ड में प्रभु श्रीराम के वनवास का। इसी प्रसंग में महारानी कैकेयी, जब महाराज दशरथ से श्रीराम के वनवास का वरदान माँग रही थीं, तो पुत्र मोह से युक्त और घोर विषमता से ओतप्रोत महारानी कैकेयी को पूज्य श्रीगोस्वामीजी एक तलवार की संज्ञा देते हैं:–

आगें दीखि जरत रिस भारी। मनहुँ रोष तरवारि उघारी।।
मूठ कुबुद्धि धार निठुराई। धरी कूबरीं सान बनाई।। (2/31/1–2)

अर्थात् उस समय पुत्र मोह से युक्त, घोर विषमता से ओतप्रोत और क्रोध से भरी महारानी कैकेयी महाराज दशरथ को म्यान से निकली हुई नंगी तलवार के समान दिखाई दी। श्रीगोस्वामीजी आगे लिखते हैं कि उस तलवार की मूठ तो कुबुद्धि का स्वरूप थी, उसकी धार कठोर निष्ठुरता का स्वरूप थी, जिसे कुबरी (मंथरा) रूपी सान पर रखकर तीक्ष्ण किया गया था।

इसी प्रसंग में आगे महारानी कैकेयी जब महाराज दशरथ के सत्यसंध होने की प्रसिद्धि को लेकर और माँगे गए अपने वरदानों पर तर्क करती हैं, तब पूज्य श्रीगोस्वामीजी

महारानी कैकेयी की जिह्वा (जीभ) को कमान अर्थात् धनुष और उससे निकले वचनों को बाणों (तीरों) की संज्ञा देते हुए लिखते हैं, यथा –

निधरक बैठि कहइ कटु बानी। सुनत कठिनता अति अकुलानी।।

जीभ कमान बचन सर नाना। मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना।। (2/41/1–2)

इस प्रसंग में आगे जब प्रभु श्रीराम, श्रीसीताजी और श्रीलक्ष्मणजी सहित वनवास हेतु प्रस्थान की तैयारी करके महाराज दशरथ के समक्ष उपस्थित होते हैं, तब भी महारानी कैकेयी फिर से कुछ कटु वचन बोलती हैं, तब भी उनके वे कटु वचन महाराज दशरथ को बाणों के समान लगते हैं और वे उन वचनों को सुन कर मूर्छित हो जाते हैं, अयोध्या की समस्त प्रजा व्याकुल हो जाती है, यथा –

भूपहि बचन बानसम लागे। करहिं न प्रान पयान अभागे।।

लोग बिकल मुरुछित नरनाहू। काह करिअ कछु सूझ न काहू।। (2/79/6–7)

यह भी जग–प्रसिद्ध है कि महारानी कैकेयी के कठोर वचनों के कारण प्रभु श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास भोगना पड़ा और महाराज दशरथ को मृत्यु का वरण करना पड़ा और अंत में महारानी कैकेयी को शेष जीवन–भर महा–पश्चात्ताप के सागर में डूबा रहना पड़ा।

केवल बोली गई वाणी का ही दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ता है और उसका क्या फल मिलता है, इसका एक उत्तम उदाहरण ऐतिहासिक–ग्रंथ महाभारत में मिलता है। पांडवों के बड़े भाई महाराज युधिष्ठिर को उस कालान्तर में धर्मराज की संज्ञा से विभूषित किया गया था, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में कभी असत्य नहीं बोला था और इसीलिए उनके वचनों को एक प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता था। कथाएँ बताती हैं कि ऐसे सत्यवादी होते हुए भी महाराज युधिष्ठिर को नर्क देखना पड़ा, जो उनके लिए स्वयं उनके चरित्र पर ही एक प्रश्न था। नर्क में पहुँच कर महाराज युधिष्ठिर से स्वयं के द्वारा नर्क–दर्शन का कारण पूछा तो उन्हें बताया गया कि आपके द्वारा किए गए एक असत्य भाषण ने आपको यहाँ (अर्थात् नर्क) का दर्शन कराया है। महाराज युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि उन्होंने तो जीवन में कभी असत्य बोला ही नहीं। तब उन्हें समझाया कि हे धर्मराज युधिष्ठिर! अपने जिस वचन के कारण आपको नर्क का दर्शन करना पड़ा है, वह वचन आपने तो सत्य ही

बोला था, लेकिन, कारण–विशेष से आपका सत्य–भाषण, सुनने वाले पर अधूरे–सत्य के रूप में प्रभावी हुआ और उसकी मृत्यु का कारण बना। आपके लिए उस वचन का स्मरण इस प्रकार है कि –

पितामह भीष्म के बाद कौरव सेना के दूसरे सेनापति गुरु द्रोणाचार्य बने, जो हाथों में अस्त्र रहते अजेय थे और जब उन्होंने पांडव सेना का संहार करना आरम्भ किया तो भगवान श्रीकृष्ण सहित, पांडवों में गुरु द्रोणाचार्य पर विजय पाने की युक्ति पर विचार किया गया। तो निश्चय यह हुआ कि किसी प्रकार से इनके अस्त्र त्यागने का विधान करना होगा और उसका एकमात्र विधान यह तय किया गया कि कोई उन्हें उनके प्रिय पुत्र और महायोद्धा अश्वस्थामा की मृत्यु का समाचार सुनाएगा, तभी वे अस्त्र त्यागेंगे। अब ये बात बीच में आई कि यदि धर्मराज युधिष्ठिर ही यह बात द्रोणाचार्य के सामने जाकर बोलें तभी वे अपने पुत्र की मृत्यु की सूचना को सत्य मानेंगे, जिसके लिए युधिष्ठिर ने साफ़ मना कर दिया। बाद में पता लगा कि सेना में एक हाथी भी है जिसका नाम भी अश्वस्थामा है। फिर योजना बनी कि पहले भीमसेन, अश्वस्थामा नाम के उस हाथी को ढूँढ़ कर मारें और फिर युधिष्ठिर गुरु द्रोणाचार्य के सामने जाकर बोलें कि **''अश्वस्थामा रणे हत्वा नरो वा कुंजरा''**, जिस पर किसी प्रकार से धर्मराज युधिष्ठिर तैयार हो गए। अब हुआ यह कि अगले दिन, जब दस हजार हाथियों के बल से युक्त भीमसेन ने उस अश्वस्थामा नाम के हाथी को ढूँढ़ कर मार दिया, तब धर्मराज युधिष्ठिर को पूर्व में निश्चित वचन बोलने के लिए कौरव पक्ष में युद्ध करते हुए गुरु द्रोणाचार्य के सामने भेजा गया और जैसे ही धर्मराज युधिष्ठिर ने गुरु द्रोणाचार्य के सामने जाकर बोला कि ''**अश्वस्थामा रणे हत्वा....**'', तब तुरंत ही लीला–निपुण और पांडवों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध, भक्तवत्सल भगवान श्रीकृष्ण ने पूरी शक्ति से अपना शंख बजा दिया और इस युक्ति से **''नरो वा कुंजरा अर्थात् मनुष्य या हाथी''** शब्द गुरु द्रोणाचार्य सुन ही नहीं पाए और प्रिय पुत्र की मृत्यु के समाचार से शोकाकुल होकर उन्होंने अपने अस्त्र त्याग दिए और तत्क्षण ही निहत्थे गुरु द्रोणाचार्य का वध कर दिया गया। तो हे धर्मराज युधिष्ठिर! इस प्रकार से आपके द्वारा बोला गया सत्य, गुरु द्रोणाचार्य के पास अधूरे सत्य के रूप में पहुँचा और उनकी मृत्यु का कारण बना और उसी अपराध के कारण आपको नर्क के दर्शन करने पड़े हैं।

अतः महाभारत के उपर्युक्त दृष्टांत से एक बात और सिद्ध होती है कि दूसरे के प्रति बोली गई वाणी का फल इस बात पर भी निर्भर करता है कि सुनने वाले पर उस वाणी का क्या प्रभाव पड़ता है?

इस लेख के समापन में कर्मों के फल के विषय में उपर्युक्त शास्त्रीय प्रमाणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि कोई यह धारणा बना ले कि (उदाहरण के लिए) मैं दस रुपए के बराबर किए पाप–कर्मों के दस रुपए के बराबर ही अथवा उससे अधिक या उससे अनेक गुने पुण्य कर्म करके पाप कर्म मिटा लूँगा, तो यह धारणा पूरी तरह से निराधार है। पुण्य और पाप–कर्म किसी भी स्तर के क्यों न हों, किसी न किसी प्रकार से अथवा किसी न किसी रूप में फल तो दोनों कर्मों के ही भोगने पड़ते हैं। पुण्य और पाप–कर्म दोनों का संचय और व्यय अर्थात् प्रभावी और निष्प्रभावी होने का लेखा–जोखा पृथक–पृथक ही रहता है। **पुण्य का परिणाम/फल सुख तथा पाप का परिणाम/फल दुःख होता है। बहुत ही सरल भाषा में किसी संत की वाणी भी यही कहती है कि –**

चार वेद छः शास्त्र में बात लिखी हैं दोय।
सुख दीन्हें सुख होत है दुःख दीन्हें दुःख होय।।

धर्म चिंतन

हनुमानजी जब संजीवनी बूटी का पर्वत लेकर लौटे, तब तो भगवान से कहाः– "प्रभु आपने मुझे संजीवनी बूटी लेने नहीं भेजा था, बल्कि मेरा भ्रम दूर करने के लिए भेजा था और आज मेरा यह भ्रम टूट गया कि मैं ही आपका राम नाम का जप करने वाला सबसे बड़ा भक्त हूँ"।

भगवान बोलेः– वह कैसे?

हनुमानजी बोलेः– वास्तव में मुझसे भी बड़े भक्त तो भरतजी हैं, मैं जब संजीवनी लेकर लौट रहा था, तब मुझे भरतजी ने बाण मारा और मैं गिरा तो भरतजी ने न तो संजीवनी मंगाई, न वैद्य बुलाया। कितना भरोसा है उन्हें आपके नाम पर उन्होंने कहा कि यदि मन, वचन और शरीर से श्रीरामजी के चरण–कमलों में मेरा निष्कपट प्रेम हो, यदि रघुनाथजी मुझ पर प्रसन्न हों तो यह वानर थकावट

शेष पृष्ठ 72 पर

भजत कृपा करिहहिं रघुराई

श्रीकृष्णदत्तजी भट्ट, साभारः कल्याण–अक्तूबर 1988

बीसवीं शताब्दी की सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या है–चिन्ता। जिसे देखिए वही चिन्ता में घुला जा रहा है। एशिया और यूरोप, अमेरिका और इंग्लैंड, चीन और जापान, रूस और कनाडा, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया–सभी देशों में चिन्ता का जाल बिछा हुआ है।

विज्ञान ने मानव को अनेक सुख–सुविधाओं से लाद दिया है, अनेकानेक चिन्ताएँ मिटा दी हैं, पर चिन्ता ठहरी सुरसा। एक चिन्ता मिट नहीं पाती कि दस आकर खड़ी हो जाती हैं।

विश्व का समृद्धतम देश है अमेरिका। वहाँ के डॉक्टरों की घोषणा है कि हमारे यहाँ सौ में कम–से–कम सत्तर नागरिक चिन्ताग्रस्त हैं। यह चिन्ता करती क्या है? **चिन्ता चिता–गरीयसी।** मौत तो एक बार में सफाया करती है, पर चिन्ता तो रात–दिन पेरती रहती है। उसके चलते हम असंख्य रोग पाल लेते हैं।

अमेरिका के मेयो अस्पताल में 15000 पेट के बीमारों का एक बार अध्ययन किया गया तो परिणाम यह निकला कि कठिनता से 20 प्रतिशत बीमारों का रोग शारीरिक कारणों से है। शेष 80 प्रतिशत लोगों ने चिन्ता, भय, घृणा, स्वार्थपरता और जीवन तथा जगत् से संतुलन न कर पाने के कारण पेट में अलसर–जैसी भयंकर बीमारियाँ पाल ली हैं और रात–दिन भारी कष्ट भोगते रहते हैं।

पेट के ही रोग नहीं, हृदय के भी रोग, रक्तचाप के रोग, गठिया, अनिद्रा और सिरदर्द–जैसे रोगों के मूल में भी चिन्ता ही रहती है।

प्रश्न है कि इस विश्वव्यापी चिन्ता रोग से छुटकारा कैसे मिले? राम का भजन–प्रभु का भजन –

बिनु संतोष न काम नसाहीं। काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं।। (7/90/1)

राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा। (7/90/2)

पर, यहाँ एक 'पर' है–

राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु। (7/90(क)

चिन्ता से मुक्ति तभी मिलेगी जब राम की कृपा होगी।

आज जिधर दृष्टि डालिये –लोग रोग–बीमारी से पीड़ित हैं। क्या बच्चे और क्या बूढ़े, क्या छोटे और क्या बड़े, क्या अमीर और क्या गरीब, क्या स्त्री और क्या पुरुष–सभी कोई–न–कोई रोग लिए बैठे हैं। किसी को दैहिक रोग है, किसी को दैविक और किसी को भौतिक। इतने अस्पताल हैं, इतने डॉक्टर हैं, पर रोगों का शमन हो पाता है कहीं? तब उपाय? वही :–

राम कृपाँ नासहिं सब रोगा।। (7/122/5)

कोई मनुष्य मिट्टी छू देता है, वह सोना बन जाती है। दूसरा मनुष्य सोना छूता है, वह भी मिट्टी हो जाता है। जिस काम में हाथ डालता है, उसी में विघ्नों का, बाधाओं का ताँता लग जाता है।

इन विघ्नों–बाधाओं से कैसे छुटकारा मिले? इसका भी वही उपाय है–

सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही।। (1/39/5)

साधक साधना में लगा है। पूरी शक्ति से लगा है, पर देखता है कि उसकी प्रगति नहीं हो रही है। कभी काम तो कभी क्रोध, कभी लोभ तो कभी मोह, कभी मद तो कभी मत्सर उसकी सारी साधना चर जाते हैं।

कैसे छुटकारा मिले इनसे? वही एक उपाय :–

क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहिं सकल राम कीं दाया।।

सो नर इंद्रजाल नहिं भूला। जा पर होइ सो नट अनुकूला।। (3/39/3–4)

चित्त–शुद्धि के बिना साधना की गाड़ी आगे नहीं बढ़ती। उसके लिए संत–स्वभाव को विकसित करना आवश्यक है। पर संत–स्वभाव पाना कोई दाल–भात का कौर है? सारा जीवन खपा देना पड़ता है त्याग और तपस्या में, फिर भी इस बात का निश्चय नहीं कि अब इनसे कोई बुरा न होगा। तब क्या किया जाये? वही उपाय – राम–कृपा।

यह गुन साधन तें नहिं होई। तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई।। (4/21/6)

सुग्रीव अपराधी के कठघरे में खड़ा है। लक्ष्मण पकड़ लाए हैं उसे। श्रीराम पूछते हैं–'क्यों भाई! तुमने वचन दिया था सीताजी की खोज कराने का, और जहाँ **'पावा राज कोस पुर नारी'–सब भूल गए?'**

कहता है सुग्रीव–

अतिसय प्रबल देव तव माया। छूटइ राम करहु जौं दाया।। (4/21/2)

मेरी तो गिनती ही क्या है?–

विषय बस्य सुर नर मुनि स्वामी। मैं पाँवर पसु कपि अति कामी। (4/21/3)

कौन नहीं फँसा है माया के इस चक्र में? इससे छुटकारे का भी उपाय वही है :–

छूटइ राम करहु जौं दाया।। (4/21/2)

ज्ञानी, तत्त्वदर्शी और जिज्ञासु परमेश्वर को जानने के लिए बहुत उत्सुक रहते हैं, पर उस परम रहस्यमय के रहस्य को जानना क्या कोई सरल बात है? क्या उपाय है इस रहस्य के जानने का? वही उपाय –

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। (2/127/3)

और –

तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन।। (2/127/4)

तुलसी बाबा ने रामचरित–सर तैयार किया है। धन्य हो उठता है मानव उसमें स्नान करके –

दरस परस मज्जन अरु पाना। हरइ पाप कह बेद पुराना।। (1/35/1)

पर यहाँ भी दरवाजे पर ताला पड़ा है –

आवत एहिं सर अति कठिनाई। राम कृपा बिनु आइ न जाई।। (1/38/6)

और –

अति हरि कृपा जाहि पर होई। पाउँ देइ एहिं मारग सोई।। (7/129/4)

संत–समागम को भक्ति का पहला अंक बताया गया है। कहते हैं– 'अखाड़े का लतियल भी पहलवान हो जाता है।' संतों की संगति से, उनकी चरणरज से मानव का उद्धार होते देर नहीं लगती।

–पर यहाँ भी तो वही रोक लगी है –

9. **गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन।**
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं बेद पुरान।। (7/125ख)

चाँदी–सोने के लिए मनुष्य कैसा दौड़ता है, मणि और रत्न की तो बात ही क्या? भक्तिरूपी मणि तो चिन्तामणि बतायी गयी है। यह मिली कि सारे दुःखों का, सारे कष्टों का अवसान हुआः–

राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें।। (7/120/9)

परंतु उसे भी पाने का उपाय है – राम–कृपा।

10. **सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा बिनु नहिं कोइ लहई।। (7/120/11)**

अद्भुत गोरखधंधा है। मनुष्य चक्कर में पड़ जाता है। क्या बात है कि :–

1. चिन्ता से छूटना है तो राम–कृपा चाहिए।
2. रोगों से छुटकारा पाना है तो राम–कृपा चाहिए।
3. विघ्नों से छुटकारा पाना है तो राम–कृपा चाहिए।
4. षट् विकारों से मुक्त होना है तो राम–कृपा चाहिए।
5. चित्तशुद्धि करनी है तो राम–कृपा चाहिए।
6. माया के चक्कर से बचना है तो राम–कृपा चाहिए।
7. प्रभु के रहस्य को जानना है तो राम–कृपा चाहिए।
8. प्रभुपथ की ओर बढ़ना है तो राम–कृपा चाहिए।
9. संत–समागम करना है तो राम–कृपा चाहिए।
10. भक्तिचिन्तामणि पानी है तो राम–कृपा चाहिए।

घुमा–फिराकर एक ही बात–सारी चिन्ताओं से, रोगों से, विघ्न–बाधाओं से, विकारों से मुक्त होने का, प्रभुपथ पर अग्रसर होने का एक ही उपाय है – राम–कृपा।

राम–कृपा के बिना मानव के विकास का, उसके कल्याण का कोई मार्ग ही नहीं खुला है। दस दरवाजे–और दसों पर राम–कृपा का ताला।

अब प्रश्न है कि यह ताला खुले कैसे? राम–कृपा मिले कैसे, उपाय उसका भी है, हम उसका आश्रय भी तो लें।

राम कृपा पाने की सीधी कुंजी है –

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई।। (1/200/6)

अर्थात् मन, वचन, कर्म से चतुराई छोड़ो और रात–दिन प्रभु का भजन करो। न किसी के साथ कपट करो, न छल। न किसी बात में चातुरी दिखाओ, न सयानापन। तन–मन–वचन से सीधे रहकर प्रभु का भजन करो।

प्रभु तो ठहरे कृपासागर—**'कारन बिनु रघुनाथ कृपाला।' (3/33/1)**

'कोई पार है उनकी कृपा का?' **'जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती।' (1/28/3)** उनकी कृपा तो बरस रही है आठों पहर चौसठ घड़ी। हम शुद्ध सरल भाव से उनके चरणों की ओर बढ़ें भी तो! फिर वे रह नहीं सकते बिना कृपा किए। उनका आश्वासन ही है :–

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।। (5/44/5)

इसलिए हम इसी रास्ते से आगे बढ़ें:–

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई।। (1/200/6)

पृष्ठ 67 का शेष

और पीड़ा से रहित होकर स्वस्थ जो जाए। उनके इतना कहते ही मैं उठ बैठा। सच कितना भरोसा है भरतजी को आपके नाम पर। श्रीरामचरितमानस के अनुसारः–

जौं मोरें मन बच अरु काया। प्रीति राम पद कमल अमाया।।
तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला। जौं मो पर रघुपति अनुकूला।।
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा। कहि जय जयति कोसलाधीसा।। (6/59/6–8)

शिक्षा –हम भगवान का नाम तो लेते हैं, पर भरोसा नहीं करते, भरोसा करते भी हैं तो अपने पुत्रों एवं धन पर कि बुढ़ापे में बेटा ही सेवा करेगा, धन ही साथ देगा। उस समय हम भूल जाते हैं कि जिस भगवान का नाम हम जप रहे हैं वे हैं, पर हम भरोसा नहीं करते। बेटा सेवा करे न करे, पर भरोसा हम उसी पर करते हैं।

दूसरी बात प्रभु – बाण लगते ही मैं गिरा, पर्वत नहीं गिरा, क्योंकि पर्वत तो आप उठाए हुए थे और मैं अभिमान कर रहा था कि मैं उठाए हुए हूँ। मेरा दूसरा अभिमान भी टूट गया।

शिक्षा – हमारी भी यही सोच है कि अपनी गृहस्थी के बोझ को हम ही उठाए हुए हैं, जबकि सत्य यह है कि हमारे नहीं रहने पर भी हमारा परिवार चलता ही है।

श्रीरामचरितमानस मानवसमाज–हिताय श्रेष्ठ संविधान

डॉ0 रामेश्वर प्रसाद गुप्त, सेवानिवृत्त प्राध्यापक (संस्कृत), दतिया (म.प्र.), फोनः 9826249448

मानव को 'सही मानव' सुसंस्कार ही बनाते हैं। उसे संस्कृत–रूप प्रदान करने में सद्ग्रन्थ एवं सत्संग अपनी अहं भूमिका का निर्वहन करते हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित 'श्रीरामचरितमानस' मनुष्य को 'सही मानव' बनाने का श्रेष्ठ संविधान है। प्रस्तुत लेख में यह दृष्टव्य है।

संस्कृत के मनीषी महाकवि राजा भर्तृहरि ने अपने 'नीतिशतकम्' गीतकाव्य में उल्लेख किया है कि–

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूताः मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।। नीतिशतकम् (परिशिष्ट–11)

अर्थात् जिनके पास न विद्या है, न तप है, न दान है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण है और न धर्म है, वे मृत्युलोक में धरती पर भार के रूप में हैं एवं वे मनुष्य के रूप में पशुवत् विचरण करते हैं।

सभी संत शिरोमणियों ने भी सही मानव बनने की निकष प्रस्तुत की है। यथोल्लेख है कि –

शान्तः सन्तः सुशीलश्च सर्वभूतहितेरतः।
लोभं कर्तु न जानाति एतत् मानवलक्षणम्।।

स्पष्ट है कि शान्त और सन्त–स्वभाव, शील तथा सभी प्राणियों के हित की प्रवृत्ति और निर्लोभ गुण मनुष्य की निकष है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने उक्त सभी सद्गुणों को एक ही श्रेष्ठ गुण 'सत्य' या सदाचरण के रूप में उल्लिखित कर उसे मानव के श्रेष्ठ धर्म के रूप में प्रस्तुत करते हुए प्रत्यक्ष किया है कि –

धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।। (2/95/5)

यद्यपि गोस्वामीजी ने परहित, दया और अहिंसा को भी मानव–धर्म की निकष निरूपित किये हैं, यथा–

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। (7/41/1)
धर्म कि दया सरिस हरिजाना।। (7/112/10)
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। (7/121/22)

तथापि उपर्युक्त सभी मानव–धर्म 'सत्य–धर्म' के अन्तर्गत ही मान्य हैं। 'सदाचार' शिष्टाचार की जननी है, जो मानव–जीवन के साफल्य का आधार है।

श्रीरामचरितमानस में सही मानव बनने के लिए सभी शुभ सोलह संस्कारों को सहृदयता, आत्मीयता और कर्तव्यनिष्ठा से पिरोया गया है। ये संस्कार–रूपी शिष्टाचार समुन्नति के सोपान के रूप में श्रीरामचरितमानस में उत्प्रेरक बने हुए हैं। सोलह संस्कारों में प्रथम संस्कार गर्भाधान संस्कार है। इसमें वासना को कोई स्थान नहीं, अपितु साधना और उपासना ही सेव्य है। इसमें सदाचरण का सुचिन्तन तथा 'विनय और शील' श्रेष्ठ संतति–प्रदान का माध्यम बनता है। श्रीरामचरितमानस में वर्णित कौसल्या आदि रानियों का पुनीत एवं विनीत आचरण तथा उनके पति राजा दशरथ का उनके प्रति अनुकूल तथा सात्त्विक प्रेम उक्त कथन का पुष्ट प्रमाण है। यथोल्लेख है कि –

कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत।। (1/188)

उक्त आह्लादपूर्ण वातावरण का 'सफल' शीलवान संतति–प्राप्ति के रूप में प्रत्यक्ष हुआ। यथा निर्दिष्ट है कि –

एहि बिधि गर्भसहित सब नारी। भईं हृदयँ हरषित सुख भारी।।
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए। सकल लोक सुख संपति छाए।।
मंदिर महँ सब राजहिं रानीं। सोभा सील तेज की खानीं।।
सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ। जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ।।
(1/190/5–8)

गर्भ में ही शिशु के अच्छे संस्कारों को पिरो देना श्रीरामचरितमानस का परम उद्देश्य है। इससे संतति शील, सौम्य, सद्वृत्ति आदि सद्गुणोपेत प्राप्त होती है। ब्रह्म के अवतार

के साथ ही मानवीय दृष्टिकोण से यह भी विचारणीय है कि सद्वृत्तिपूर्ण गर्भाधान संस्कार के फलस्वरूप ही राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चारों भाई अनुपमेय रूपगुणादि से सम्पन्न उत्पन्न हुए। यथा निर्दिष्ट है कि –

अनुपम बालक देखेन्हि जाई। रूप रासि गुन कहि न सिराई।। (1/193/8)

चारिउ सील रूप गुन धामा। तदपि अधिक सुखसागर रामा।। (1/198/6)

स्पष्ट है कि श्रीरामचरितमानस सही मानव–सुरूप को बनाने के लिए गर्भ में ही उसकी चारुता एवं शील–शालीनता पर बल देता है एवं सर्वसद्गुणोपेत संतति की प्राप्ति हेतु षड् विकारों–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर रहित चित्त होकर शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान और श्रद्धा इन षड् सम्पत्तियों को सँजोने की समुत्प्रेरणा प्रदान करता है। शीलागार–सन्तति की प्राप्ति का यही मूलमंत्र है। दम्पती के सच्चिदानन्द रूप की छवि ही सन्तति में तेजस्विता, तपस्विता, ओजस्विता, मनुस्विता और यशस्विता प्रदान करती है।

श्रीरामचरितमानस यह स्पष्ट करता है कि सद्गुणोपेत गर्भस्थ शिशु प्रकट होने के पश्चात् अपने शुभ संस्कारों से सहज ही श्रेष्ठ उपलब्धियों से प्रावीण्य प्राप्त होता है और अपने माता–पिता, कुटुम्ब तथा प्राणि समाज के लिए सुखकारी होता है। यथा उल्लेख है कि जन्म और जनेऊ आदि संस्कार जातक को पूर्णता देते हैं –

भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता।।

गुरुगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई।। (1/204/3–4)

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।

आयसु मागि करहिं पुर काजा।देखि चरित हरषइ मन राजा।।(1/205/7–8)

श्रीरामचरितमानस यह भी आगाह करता है कि 'संस्कार–विहीन संतति' माता–पिता या बड़ों की अवहेलना या अनादर करने वाली होती है तथा असुर रूप से वह सज्जनों को संतप्त करती है। यथा वर्णन है कि –

मानहिं मातु पिता नहिं देवा। साधुन्ह सन करवावहिं सेवा।।

जिन्ह के यह आचरन भवानी। ते जानेहु निसिचर सब प्रानी।। (1/184/2–3)

गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपने महाकाव्य श्रीरामचरितमानस में सुसंस्कृत एवं संस्कारित मानव समाज की प्रस्थापना हेतु सत्संग, सत्कर्म, निगमागम के सदुपदेशों, सूक्तिसुभाषितों एवं महापुरुषों के सद्‌चरित्रों तथा जप, तप आदि अनुष्ठानों को प्राथमिकता प्रदान की है। उन्होंने पंच–महाव्रतों– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह को अपनाने पर बल दिया है तथा संसार के विषयों या भोगों को विषैला निरूपित कर सादगीपूर्ण जीवन जीने के लिए सुखद सद्–उत्प्रेरणा प्रदान की है। इस हेतु उन्होंने प्रतिदिन सद्‌साहित्य के सत्संग को अपनाने की बात कही है जैसा कि रामराज्य में था। यथोल्लेख है कि –

सब कें गृह गृह होहिं पुराना। रामचरित पावन बिधि नाना।। (7/26/7)

सत्संग व्यक्ति के समस्त कल्मष दूर करके निर्मल जल के समान उसका मन पवित्र कर उसे निश्छल एवं सही मानव बनाता है। कौए को कलहंस बनाने की क्षमता सत्संग में है। यथोल्लेख है कि –

मज्जन फल पेखिअ ततकाला। काक होहिं पिक बकउ मराला।।
सुनि आचरज करै जनि कोई। सतसंगति महिमा नहिं गोई।। (1/3/1–2)
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई।। (1/3/9)

इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदासजी ने मनुष्य को सही मानव बनने में सत्संग की महनीय महिमा के महत्त्व को प्रदर्शित किया है। **"मज्जन फल पेखिअ ततकाला"** का उल्लेख कर गोस्वामीजी ने साधु समाज और सत्साहित्य के सत्संग की महनीयता को हस्तामलक प्रत्यक्ष कर दिया है।

संस्कार तथा सत्संग से प्राप्त सदाचार एवं मन, वाणी और कर्म का ऐक्य सही मानव की पहचान है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने अच्छे मानव–स्वरूप हेतु उसमें मन, वाणी और कर्म के ऐक्य की अनिवार्यता को निरूपित किया है एवं उक्त ऐक्य को भगवत्–कृपा–दर्शन का आधार भी कहा है। यथा उल्लेख है कि –

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई।। (1/200/6)

करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार।। (2/107)

बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम।
तिन्ह के ह्रदय कमल महुँ करउँ सदा बिश्राम।। (3/16)

इत्यादि उदाहरण मन, वाणी और कर्म के ऐक्य सम्बन्धी उल्लेख हैं, जो हर व्यक्ति को उक्त ऐक्य के प्रति उत्प्रेरणा प्रदान कर सही मानव की कोटि में लाने का उपक्रम करते हैं। वस्तुतः सही मानव की पहचान उसकी मन, वाणी और कर्म की एकता ही मान्य है। यथोल्लेख है कि –

मनस्यन्यद्वचस्यन्यत् कार्येचान्यदुरात्मनाम्।
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।। (चाणक्यशतकम् 2/60)

अर्थात् मन, वाणी और कर्म में भिन्नता वाले व्यक्ति दुष्ट पुरुष होते हैं। जो मन, वाणी और कर्म से एक होते हैं, वही सच्चे पुरुष कहे जाते हैं।

'श्रीरामचरितमानस' नर समाज, नारी समाज, राजा, प्रजा, गुरु, शिष्य सभी वर्णों एवं सभी आश्रमवासियों को सही मानव बनने के गुणधर्म एवं मानवजीवन मूल्यों को प्रस्तुत करता है। **यह सुकृति अर्थात् श्रीरामचरितमानस महाकाव्य मानव–समाजोत्कर्षहिताय सुनीतिपरक संविधान** है। इसमें राजा के पुत्र अर्थात् राजकुमार के योग्य होने पर भी उसके राज्याभिषेक के लिए प्रजाजनों की सहमति नीत्यनुसार अनिवार्य कही गई है, यथा–

जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरषि हियँ रामहि टीका।। (2/5/3)

श्रीरामचरितमानस में राजा द्वारा प्रजा के हित का ध्यान रखना तत्सम्बन्धित संविधान में श्रेष्ठ नीति के रूप में मान्य है यथोल्लेख है कि –

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी।। (2/71/6)
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी। पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी।।(2/315/8)
मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक।। (2/315)

श्रीरामचरितमानस में मानव मूल्यपरक संविधान की प्रस्तुति में सर्वमानव समाज के कल्याण के लिए कर्म के प्राधान्य को प्रत्यक्ष किया गया है। 'मानस' की यह सीख मानवमात्र के कल्याण हेतु सत्कर्म की उत्प्रेरिका है। दृष्टव्य है कि –

श्रीतुलसीदास को पूर्णतया ज्ञात थी, अतः हनुमानचालीसा का पहला दोहा हनुमानजी के प्रति न होकर श्रीरामजी के प्रति है, जिसे सुनकर श्रीमारुतनन्दन निश्चित आ जाते हैं। यह विख्यात दोहा अयोध्याकाण्ड के आरम्भ में आया है :–

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।। (2/मंगलाचरण)

इस दोहे को सुनने के बाद कोई संशय नहीं रह जाता कि राम–कथा प्रारम्भ होने वाली है। बस, श्रीमहावीरजी तुरंत विराजमान हो जाते हैं और वहाँ शान्तिपूर्वक बैठ जाते हैं, इसलिए कि पूरी कथा जो सुननी है।

अब संत श्रीतुलसीदास उनके ही सामने हनुमान चालीसा प्रारम्भ कर देते हैं, परंतु कवि की कुशलता तो देखिए कि वे श्री मारुतनन्दन को चालीसा के अन्त तक बिठाए रखते हैं। उनका मन उचटने नहीं देते। उनके इष्टदेव श्रीराम का सम्बन्ध लेकर वे अपनी प्रशंसा सुनने को विवश हो जाते हैं, क्योंकि उनके इष्टदेव की महिमा और कृपा भी उसमें गुथी हुई है :–

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन–कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार।।
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।

यह मात्र हनुमानजी की प्रशंसा एवं प्रार्थना है। इससे जब उनका मन उचटने लगा तब संत श्रीतुलसीदास ने उनके चित्त को स्थिर करने के लिए कहा :–

राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि–पुत्र पवनसुत नामा।।

हनुमानजी तुरंत प्रसन्न हो गए। उन्हें रामदूत की उपाधि मिल गयी, इससे अधिक और क्या चाहिए। दूसरी उपाधि 'अतुलित बल धामा' की मिली। महावीरजी स्वयं बली न होकर अपने इष्टदेव के बल के धाम हैं। जो भी वे हैं वह अपने प्रभु का बल और कृपा है। फिर गोसाईंजी कहते हैं :–

महावीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।

पर निंदा सम अघ न गरीसा।। (7/121/22)

मानव मात्र के सुख–शान्ति में बाधक एवं निकृष्टतम पाप कर्म परनारी और परधन की वांछा कथ्य है, अतः उक्त है कि –

जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी।। (2/130/6)

श्रीरामचरितमानस का उत्तरकाण्ड मानव समाज को सुखी और समृद्ध बनाने का मनोरम एवं सुरम्य संविधान प्रस्तुत करता है। 'मानस' में राजा और प्रजा दोनों के हित की सुचारु संवैधानिक व्यवस्था निरूपित है। राजा राम अपने को प्रजा का सेवक कहते हैं और प्रजा की हर भलाई के लिए प्रतिबद्ध हैं। वे अपनी त्रुटियों को बताने के लिए भी प्रजा को प्रेरित भी करते हैं, यथा उल्लेख है कि –

जौं अनीति कछु भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई।। (7/43/6)

गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी कृति श्रीरामचरितमानस में प्रजा को भी नैतिक विधानों के परिपालन तथा परलोक सुधार के लिए भी प्रेरणा प्रदान की है। इसमें प्रजा को सुकृत करने हेतु उत्प्रेरणा है, यथा–

एहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई।।
नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं।। (7/44/1–2)

श्रीरामचरितमानस में गुरु की महत्ता–वर्णन के साथ–साथ उसे ईश्वर रूप में भी स्वीकारा गया है, यथा–

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।। (1/वंदना प्रकरण)

इसी प्रकार 'मानस' में गुरुजनों को भी उनके कर्तव्य–बोध हेतु सजग किया गया है, यथा निर्दिष्ट है कि–

हरइ सिष्य धन सोक न हरई। सो गुर घोर नरक महुँ परई।। (7/99/7)

वर्तमान में मानव–समाज को मानसिक–प्रदूषण अपनी भरपूर शक्ति से आक्रान्त किए हुए है। श्रीरामचरितमानस पर्यावरण–प्रदूषण के परिहार हेतु पूर्णतः सचेत प्रदृष्ट है। मानव को मानसिक–प्रदूषण से दूर रखने के लिए गोस्वामी तुलसीदास ने मानव के मन की निर्मलता पर जोर दिया है। इस हेतु जगज्जननी जानकीजी से प्रार्थना की गई है कि–

ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।। (1/18/8)

कृति के नायक श्रीराम भी निश्छल निर्मल मन वाले व्यक्ति को ही आत्मीयभाव प्रदान करते हैं, यथोल्लेख है कि –

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।। (5/44/5)

निर्मल मन बनने के लिए गोस्वामी तुलसीदासजी ने सत्संग और भक्ति को अपनाने पर जोर दिया है। प्राकृतिक पर्यावरण की विशुद्धि के प्रति भी महाकवि तुलसीदासजी पूर्णतः सजग हैं। वे प्रायः सभी सरिताओं के पावन नीर की बात करते हैं। मानस के उत्तरकाण्ड में सरिताओं के अमल रूप का उल्लेख आह्लादकारी है, यथा–

सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी।। (7/23/8)

प्रकृति के प्रत्येक अंग के प्रति प्रेम–प्रदर्शन इस सुकृति का प्रण है। प्रकृति के संरक्षण को गोस्वामीजी ने प्रेरक रूप से संजोया है। अयोध्या में घर–घर में सुमनवाटिकाओं के प्रफुल्लन को दर्शाया है, यथा–

सुमन बाटिका सबहिं लगाईं। बिबिध भाँति करि जतन बनाईं।।
लता ललित बहु जाति सुहाईं। फूलहिं सदा बसंत कि नाईं।। (7/28/1–2)

वायु भी प्रदूषण रहित एवं शीतलमंद सुरभियुक्त निर्दिष्ट है, यथा–

मारुत त्रिबिधि सदा बह सुंदर। (7/28/3)

श्रीरामचरितमानस में वर्णित प्रायः सभी राज्यों में लहलहाते हुए बाग–बगीचे एवं मनोहारी उद्यान हैं, यथा–

राजा जनक की सुमनोहारी प्रफुल्लित प्रसूनों से भव्य–जनक वाटिका, राजा सुग्रीव की राजधानी किष्किंधा का 'मधुवन उद्यान', राजा रावण की 'अशोक वाटिका' एवं अयोध्या की 'सुमन वाटिकायें' पावन पर्यावरण की अमूल्य धरोहर के रूप में निर्दिष्ट हैं। श्रीरामचरितमानस में राजा राम की अयोध्या का एक वैशिष्ट्य यह भी कथ्य है कि इस पावनपुरी में किन्चित् मात्र भी प्रदूषण फैलाने की अनुमति नहीं थी। पनघट परम मनोहर थे। कोई भी व्यक्ति कुओं के आसपास स्नान नहीं कर सकता था। राजघाट सब प्रकार से निर्मल और सुन्दर तथा सुरम्य थे। घाटों पर तुलसी की पौध परम सुहावनी प्रतीत होती थी।, यथोल्लेख है कि –

उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर।
बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर।। (7/28)

पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना।।
राजघाट सब बिधि सुंदर बर। मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर।।
तीर तीर देवन्ह के मंदिर। चहुँ दिसि तिन्ह के उपबन सुंदर।।
तीर तीर तुलसिका सुहाई। बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई।। (7/29/2–4,6)

श्रीरामचरितमानस के अनुसार राजा राम के राज्य में सर्वहितैषी संविधान की निर्मिति थी एवं तदनुसार निष्ठापूर्वक उसकी परिपालना भी थी। अतएव वहाँ भय, शोक और रोग को कोई स्थान ही नहीं था, यथोल्लिखित है कि –

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग।। (7/20)

निज निज धर्म अर्थात् संविधानानुसार स्वकर्तव्यों में संलग्नता से ही रामराज्य आज भी अपने आदर्शों से जीवन्त है एवं उसका विधान वर्तमान में भी जीवन्तरूप से अपनी नैतिक शक्ति से लोककल्याणकारी माना जाता है। रामराज्य के आदर्शों की अवधारणा सृष्टि पर्यन्त जीवन्त रहेगी। श्रीराम का राष्ट्रोन्नयन का संविधान एवं उसका अनुकरण सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय तथा वर्तमान में पूर्ण प्रासंगिक है, जिसकी श्रेष्ठता और सार्थकता प्रस्तुत पंक्तियों में स्पष्ट है, यथा–

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु।
सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु।। (1/5)

निष्कर्षतः श्रीरामचरितमानस में सद्गुणोपेत एवं सुनीतियों से सम्पन्न लोकहितैषी संविधान सन्निहित है। **भलेपन की सीख देने वाला एवं मानव को सही बनाने वाला यह संविधान परम श्रेष्ठ है। विश्व–बन्धुत्व की परिपक्वता और विश्व प्राणि–कल्याण हेतु इसकी परिपालना अपरिहार्य है।**

किसी ने मटके से पूछा तुम इतने ठण्डे कैसे रहते हो? मटके ने मुस्करा कर जवाब दिया, जिसका भूत, भविष्य और वर्तमान सब मिट्टी से बना हो, उसे घमण्ड और गर्मी किस बात की।

रघुपति भगति सुमंगल मूला

श्री सचिन शर्मा, नोएडा, फोनः 9310555665

रघुपति भगति सुमंगल मूला। (2/243/7)

अर्थात् रघुकुल के स्वामी भगवान श्रीराम की भक्ति सुंदर मंगलों की मूल है अर्थात् मंगलों की जननी है।

सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कि भक्ति किसे कहते हैं? ईश्वर के प्रति जो अनन्य प्रेम है, उसे भक्ति कहते हैं। भगवान से बिछोह होने पर परम व्याकुल होना ही भक्ति है। उदाहरण स्वरूप गोपियाँ भगवान श्रीकृष्ण से अनन्य प्रेम करती थीं। 'गोपी' शब्द दो वर्णों से मिलकर बना है – 'गो' और 'पी'। 'गो' का अर्थ है – इन्द्रियाँ और 'पी' का अर्थ है – पीना, अतः 'गोपी' शब्द का अर्थ हुआ – इन्द्रियों से कृष्ण–रस पीना। अपनी इन्द्रियों से कृष्ण–रस का पान करने के कारण ही उनको गोपी कहते हैं।

गोपियाँ (व्रजबालायें यानी व्रज की स्त्रियाँ) हर समय मन से भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करतीं, कानों से बाल कृष्ण की लीलायें (कथा) सुनतीं, वाणी से कृष्ण का गुण–गान करतीं और आँखों से कृष्ण का दर्शन करतीं। उनकी आँखें कृष्ण–दर्शन को सदैव लालायित रहतीं, इसलिए जब कृष्ण छोटे थे, नन्द–भवन से बाहर नहीं निकलते थे, तब गोपियाँ कृष्ण–दर्शन के लिए किसी न किसी बहाने नन्द–भवन पहुँच जातीं और यशोदा के लाला के दर्शन कर आनन्द–विभोर हो जातीं।

जब श्रीकृष्ण बड़े होने पर बालकों के साथ गोकुल की गलियों में खेलने लगे, तब गोपियाँ कृष्ण का छक कर दर्शन करतीं, फिर भी उनकी आँखें तृप्त नहीं होती थीं। अपनी नेत्र–पिपासा को शांत करने के लिए अर्थात् श्रीकृष्ण के दर्शन करने के लिए वे मन ही मन यह चाहतीं कि कृष्ण हमारे घर आएँ, चुराकर हमारा माखन खाएँ और हम छिप कर उनका भरपूर दर्शन करें। वे नित्य बड़े प्रेम से माखन निकालकर श्रीकृष्ण के लिए रख देतीं और उस चितचोर के आने की प्रतीक्षा करतीं।

अनन्य भक्ता गोपियों की इस मनोकामना को पूर्ण करने के लिए ही श्रीकृष्ण गोपियों के घर जाकर माखन चुराकर खाते थे, वरना तो उनके घर में माखन की कमी थोड़े ही थी, क्योंकि नन्द बाबा के यहाँ 9 लाख गायें थीं। भक्त और भगवान का संबंध भी बड़ा विचित्र है। विद्वानों से सुना है कि तीनों लोकों को अपने अधीन रखने वाले भगवान स्वयं भक्त के अधीन होते हैं। तभी तो गोपियाँ श्रीकृष्ण को चुल्लू भर छाछ का लोभ देकर नचातीं और प्रेम पिपासे भक्तवत्सल भगवान श्रीकृष्ण गोपियों के इशारे पर नाचते। इसी भाव को कृष्णभक्त रसखान कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भर छाछ पै नाच नचावत।

गोपियाँ भगवान कृष्ण को अपना प्रियतम मानती थीं और उन्हें अपना सर्वस्व अर्पण कर चुकी थीं, इसलिए उनकी लालसा थी कि उनके प्रियतम श्रीकृष्ण उनका अंग–संग करें और अपनी माधुरी सुधा पिलाकर उन्हें तृप्त करें। अपनी परम भक्त गोपियों की इसी चिर लालसा को पूर्ण करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ रास–लीला की थी। रास–लीला भक्त–भगवान का मिलन था, जीव–ईश्वर का मिलन था, आत्मा–परमात्मा का मिलन था, इसलिए रास–लीला परम पावन और अलौकिक थी। जब श्रीकृष्ण वृन्दावन से मथुरा चले गए, तब गोपियाँ श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल रहतीं और रोती रहतीं–यह है प्रेमस्वरूपा भक्ति की पराकाष्ठा।

अब प्रश्न यह उठता है कि भक्ति कितने प्रकार की होती है?

भक्ति नौ प्रकार की होती है। भक्ति के नौ भेद होने के कारण ही नवधा भक्ति कहते हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार भक्ति के नौ भेद इस प्रकार हैं –

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।

(श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।)

श्रवण भक्ति करने वालों में श्रीरामभक्त हनुमान अग्रगण्य हैं। जहाँ–जहाँ रामकथा होती है, वहाँ–वहाँ हनुमानजी उपस्थित रहते हैं। **कीर्तन** रूपा भक्ति ब्रह्मर्षि वाल्मीकि में थी। वे राम नाम जप **(कीर्तन)** के प्रभाव से ही ब्रह्मर्षि बने थे और भगवान राम के पावन चरित्रों को रामायण महाकाव्य में लिखकर उन्होंने आदि कवि की उपाधि प्राप्त की। **स्मरण**

भक्ति भगवती सीता में थी। रावण द्वारा अपहृत होने पर सीता सदैव श्रीराम का ही स्मरण करती थीं। **पादसेवन** भक्ति रामभक्त भरत में थी। पादसेवन भक्ति (श्रीराम की चरण–पादुकाओं का पूजन करने) से भरत ने कैवल्य पद प्राप्त किया। **अर्चन** भक्ति माता शबरी में थी। अर्चन भक्ति से ही शबरी भगवान राम की कृपा पात्र बनीं और भगवान राम के दर्शन कर प्रभु के धाम गयीं। **वन्दन** भक्ति विभीषण में थी। **दास्य** भक्ति विशेष कर लक्ष्मण में थी। **सख्य** भक्ति सुग्रीव में थी। सख्य भक्ति से ही वानरराज सुग्रीव भगवान राम के कृपापात्र बने। **आत्मनिवेदन** भक्ति जटायु में थी। दुष्ट रावण के चंगुल से भगवती सीता को मुक्त कराने के लिए त्रिलोकविजयी रावण से युद्ध किया और युद्ध में अपने प्राणों की आहुति दी थी, इससे भगवान राम की कृपा से उत्तम गति प्राप्त की।

श्रीरामचरितमानस के अनुसार भी भक्ति के नौ भेद हैं। भगवान श्रीराम ने अपनी अनन्य भक्ता शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया । श्रीराम के कथनानुसार नवधा भक्ति के नाम इस प्रकार हैं :–

सत्संग, कथा–श्रवण, गुरु–सेवा, ईश्वर का गुण–गान, मंत्र–जाप, धर्माचरण, संत–सम्मान, संतोष और कपट रहित व्यवहार।

श्रीराम आगे कहते हैं कि जिस प्राणी में इन नौ प्रकार की भक्ति में से एक भी भक्ति होती है, वह मुझे अत्यंत प्रिय है –

नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें।। (3/36/6–7)

समस्त सुखों की खान भक्ति स्वतंत्र है –

भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी। (7/45/5)

भक्ति को दूसरे के सहारे की जरूरत नहीं है। ज्ञान–वैराग्य तो भक्ति के अधीन हैं, क्योंकि ज्ञान–वैराग्य तो भक्ति के बालक हैं। इसका प्रमाण श्रीमद्भागवत के माहात्म्य में मिलता है। प्रसंग इस प्रकार है –

व्रज क्षेत्र प्रेम (भक्ति) का क्षेत्र है। कलियुग में कलियुग के प्रभाव से भक्ति, ज्ञान और वैराग्य बूढ़े और निस्तेज हो गए। जब वे तीनों देशाटन करते हुए भक्तिक्षेत्र वृन्दावन में आए तो भक्ति–भूमि के प्रभाव से भक्ति जवान हो गयी, किंतु भक्ति के पुत्र ज्ञान–वैराग्य

वृद्ध और अचेत ही रहे। अपने पुत्रों की यह दुर्दशा देखकर भक्ति बहुत दुखी थी। उधर से भक्त प्रवर देवर्षि नारद गुजर रहे थे कि युवती को दुखी देखकर उन करुणालु का हृदय करुणा से पिघल गया। उन्होंने उस स्त्री के पास जाकर पूछा– आप कौन हैं और आपके दुख का क्या कारण है? ये दोनों वृद्ध कौन हैं?

देवर्षि के प्रश्नों का उत्तर देती युवती बोली – मैं भक्ति हूँ और ये ज्ञान–वैराग्य मेरे पुत्र हैं। समय के फेर (कलियुग के प्रभाव) से ये जर्जर हो गए हैं। इस कारण मैं दुखी हूँ–

अहं भक्तिरिति ख्याता इमौ मे तनयौ मतौ।
ज्ञानवैराग्य नामानौ कालयोगेन जर्जरौ।। (श्रीमद्भागवत माहात्म्य–45)

भक्ति–भूमि वृन्दावन के प्रभाव से बूढ़ी भक्ति जवान हो गयी, यह सुनकर देवर्षि नारद कहने लगे, वृन्दावन धाम धन्य है। यहाँ भक्ति सर्वत्र नृत्य करती है, किंतु ज्ञान–वैराग्य का यहाँ कोई ग्राहक नहीं है –

धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च। (श्रीमद्भागवत)

नारद आगे बोले–सत्ययुग, त्रेतायुग और द्वापरयुग में ज्ञान और वैराग्य मुक्ति के साधन थे, किंतु कलियुग में तो केवल भक्ति ही मोक्ष को प्राप्ति कराने वाली है –

सत्यादित्रियुगे बोधवैराग्यौ मुक्तिसाधकौ।
कलौ तु केवला भक्तिब्रह्मसायुज्यकारिणी।। (श्रीमद्भागवत)

हे भक्ति देवि! इस कलियुग में सदाचार, योग और तप आदि सभी लुप्त हो गए। जहाँ देखो सत्पुरुष दुखी हैं और दुष्ट सुखी हैं। इस समय जिस बुद्धिमान पुरुष का धैर्य बना रहे, वही ज्ञानी या पंडित है। देवर्षि नारद के इस कथन का तात्पर्य यह है कि कलियुग में ज्ञान–वैराग्य की अपेक्षा भक्ति की महिमा अधिक है, तभी तो कहा है कि बिना भक्ति के ज्ञान की शोभा नहीं होती–**न शोभते ज्ञानमलं निरंजनम्**। अर्थात् भक्ति से ही ज्ञान की शोभा होती है। यही बात भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त संतशिरोमणि तुलसीदास भी कहते हैं–

सोह न राम पेम बिनु ग्यानू। करनधार बिनु जिमि जलजानू। (2/277/5)

भक्तिस्वरूपा भगवती सीता के साथ रहने से ही अयोध्या से निष्कासित ज्ञानस्वरूप भगवान राम अपने वनवास के दिनों में कंटकाकीर्ण वन में छोटी सी पर्णकुटी में सानंद रह रहे थे, परन्तु भक्तिस्वरूपा सीता के अपहरण होने पर तो ज्ञानस्वरूप राम पर दुःखों का पहाड़ ही टूट पड़ा था, वे अपना मानसिक संतुलन तक खो बैठे थे। पागल से हो गए थे, तभी तो पत्नी के विरह में पागल की भाँति रोते हुए पशु, पक्षी और कीटों तक से सीता का पता पूछते एक वर्ष तक वन–वन भटके थे।

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी। तुम्ह देखी सीता मृगनैनी।। (3/30/9)

भक्तिमयी सीता की खोज में और उन्हें पाने के लिए ज्ञानमय राम को कितने पापड़ बेलने पड़े थे। यह बात किसी से छिपी हुयी नहीं है, सभी भली–भाँति जानते हैं, इसलिए विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है।

वन में वनचर वानरों की सेना एकत्र कर, अपार दुस्तर समुद्र पर पुल बनवा कर, दुर्भेद्य लंका पर चढ़ाई कर, शत्रु के घर में घुस कर उसकी ईंट से ईंट बजाकर महासमर में त्रिलोकविजयी रावण का सकुल–संहार किया था, तब कहीं जाकर भक्तिमयी सीता को प्राप्त किया था।

श्रीराम ज्ञानस्वरूप और ज्ञानी थे, अतः दूरदर्शी थे। अपहृता भक्तिस्वरूपा सीता दुष्ट रावण के यहाँ पूरे एक वर्ष रही थीं। अन्तर्यामी ज्ञान ज्ञेय राम इस बात को भली–भाँति जानते थे कि सीता निर्दोष, निष्पाप और पावन गंगाजल की भाँति पवित्र हैं, परन्तु उन्हें समाज पर विश्वास नहीं था। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होने के कारण किसी व्यक्ति का मुँह बंद नहीं किया जा सकता। भविष्य में पावनमयी सीता के उज्ज्वल चरित्र पर कभी कोई व्यक्ति उँगली न उठाए, यही सोचकर दूरदर्शी राम ने सीता की अग्नि–परीक्षा ली थी और विशाल जन–समुदाय के बीच उनकी निष्कलंकता सिद्ध की थी।

मानव–समाज भी बड़ा विचित्र है। जितनी खोपड़ी, उतने मत–**मुंडे मुंडे मतिर्भिन्नः**। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ लेकर समाज निष्पाप निष्कलंक सीता के उज्ज्वल चरित्र पर कलंक लगाने से नहीं चूका। समाज के भय से भयभीत होकर ही प्रजावत्सल, प्रजामनोरंजन न्यायी राजा राम को न चाहते हुए भी निष्पाप निष्कलंक गंगाजल सी पवित्र पत्नी सीता का परित्याग करना पड़ा था। भक्तिस्वरूपा सीता के दूर चले जाने पर तो ज्ञानमय राजा राम का राजसी सुख–वैभव भक्ति के साथ ही चला गया। परिणामस्वरूप

बिना भक्ति के ज्ञान को पुनः आजीवन विरह–विष पीना पड़ा अर्थात् बिना भक्ति के ज्ञान पुनः दुखी हो गया और सभी सुख–सुविधायें होते हुए भी अपने नृप–जीवन के 11000 वर्ष विरह–विष पीते ही बिताये। **यह है बिना भक्ति के ज्ञान की दुर्दशा का आलम।**

तभी तो भुक्तभोगी ज्ञानमय राम ने अपने कृष्णावतार में अपने परममित्र परम ज्ञानी उद्धव को भक्ति की महिमा का बोध कराने के लिए भक्तिमयी गोपियों की पाठशाला वृन्दावन में भेजा था। वहाँ गोपियों के प्रेम–प्रवाह में ज्ञानी उद्धव का ज्ञानाहंकार बह गया और फिर गोपियों की कृष्ण–भक्ति का ऐसा गहरा रंग चढ़ा कि फिर वह आजीवन नहीं उतरा। कहने का तात्पर्य यह है कि भक्ति के आने पर ज्ञान की शोभा में चार चाँद लग गए।

जिनके हृदय में भक्ति निवास करती है, वे शुद्धान्तःकरण पुरुष स्वप्न में भी यमराज को नहीं देखते। जिनके हृदय में निरन्तर प्रेमस्वरूपा भक्ति का वास होता है, उन भक्तों का प्रेत, पिशाच, राक्षस और दैत्य तक स्पर्श करने में भी समर्थ नहीं होते –

येषा चित्ते वसेद्भक्तिः सर्वदा प्रेमरूपिणी।
न ते पश्यन्ति कीनाशं स्वप्नेऽप्यमलमूर्तयः।।
न प्रेतो न पिशाचो वा राक्षसो वासुरोऽपि वा।
भक्तियुक्तमनस्कानां स्पर्शने न प्रभुभवेत्।। (श्रीमद्भागवत माहात्म्य 16–17)

भगवान केवल भक्ति से ही वशीभूत होते हैं, **'हरिर्हि साध्यते भक्तया'**। कलियुग में केवल भक्ति ही सार है। भक्ति से तो साक्षात् भगवान सामने उपस्थित हो जाते हैं –

कलौ भक्तिः कलौ भक्तिर्भक्तया कृष्ण पुरः स्थितः।

भक्ति की महिमा अपार है। जिसके कुल में एक भक्त पुत्र उत्पन्न हो जाए तो उस भक्त पुत्र की भक्ति के प्रभाव से उस कुल की सात पीढ़ियाँ पहले की और सात पीढ़ियाँ बाद की भवसागर से सहज ही तर जाती हैं यानी उस कुल की चौदह पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है।

भगवान की भक्ति की अपार महिमा के कारण ही भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त संतशिरोमणि लोकनायक कवि संत तुलसीदासजी अपने महाकाव्य श्रीरामचरितमानस में लिखते हैं कि **भगवान श्रीराम की भक्ति संपूर्ण कल्याणों की मूल है –**

रघुपति भगति सुमंगल मूला। (2/243/7)

जिया कब तक उलझेगा

रचयिता –कवि राजमलजी

प्रस्तुतिः कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में।
कितने भव बीत चुके, संकल्प विकल्पों में।।

उड़ उड़ कर यह चेतन, गति गति में जाता है।
रागों में लिप्त सदा, भव भव दुख पाता है।।
क्षणभर को भी न कभी, निज आतम ध्याता है।
निज तो न सुहाता है, पर ही मन भाता है।।

यह जीवन बीत रहा है, झूठे संकल्पों में।
जिया कब तक उलझेगा, संकल्प विकल्पों में।। 1।।

निज आत्मस्वरूप लखो, तत्त्वों का कर निर्णय।
मिथ्यात्व छूट जावे, समकित प्रकटे सुखमय।।
निज परिणति रमण करे, हो निश्चय रत्नत्रय।
निर्वाण मिले निश्चय, छूटे भव दुख भयमय।।

सुख ज्ञान अनन्त मिले, चिन्मय की गल्पों में।
जिया कब तक उलझेगा, संकल्प विकल्पों में।। 2।।

शुभ अशुभ विभाव तजो, है हेय अरे आस्रव।
संवर का साधन ले, चेतन का कर अनुभव।।
शुद्धातम का चिंतन, आनंद अतुल अभिनव।
कर्मों की पग ध्वनि का, मिट जावेगा कलरव।।

तू सिद्ध स्वयं होगा, पुरुषार्थ स्वकल्पों में।
जिया कब तक उलझेगा, संकल्प विकल्पों में।। 3।।

नर रे नर रे नर रे, तू चेत अरे नर रे।
क्यों मूढ़ विमूढ़ बना, कैसा पागल खर रे।।
अन्तर्मुख हो जा तू, निज में निज रस भर दे।
पर अवलंबन तज रे, निज का आश्रय कर ले।।
पर परिणति विमुख हुआ, तो सुख पल अल्पों में।
जिया कब तक उलझेगा, संकल्प विकल्पों में।। 4।।
तू कौन कहाँ का है, अरु क्या है नाम अरे।
आया है किस घर से, जाना किस गाँव अरे।।
सोचा न कभी तूने, दो क्षण की छांव अरे।
यह तन तो पुद्गल है, दो दिन की ठांव अरे।।
तू चेतन द्रव्य सबल, ले सुख अविकल्पों में।
जिया कब तक उलझेगा, संकल्प विकल्पों में।। 5।।
यदि अवसर चूका तो, भव–भव पछताएगा।
फिर काल अनन्त अरे, दुख का घन छाएगा।।
यह नरभव कठिन महा, किस गति में जाएगा।
नरभव भी पाया तो, जनश्रुत नहिं पाएगा।।
अनगिनत जन्मों में, अनगिनत कल्पों में।
जिया कब तक उलझेगा, संकल्प विकल्पों में।। 6।।

निर्बल कोउ न सहाय

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा। उपजा उर अति छोभ बिसेषा।।
सुरपति निज रथ तुरत पठावा। हरष सहित मातलि लै आवा।। (6/89/1–2)

यदि इसे सीधे और सरल भाव से लें तो लगता है कि देवताओं में बहुत दया है, वे बहुत दयालु हैं, इसलिए उन्होंने ज्यों ही रामजी को युद्धभूमि में पैदल देखा कि देवराज इन्द्र ने तुरंत अपना रथ भेज दिया, किन्तु बात कुछ और है जो हमें सीखने को मिलती है, वह यह कि ऐसे लोग हमारी मदद करने को कब तत्पर

शेष पृष्ठ 131 पर

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा

पं. दिनेश चंद्र शर्मा, नोएडा, फोनः 9811056467

अनेक विचारकों के मत में निर्गुण ब्रह्म का ही महत्व है, सगुण का नहीं। वे निर्गुण ब्रह्म की उपासना का उपदेश करते हैं, किंतु निर्गुण ब्रह्म की उपासना सामान्य मनुष्यों के वश की बात नहीं। वे उसके रहस्य को भी नहीं समझ सकते, तब उपासना कैसे करेंगे। ब्रह्म जब सृष्टि की इच्छा करता है, तब स्फुरण को प्राप्त होता है। वह स्फुरण ही उसके जगतरूप होने का एक कारण है। संसार में जब तमोगुण की वृद्धि होती है, तब अत्याचारियों की उत्पत्ति होती है और वे विभिन्न प्रकार के अत्याचार करने लगते हैं। अत्याचारों से धरती काँप उठती है और तब परमात्मा को भक्तों के निश्चल प्रेम के कारण विवश होकर अवतार लेना पड़ता है। रामावतार का भी यही कारण था। राक्षसराज रावण और उसके अनुयायियों के अत्याचारों से जन–जन का अन्तस्थल त्राहि–त्राहि कर उठा और पृथ्वी कराह उठी थी। तब भगवान राघवेन्द्र श्रीराम को अवतार लेना पड़ा। इस प्रकार निर्गुण ब्रह्म का यह सगुण रूप हुआ।

गोस्वामी तुलसीदासजी निर्गुण और सगुण का अभेद प्रतिपादन करते हुए कहते हैं–

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा।। (1/23/1)

निर्गुण और सगुण दोनों एक ही ब्रह्म के दो स्वरूप हैं। इनका अभेद प्रतिपादन करते हुए अन्यत्र भी वे पुनः कहते हैं –

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।। (1/116/1)

इस प्रकार वह परमात्मा निर्गुण, सगुण, निराकार, साकार, सामान्य, विशेष, पूर्व, अपूर्व सभी कुछ है। उसके विषय में बड़े–बड़े सन्त–महात्मा, ऋषि–महर्षि, योगी–यति बहुत कुछ वर्णन कर चुके हैं, किंतु उन्होंने जितना भी वर्णन किया है, वह परमपिता परमात्मा की अनंत महिमा से बहुत कम एवं अपर्याप्त है, क्योंकि उन्होंने अपने–अपने अनुभव के आधार पर ही तो वर्णन किया है। फिर अनुभव किसी का भी पूर्ण नहीं कहा जा सकता। जब मनुष्य पूर्ण है ही नहीं, तब उसका अनुभव ही कैसे पूर्ण हो सकता है? क्या वाणी अनंत

परमात्मा का वर्णन करने में समर्थ हो सकती है? परमात्मा ही एक ऐसा तत्व है, जिसमें अनन्त गुणों का समावेश है। तब भी वह किसी गुण से उसी प्रकार लिप्त नहीं होता, जैसे जल में तैरता कमल जल से लिप्त नहीं होता। वस्तुतः ब्रह्म के स्वरूप का निर्धारण साधक की बुद्धि और विवेक पर निर्भर है। जो साधक ज्ञान प्रधान है, उसे ब्रह्म का स्वरूप निर्गुण ही प्रतीत होता है, क्योंकि ज्ञान में जो ब्रह्म जिज्ञासा होती है, वह विभिन्न तर्कों, अध्ययनों आदि के आधार पर स्वरूप निरूपण में सफल होती है।

भाव प्रधान साधकों, भक्तों या भक्ति योग के अनुयायियों को ब्रह्म का सगुण रूप ही दिखाई देता है। वस्तुतः भक्त को न तो किसी प्रकार की जिज्ञासा रहती है, न वह तर्क आदि पर ही विश्वास करता है और अध्ययन का तो उसे अवकाश ही कहाँ? वह तो भगवान की मूर्ति का ही अध्ययन करता रहता है। उसकी जिह्वा पर राम नाम और हृदय में राम–भक्ति रहती है। इस प्रकार उन्हें निराकार से कोई मतलब नहीं, वे तो साकार के ही उपासक हैं। विचार करके देखें तो वह एक ही निराकार ब्रह्म अनेक रूप रखने की सामर्थ्य वाला होने के कारण सहज ही साकार हो सकता है। जैसे निर्गुण ब्रह्म के अंश से प्रकृति प्रकट होती है और उस प्रकृति में अनन्त संसार समाविष्ट रहता है, वैसे ही माता कौसल्या के अंक में उनके पुत्र रूप से विद्यमान श्रीराम और उनके मुख में अनन्त सृष्टि विद्यमान रहती है।

श्रीरामचरितमानस उक्त तथ्य का स्पष्ट प्रमाण भी प्रस्तुत करता है। श्रीरामजी के शिशु रूप के उपासक परम भक्त काकभुशुण्डिजी जब खेल–खेल में उनके मुख में पहुँच गए, तब उनके पेट में असंख्य ब्रह्माण्डों में भ्रमण करने लगे। वहाँ उन्होंने अनेक लोक, देश, अवध और उसमें विद्यमान राजभवन भी देखकर अपने नयन तृप्त किए। इस प्रकार भगवान के उदर में संपूर्ण ब्रह्माण्ड को देखकर उनके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। काकभुशुण्डिजी को इस प्रकार के व्यामोह में पड़े देखकर भगवान हँसने लगे। फिर क्या था? उन्हें मुख मार्ग से ही बाहर आने को विवश होना पड़ा। उन्होंने बाहर आकर भगवान को प्रणाम किया। भगवान श्रीरामजी ने उन्हें अपनी श्रेष्ठ अविरल भक्ति प्रदान की। मानस में काकभुशुण्डिजी गरुड़जी से कहते हैं –

जथा अनेक बेष धरि नृत्य करइ नट कोइ।
सोइ साइ भाव देखावइ आपुन होइ न सोइ।। (7/72ख)
असि रघुपति लीला उरगारी। दनुज बिमोहनि जन सुखकारी।।
जे मति मलिन बिषय बस कामी। प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी।। (7/73/1–2)

अर्थात् जैसे कोई नट अनेक वेश बनाकर नाचता है और उस–उस वेश के अनुरूप भाव–प्रदर्शन करता है, किंतु वह स्वयं उनमें से कोई भी नहीं हो जाता, वैसे ही रघुनाथजी की इस लीला को समझिए, जो राक्षसों को विशेष रूप से मोहित करती है और भक्तों को सुख देती है। हे गरुड़! जो मनुष्य मलिन बुद्धि, विषयी एवं कामी हैं, वे ही प्रभु पर इस प्रकार के मोह होने का आरोप लगाते हैं, किंतु परमात्मा में भक्ति भाव रखने पर पापी से पापी व्यक्ति भी सुखी हो जाता है। ऐसे व्यक्ति में निर्गुण के रहस्य को समझने की तो बुद्धि होती नहीं और सगुण उनके विचार से है नहीं, तब किसकी भक्ति करे वह? भगवान तो सभी के लिए समान हैं। वे अपने भक्त को आनंद देते हैं, तो अपने से विमुख, ईर्ष्यालु एवं पापियों का भी उद्धार करना चाहते हैं। यही कारण है कि वे अपने भक्तों के आनंद के लिए ही नहीं, अपने विरोधियों को भी सुखी बनाने के लिए भी संसार में आते हैं। यही उनके अवतार लेने का उद्देश्य और यही उनके निर्गुण से सगुण होने का रहस्य है।

शुष्क काष्ठ को लीजिए – उसमें अग्नि की विद्यमानता रहती है। यदि दो काष्ठों को लेकर परस्पर में रगड़ा जाए तो अग्नि प्रकट हो जाती है। इससे सिद्ध होता है कि काष्ठ में अग्नि की स्थिति निराकार रूप से है, यदि न होती तो रगड़ने पर वह कहाँ से उत्पन्न हो जाती? रगड़ से अग्नि का उत्पन्न हो जाना ही उसका निराकार से साकार हो जाना है। इसी प्रकार निर्गुण–निराकार ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है। वह प्रेम से प्रकट हो जाता है। परमात्मा के रूपों की विभिन्नता के कारण पर विचार करें तो स्पष्ट होगा कि उपासकों के दृष्टिकोण की विभिन्नता ही इसका प्रमुख कारण हो सकता है। जिसकी जैसी विचारधारा होती है, वह भगवान का वैसा ही रूप देखता है –

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ।
सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ।। (7/73ख)

अर्थात् परमात्मा का निर्गुण रूप तो (उसका कोई आकार नहीं, ऐसा कहने से) सहज ही समझ में आ जाता है, किंतु सगुण रूप को कोई नहीं जानता (क्योंकि सगुण रूप एक नहीं, अनेक हैं)। इसलिए उन सगुण भगवान के अनेक प्रकार के सुगम और अगम चरित्रों को सुनकर मुनियों के मन भी भ्रमित हो जाते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि जीव का कल्याण कैसे हो?

इस प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर यह है कि भक्ति भाव से सत्संग करने और रामकथा सुनने या पढ़ने से भ्रम दूर हो जाता है। भ्रम दूर होने पर भगवान राम के चरणों में प्रेम हो जाता है। यही जीव के कल्याण का सहज सुलभ उपाय है।

भक्ति कब प्राप्त होती है

अयोध्याजी में एक उच्च कोटि के संत रहते थे। उन्हें रामायण श्रवण करने का **व्यसन** था। जहाँ भी कथा होती वहाँ बड़े प्रेम से कथा सुनते, कभी किसी प्रेमी अथवा संत से कथा कहने की विनती करते। एक दिन राम कथा सुनाने वाला कोई मिला नहीं। वहीं पास से एक पंडितजी रामायण की पोथी लेकर जा रहे थे। पंडितजी ने संत को प्रणाम किया और पूछा कि महाराज! क्या सेवा करें? संत ने कहा, पंडितजी रामायण की कथा सुना दो, परंतु हमारे पास दक्षिणा देने के लिए रुपए नहीं हैं, हम तो फक्कड़ साधु हैं। माला, लंगोटी और कमंडल के अलावा कुछ है नहीं और कथा भी एकांत में सुनने का मन है हमारा।

पंडितजी ने कहा, ठीक है महाराज, संत और कथा सुनाने वाले पंडितजी दोनों सरयू के किनारे कुंज में जा बैठे। पंडितजी और संत रोज सही समय पर आकर वहाँ विराजते और कथा चलती रहती। संत बड़े प्रेम से कथा श्रवण करते थे और भाव विभोर होकर कभी नृत्य करने लगते तो कभी रोने लगते। जब कथा समाप्त हुई तब संत ने पंडितजी से कहा, पंडितजी, आपने बहुत अच्छी कथा सुनायी। हम बहुत प्रसन्न हैं, हमारे पास दक्षिणा देने के लिए रुपया तो नहीं है, परंतु आज आपको जो चाहिए वह आप मांगो।

शेष पृष्ठ 108 पर

सुन्दरकाण्ड की महिमा

श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद, वाराणसी, फोनः 9839413700

मेरे मन में एक जिज्ञासा थी कि श्रीरामचरितमानस के पंचम सोपान का नाम सुन्दरकाण्ड क्यों रखा गया। आदिकवि ब्रह्मर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत भाषा में रचित 'रामायण' में भी यही नाम है। अन्य काण्डों का नाम तो उनमें वर्णित कथा के आधार पर है, जैसे भगवान श्रीरामजी की बाल–लीलाओं का वर्णन होने से प्रथम सोपान का नाम बालकाण्ड है, अयोध्या की घटनाओं का वर्णन होने के कारण दूसरे सोपान का नाम अयोध्याकाण्ड है, इत्यादि। कई विद्वानों से इस संदर्भ में चर्चा हुई। एक विद्वान ने बताया कि **'सुन्दरे सुन्दरी गाथा'**, अर्थात् सुन्दरकाण्ड में 'सुन्दरी' अर्थात् भक्तिस्वरूपा सीताजी की कथा प्रमुख रूप से वर्णित है, इसीलिए श्रीरामचरितमानस के पंचम सोपान का नाम सुन्दरकाण्ड रखा गया है। सीताजी की सुन्दरता का वर्णन अकथनीय है और भक्तिस्वरूपा सीता का प्रमाण हमें अयोध्याकाण्ड में इस प्रकार से मिलता है –

लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु।
ग्यान सभाँ जनु तनु धरें भगति सच्चिदानंदु।। (2/239)

सुन्दरकाण्ड के संदर्भ में एक और विशेषता यह है कि इसमें भक्तिस्वरूपा सीताजी की कथा के साथ–साथ हनुमानजी की विशेष कथा है। किष्किन्धा में श्रीरामजी से मिलन के पश्चात् सम्पूर्ण 'मानस' में किसी न किसी रूप में हनुमानजी की कथा मिलती है, पर सुन्दरकाण्ड में तो सीतान्वेषण की विशेष कथा है। हनुमानजी रुद्रावतार हैं और गोस्वामी तुलसीदासजी पर श्रीरामचरितमानस की रचना में शिवजी (रुद्र) की विशेष कृपा रही है। इसका स्पष्ट उल्लेख है, यथा –

भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती।। (1/15/9)
संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी। रामचरितमानस कबि तुलसी।। (1/36/1)

शिवजी की कृपा के साथ–साथ गोस्वामी तुलसीदासजी को श्रीरामचरितमानस की रचना करने के लिए प्रेरणा अखिल ब्रह्माण्ड नायक सगुण–साकार श्रीरामजी ने ही दी है।

श्रीरामचरितमानस में तुलसीदासजी इसका स्पष्ट उल्लेख इस प्रकार से करते हैं –

जस कछु बुधि बिबेक बल मेरें। तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें।। (1/31/3)

इस परिप्रेक्ष्य में उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार संत जन श्रीमद्भागवत को भगवान श्रीकृष्ण का ग्रन्थावतार मानते हैं, उसी प्रकार से श्रीरामचरितमानस भगवान श्रीराम का ग्रन्थावतार है। इस संदर्भ में श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के वार्षिक अंक 28 (पृष्ठ 93 से 102) तथा अंक 29 (पृष्ठ 50 से 57) में प्रकाशित श्री देवेन्द्र शर्माजी का लेख ''श्रीरामचरितमानस : भगवान श्रीराम का ''ग्रन्थावतार'' पठनीय है।

सुन्दरकाण्ड की संक्षिप्त कथा तथा जैसा विद्वानों से सुना है, विभिन्न प्रसंगों के भाव तथा परमार्थ के साथ–साथ समाज के लिए उसकी उपयोगिता के संदर्भ में इस आलेख में प्रकाश डाला गया है।

(1) सीताजी की खोज के लिए अंगदजी के नेतृत्व में जो वानरदल भेजा गया था, उसमें जामवन्तजी का मार्गदर्शन मिल रहा था। इस दल में हनुमानजी भी थे। साध्वी स्वयंप्रभा के तपोबल से यह वानरदल अपने आपको समुद्र तट पर उपस्थित पाता है। जटायु के भाई संपाती (गीध) के संकेतानुसार सीताजी लंका की अशोक वाटिका में बैठी दिखाई दीं, पर सत योजन सागर लाँघकर जो समुद्र पार जा सकेगा, वही सीताजी का पता लगा सकेगा। सभी ने अपने–अपने बल का बखान किया, पर समुद्र पार जाने में सभी सशंकित थे, तब जामवन्तजी ने हनुमानजी से कहा –

राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा।। (4/30/6)

जामवन्तजी से प्रेरणा प्राप्त तथा उनकी सलाह के अनुसार हनुमानजी चल दिए, यथा–

जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा।। (5/1/1 तथा 4)

यह प्रसंग इस तथ्य की पुष्टि करता है कि किसी भी कार्य के संपादन में 'प्रेरणा' का बहुत महत्व है। यदि हनुमानजी को प्रेरित न किया गया होता तो वे सीतान्वेषण हेतु कैसे तैयार होते, क्योंकि वे तो एक तरफ बैठकर श्रीरामनाम जप में मग्न थे। दूसरा भाव यह है कि हनुमानजी ने सभी को प्रणाम करके प्रस्थान किया, जबकि वानरदल को प्रणाम करना चाहिए था, क्योंकि जिस कार्य को कोई करने को तैयार नहीं था उसे हनुमानजी

करने जा रहे थे। इसका रहस्य यह है कि अभिमान का स्थान मस्तिष्क में होता है और यदि वह किसी के आगे झुक जाए तो वह शान्त हो जाता है। हनुमानजी ने यही सोचकर, अभिमान शून्य हो जाने के उद्देश्य से सभी को प्रणाम किया। तीसरा भाव यह है कि हर्षित होकर और श्रीरामजी को हृदय में धारण करके प्रस्थान किया। भगवान को हृदय में धारण करने से हर्ष तो स्वाभाविक रूप से होगा तथा निश्चित रूप से कार्य पूर्ण होगा।

(2) जब कोई विशेष कार्य के लिए जाता है तो सामान्यतया कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। हनुमानजी के साथ भी यही हुआ। सबसे पहले मैनाक पर्वत आया और उसने कहा कि कुछ विश्राम कर लीजिए मेरे ऊपर, पर हनुमानजी ने स्पष्ट कर दिया कि–

हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।। (5/1)

यह प्रसंग यह संदेश देता है कि जिस कार्य विशेष को सम्पादित करने का लक्ष्य रखा है उसके पूर्ण होने तक कोई प्रमाद (अनावश्यक विश्राम) नहीं करना चाहिए।

(3) आगे बढ़ने पर हनुमानजी को तीन और बाधाओं का सामना करना पड़ा, सुरसा, सागर की निशिचरी और लंकिनी। ये तीनों बाधाएँ क्रमशः सात्विक, राजसी और तामसी प्रकार की बाधाएँ हैं। भक्ति की खोज में इन तीनों प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इन पर विजय प्राप्त किए बिना भक्तिपथ प्रशस्त नहीं होता है।

(4) हनुमानजी अत्यधिक लघुरूप धारण करके लंका में सर्वत्र रातभर अन्वेषण करते रहे, किंतु सीताजी का पता नहीं जान पाए। रात्रि के चतुर्थ पहर में वे एक ऐसे भवन के पास पहुँच गए, जिसके द्वार पर 'राम नाम' लिखा था। वे आश्चर्यचकित हो गए कि लंका में राम उपासक कैसे हो सकता है? वे ऐसा विचार कर ही रहे थे कि –

मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा।।
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा।। (5/6/2–3)

विभीषण से मित्रता हुई और उन्होंने सीताजी से मिलने की युक्ति बताई, उसके अनुसार ही उन्हें सीताजी तक पहुँचने का मार्ग मिला। इस प्रसंग में दो सूत्र मिलते हैं– एक तो यह कि जब कोई व्यक्ति नींद से जागता है तो सर्वप्रथम वह जो कहता है, उससे उसके अंदर का भाव प्रकट होता है। विभीषणजी ने जागकर 'राम–राम' स्मरण किया, इसमें हनुमानजी को उनकी रामभक्ति का परिचय प्राप्त हुआ और दूसरा यह कि यदि भक्ति प्राप्त

करनी हो तो किसी संत का आश्रय लेना आवश्यक है। भक्तिस्वरूपा सीताजी का सही पता और उनसे मिलने की युक्ति एक संत अर्थात् विभीषण ने ही बताई। इस संदर्भ में श्रीराम–लक्ष्मण का पंचवटी का वह संवाद उल्लेखनीय है जब श्रीरामजी ज्ञान–भक्ति–वैराग्य के रहस्य का वर्णन करते हुए कहते हैं –

भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला।। (3/16/4)

(5) हनुमानजी अशोक वाटिका में उसी अशोक वृक्ष के ऊपर जिसके नीचे सीताजी बैठी थीं, छिपकर बैठ जाते हैं। जब वे यह विचार कर ही रहे थे कि अब किस प्रकार से माताजी से परिचय करूँ, उसी समय रावण सीताजी को समझाने–धमकाने आ गया था। रावण के जाने के पश्चात् सीताजी को अकेले में जानकर उन्होंने श्रीरामजी द्वारा प्रदत्त मुद्रिका डाल दी। यहाँ पर यह भी विचारणीय है कि जब वानर दल अंगदजी के नेतृत्व में जाने लगा, तब सबसे पीछे हनुमानजी ने श्रीरामजी को प्रणाम किया और तब –

पाछें पवन तनय सिरु नावा। जानि काज प्रभु निकट बोलाबा।।
परसा सीस सरोरुह पानी। करमुद्रिका दीन्हि जन जानी।।
बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु। कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु।। (4/23/9–11)

इस प्रकार से हनुमानजी के पास मुद्रिका थी पहचान हेतु साक्ष्य के रूप में, किंतु उन्होंने उस समय जब सब वानर समुद्र तट से लंका जाने की बात कर रहे थे, तब भी हनुमानजी ने इस संदर्भ में किसी को कुछ नहीं बताया। इसका आशय है कि जब तक कोई कुछ पूछे नहीं, तब तक हमें ऐसी रहस्यमय बात नहीं बतानी चाहिए। ऐसे समय में मौन रहना ही उचित है।

(6) हनुमानजी ने अशोक वृक्ष के ऊपर से श्रीरामजी द्वारा प्रदत्त मुद्रिका डाल दी, जिसे देखकर सीताजी हर्ष–विषाद सहित आश्चर्यचकित होकर विचार करती हैं –

चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी।।
जीति को सकइ अजय रघुराई। माया तें असि रचि नहिं जाई।।
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना।।
रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा।। (5/13/2–5)

अब हनुमानजी सीता के निकट जाते हैं और तब सीताजी को विश्वास दिलाने हेतु यह कहते हैं –

राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की।।

यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी।। (5/13/9–10)

इस प्रसंग में विचारणीय है कि सीताजी का संदेह दूर करने के लिए हनुमानजी ने तीन तथ्यों का, श्रीरामजी की आज्ञानुसार (इच्छानुसार) उपयोग किया, क्योंकि सीताजी तो बंदर के चित्र को ही देखकर डर जाती थीं, ऐसा उनकी सासजी का विचार था। वन जाते समय कौसल्याजी ने श्रीरामजी को बताया था –

सिय बन बसिहि तात केहि भाँती। चित्रलिखित कपि देखि डेराती।। (2/60/4)

जिन तीन तथ्यों (साक्ष्य) का उपयोग हनुमानजी ने किया, वे हैं श्रीराम गुणगान (श्रीरामकथा श्रवण कराना), श्रीरामजी की मुद्रिका और सीताराम के गोपनीय नाम जो केवल उन्हीं को ज्ञात थे – जानकी और करुनानिधान। इसका प्रमाण बालकाण्ड में इस प्रकार से मिलता है –

प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी।। (1/235/2)

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।

करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।। (1/236/छंद)

समाज के लिए इस प्रसंग से यह सूत्र प्राप्त होता है कि यदि दो अपरिचितों का मिलाप होना हो तो कम से कम तीन ऐसे ही गुप्त रहस्यों का आश्रय लेना चाहिए, ताकि कभी भी धोखा न हो सके।

(7) श्रीरामजी का कुशल समाचार ज्ञात कर सीताजी प्रसन्न होकर हनुमानजी को यह आशीर्वाद देती हैं –

अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।।

करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना।। (5/17/3–4)

उनके इस आशीर्वाद को प्राप्त कर हनुमानजी गद्‌गद हो जाते हैं। हनुमानजी रुद्रावतार हैं और स्वयं श्रीरामजी ने कहा है –

संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि।। (7/45)

कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें। असि परतीति तजहु जनि भोरें।। (1/138/6)

और अब सीताजी के आशीर्वाद से तो वे श्रीरामजी के अत्यंत प्रिय हो गए। उनके माध्यम से श्रीरामजी की भक्ति प्राप्त करना सहज हो गया है, तभी तो गोस्वामी तुलसीदासजी

ने हनुमान चालीसा में लिखा है –

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

(8) जब हनुमानजी अशोक वृक्ष पर छिपे हुए थे, तब रावण के जाने के पश्चात् त्रिजटा के मुख से उन्होंने सुना –

सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी।।

यह सपना मैं कहउँ पुकारी। होइहि सत्य गएँ दिन चारी।। (5/11/3 तथा 7)

इससे हनुमानजी समझ गए कि मुझे लंका को जलाना है, पर यह दुष्कर कार्य मुझसे कैसे होगा। उन्होंने श्रीरामजी का स्मरण करके यह बहाना बनाया –

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा।। (5/17/7)

सीताजी की आज्ञा पाकर वे अशोक वाटिका में फल खाने के बहाने वृक्ष तोड़ने लगे, रक्षकों को मार डाला, फिर अक्षय कुमार का भी वध किया। यह सुनकर रावण ने मेघनाद को भेजा और वे ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके उसके द्वारा पकड़कर रावण के दरबार में लाए गए। रावण के साथ सम्वाद करके उसे उचित शिक्षा दी, पर वह कहाँ मानने वाला था। इनके सम्भाषण से उसने अपने को अपमानित होने का अनुभव किया, अतः पूँछ में आग लगाने का आदेश दे दिया। विभीषणजी का घर छोड़कर पूरी लंका जला दी गई और हनुमानजी समुद्र में अपनी पूँछ में लगी आग बुझाकर पुनः सीताजी के समक्ष आए और पहचान स्वरूप उनसे चूड़ामणि लेकर तथा जयंत की कथा सुनाकर, जो केवल सीतारामजी को ही ज्ञात थी, श्रीरामजी के पास चले गए।

इस प्रसंग से यह तथ्य उभरकर आता है कि हमें कार्य करते समय सचेत रहना चाहिए और फिर जैसी स्फुरणा हो तदनुसार ईश्वर की आज्ञा समझकर कार्य करते रहना चाहिए, प्रभु कृपा से आगे का मार्ग स्वतः प्रशस्त होता जाएगा।

(9) श्रीरामजी को जब सब समाचार बताया गया तो उन्होंने हनुमानजी की प्रशंसा करते हुए कहा –

प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा।।

सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं।। (5/32/6–7)

अपनी प्रशंसा सुनकर हनुमानजी त्राहि–त्राहि करते हुए श्रीरामजी के चरणों में गिर

पड़े। श्रीरामजी ने उन्हें उठाकर हृदय से लगा लिया और तब अपने समीप बैठाकर पूछ लिया कि तुमने किस प्रकार से लंका–दहन किया। हनुमानजी ने निरभिमान होकर यह निवेदन किया –

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई।। (5/33/9)

इस प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं –

यह संबाद जासु उर आवा। रघुपति चरन भगति सोइ पावा।। (5/34/4)

इसका आशय यह है कि जब हम अहंकार शून्य हो जाएँगे, तभी भक्ति प्राप्त होगी।

(10) श्रीरामजी वानर दल के साथ समुद्र तट तक पहुँच जाते हैं। इस बीच विभीषणजी रावण को पुनः समझाते हैं। इस बार उनकी वाणी में वह जोश था जो हनुमानजी ने प्रदान किया था। वे जो बात अभी तक रावण से नहीं कह सके थे, अब उन्होंने (हनुमानजी मिलन के पश्चात्) कह दी –

तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार।। (5/40)

यह सुनकर रावण ने भरी सभा में विभीषणजी को लात मारकर अपमानित किया, जिससे वे भगवान श्रीराम की शरण में आए, पर सुग्रीव ने सलाह दी कि इन्हें बंदी बना लिया जाए। इस पर श्रीरामजी ने कहा –

सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी। मम पन सरनागत भयहारी।।
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना। सरनागत बच्छल भगवाना।। (5/43/8–9)

इस प्रसंग से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि यदि हम सच्चे मन से भगवान की शरण में चले जाएँ तो प्रभु अवश्य शरण देंगे, क्योंकि वे शरणागतवत्सल हैं।

(11) लंका तक पहुँचने के लिए समुद्र कैसे पार किया जाए, इस विषय में श्रीरामजी ने सबसे सलाह माँगी। विभीषणजी ने समुद्र से याचना करने की सलाह दी और लक्ष्मणजी की इच्छा के विरुद्ध श्रीरामजी समुद्र से प्रार्थना करने बैठ गए। तीन दिन बीत जाने पर भी जब समुद्र ने प्रार्थना नहीं सुनी, तब श्रीरामजी बोले –

लछिमन बान सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू।। (5/58/1)

समुद्र प्रचंड ज्वाला से त्रस्त होकर विप्ररूप धारण करके आया, क्षमा याचना की और समुद्र पर पुल बनाने की युक्ति बताई।

इस प्रसंग में विचारणीय है कि श्रीरामजी ने लक्ष्मणजी की इच्छा के विरुद्ध समुद्र से प्रार्थना करते हुए तीन दिन बिता दिए, जबकि सीताजी की विपत्ति दूर करने के लिए एक–एक क्षण महत्वपूर्ण था। श्रीरामजी ने सोचा होगा कि यदि अभी विभीषण की सलाह नहीं मानी तो आगे वे कोई सलाह नहीं देंगे और उनकी सलाह की युद्ध के समय परम आवश्यकता होगी।

इस प्रकार से सुन्दरकाण्ड में भक्ति–ज्ञान–वैराग्य के साथ–साथ बहुत से ऐसे नीतिगत तथ्य हैं, जिनके अनुसरण से मानव कल्याण संभव है। उल्लेखनीय है कि सामान्यतया श्रद्धावान लोग गृहप्रवेश, विवाह के समय, जन्म दिन आदि पर अखण्ड रामायण (श्रीरामचरितमानस) पाठ का आयोजन कराते हैं, पर कुछ लोग समय एवं संसाधनों की कमी से केवल **'सुन्दरकाण्ड पाठ'** कराके संतोष कर लेते हैं। यह पाठ समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला, विषम परिस्थितियों से उवारने वाला, दरिद्रता नष्ट करने वाला, सुख–स्वास्थ्य–संपदा प्रदान करने वाला, दैहिक–दैविक–भौतिक त्रितापों को दूर करने वाला है। वैसे तो श्रीरामचरितमानस की एक–एक चौपाई–दोहा–सोरठा–छंद–श्लोक मंत्रवत् हैं, पर **सुन्दरकाण्ड का विशेष महत्व** है, क्योंकि इसमें भक्तिस्वरूपा सीताजी की तथा परम रामभक्त हनुमानजी की कथा है। सुन्दरकाण्ड के समापन पर गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं –

सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना।।
सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान।। (5/60)

जहाँ दूसरों को समझाना कठिन हो, वहाँ खुद को समझ लेना ही बेहतर है। 'खुश' रहने का सीधा सा एक ही 'मंत्र' है कि उम्मीद अपने आप से रखो, किसी और से नहीं।

झुक जाते हैं जो लोग आपके लिए किसी भी हद तक, वे सिर्फ आपकी इज्जत ही नहीं करते, आपसे प्रेम भी करते हैं।

श्रीहनुमानचालीसा–एक दृष्टिकोण

श्री पन्नालालजी कपूर, साभारः कल्याण–अक्तूबर 1988

संत श्रीतुलसीदास की विशेषता यह है कि उनका नाम दीन–रूप में उनकी रचनाओं में अवश्य आया है और यही बात हनुमान चालीसा में भी है :–

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।

हनुमानचालीसा अत्यन्त सरल और सर्वत्र प्रचलित है। इस चालीसा के गठन में संत श्रीतुलसीदास ने कितनी सावधानी बरती है, इसका एक दृष्टिकोण आपके समक्ष प्रस्तुत है:–

'मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा'।

श्रीमहावीरजी के दो प्रमुख गुण हैं–पहला अपनी प्रशंसा अथवा बड़ाई की ओर न ध्यान देना और न सुनना। दूसरा राम–कथा एवं प्रभु–चर्चा जहाँ भी हो वहाँ उपस्थित रहना। अब विचारणीय यह है कि जो अपनी प्रशंसा सुनना न चाहे उसके प्रति चालीसा अथवा चालीस चौपाई वन्दना के रूप में किस प्रकार कही जायें? हनुमानजी के अमानी होने का प्रमाण रामायण में द्रष्टव्य है :–

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेहु बलवाना।।
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना ।।
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा।। (4/30/3–6)

श्रीजाम्बवान्जी ने हनुमानजी के गुण बताये, पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया, पर जब उन्होंने कहा कि तुम्हारा अवतार ही रामकाज के लिए हुआ है, तब वे तुरंत समुद्र लाँघने के लिए उद्यत हो गए और अपना शरीर पर्वत के समान बड़ा कर लिया।

ऐसे देवता की किस प्रकार स्तुति की जाये? फिर यह भी समस्या है कि उस देवता के आवाहन किए बिना उसकी स्तुति कैसे हो? श्रीमारुतनन्दन अन्य देवताओं की भाँति अपनी प्रशंसा सुनने पर नहीं पधारते हैं। उनके आवाहन का मंत्र अथवा पद्धति संत

श्रीतुलसीदास को पूर्णतया ज्ञात थी, अतः हनुमानचालीसा का पहला दोहा हनुमानजी के प्रति न होकर श्रीरामजी के प्रति है, जिसे सुनकर श्रीमारुतनन्दन निश्चित आ जाते हैं। यह विख्यात दोहा अयोध्याकाण्ड के आरम्भ में आया है :—

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।। (2/0)

इस दोहे को सुनने के बाद कोई संशय नहीं रह जाता कि राम—कथा प्रारम्भ होने वाली है। बस, श्रीमहावीरजी तुरंत विराजमान हो जाते हैं और वहाँ शान्तिपूर्वक बैठ जाते हैं, इसलिए कि पूरी कथा जो सुननी है।

अब संत श्रीतुलसीदास उनके ही सामने हनुमान चालीसा प्रारम्भ कर देते हैं, परंतु कवि की कुशलता तो देखिए कि वे श्री मारुतनन्दन को चालीसा के अन्त तक बिठाए रखते हैं। उनका मन उचटने नहीं देते। उनके इष्टदेव श्रीराम का सम्बन्ध लेकर वे अपनी प्रशंसा सुनने को विवश हो जाते हैं, क्योंकि उनके इष्टदेव की महिमा और कृपा भी उसमें गुथी हुई है :—

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन—कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।

यह मात्र हनुमानजी की प्रशंसा एवं प्रार्थना है। इससे जब उनका मन उचटने लगा तब संत श्रीतुलसीदास ने उनके चित्त को स्थिर करने के लिए कहा :—

राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि—पुत्र पवनसुत नामा।।

हनुमानजी तुरंत प्रसन्न हो गए। उन्हें रामदूत की उपाधि मिल गयी, इससे अधिक और क्या चाहिए। दूसरी उपाधि 'अतुलित बल धामा' की मिली। महावीरजी स्वयं बली न होकर अपने इष्टदेव के बल के धाम हैं। जो भी वे हैं वह अपने प्रभु का बल और कृपा है। फिर गोसाईंजी कहते हैं :—

महावीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।

संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।

विद्यावान गुनी अति चातुर।

गोसाईंजी ने ध्यान दिया कि अब मारुतनन्दन का चित्त विचलित हो रहा है, तो तुरंत कह दिया :–

राम काज करिबे को आतुर।।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।

हमारे प्रभु मारुतनन्दन फिर गद्‌गद हो गए। यहाँ एक बात और ध्यान देने की है। हनुमानजी के नाम में चार शब्द प्रयुक्त किए गए हैं – 1. अंजनि–पुत्र, 2. पवन–तनय, 3. संकर–सुवन, 4. केसरीनंदन। ये चारों शब्द पर्यायवाची नहीं है। इन चारों का प्रयोग बहुत समझकर किया गया है। 'पुत्र' शब्द का प्रयोग माता अथवा पिता के सम्बन्ध में हो सकता है, जिसने जन्म दिया हो। अंजना हनुमानजी की जननी थीं, अतः अंजनि–पुत्र का प्रयोग किया गया है। केसरी के सम्बन्ध में केसरीनंदन का प्रयोग किया गया है। इसी तरह पवनतनय अथवा पवन–सुत कहा गया है और ऐसे ही संकर–सुवन का प्रयोग हुआ है। कितनी विलक्षणता से शब्दों का प्रयोग हुआ है। आगे गोसाईंजी लिखते हैं :–

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।

भीम रूप धरि असुर सँहारे।

ऐसा न हो कि महावीर समझें कि हमारे ऐश्वर्य की प्रशंसा की जा रही है, पर ऐसा इसलिए किया कि वे श्रीराम के भक्त हैं और :–

रामचंद्र के काज सँवारे।।

फिर गोसाईंजी लिखते हैं :–

लाय सजीवन लखन जियाये।

इस अहंकारमय स्तुति से मारुतनन्दन का रुष्ट होना स्वाभाविक है, अतः उन्हें प्रसन्न करने के लिए :–

श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।

हम आपकी बिलकुल प्रशंसा नहीं करते :–

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।

हम नहीं कहते हैं :–

अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

फिर कहते हैं :–

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।

यह प्रक्रिया महावीरजी की विशुद्ध प्रशंसा है। इसे सुनकर उनका मन विचलित होने लगा। कवि पुनः श्रीराघवेन्द्र का सम्बन्ध लेकर कहते हैं कि मारुतनन्दन! आपने जिसे चाहा उसी को प्रभु ने प्रतिष्ठा दी। आपके इष्टदेव ने सदैव आपकी टेक रखी है :–

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।।

इतना सुनने पर श्रीहनुमानजी का हृदय गद्गद हो गया। उनकी उस दशा का चित्रण इस प्रकार किया जा सकता है :–

प्रभु कर पंकज कपि के सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा।।

पुनः–

जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

कवि इस बात पर तुले हुए हैं कि हनुमानजी की प्रशंसा करें और चालीसा में उसे ग्रथित कर दें, पर अवस्था विपरीत देख श्रीराम का संबंध देकर उन्हें संतुष्ट कर देते हैं। कवि यहाँ पुनः अपने को सँभालते हैं जिससे कहीं असावधानी न हो जाये। उपर्युक्त चौपाई में उनके बल की महिमा गायी है और अब कहते हैं कि यह सब रघुनाथजी की कृपा है, अतः कोई आश्चर्य नहीं है तो :–

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।

मारुतनंदन! यदि आप समुद्र भी लाँघ गए तो कोई आश्चर्य नहीं है। यह सब रघुनाथजी की कृपा है। आपने श्रीराम की मुद्रिका अपने मुख में रख ली थी। इतना सुनने पर हनुमानजी अत्यन्त प्रसन्न हैं। कवि ने पुनः प्राचीन भाव प्रकट किया :–

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

कवि अब उनकी प्रशंसा करने का कारण (गोपनीय) बताते हैं :–

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

रघुपति के प्रिय भक्त! आप श्रीरघुनाथजी के द्वाररक्षक हैं, अतः आपकी भक्ति एवं आज्ञा के बिना श्रीराम तक हमारी पहुँच हो ही नहीं सकती। श्रीराम सकल सुख के धाम हैं और आपके बिना हम वहाँ पहुँच ही नहीं सकते, इसलिए :–

सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

इतनी सारी सुविधाएँ आपसे इसलिए प्राप्त हैं, क्योंकि आपके बिना हम सुख धाम श्रीराम तक नहीं पहुँच सकते। यह गोपनीय गुह्य बात है, इससे भी गोपनीय गुह्यतर बात यह है :–

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।

इसलिए :–

और मनोरथ जो कोइ लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।

तथा :–

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।

यह तुम्हारी प्रसिद्धि इसलिए भी है :–

साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।

'राम दुलारे' शब्द से जितनी प्रसन्नता हनुमानजी को हुई, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।

हम आपकी प्रशंसा नहीं करते हैं कि आप आठों सिद्धियों और नवों निधियों के दाता हैं, पर ऐसा वर आपको माता सीता ने दिया था। फिर :–

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।

इसे सुनने के पश्चात् महावीरजी के सुख की सीमा नहीं कही जा सकतीः–

'सो सुख उमा जाइ नहिं बरना'।

अब कवि कपि को अति प्रसन्न होते देख अत्यन्त गोपनीय गुह्यतम बात कहते हैंः–

तुम्हरे भजन राम को पावै।

यह बात सर्वोपरि है। महाराज! हम आपका भजन आपको प्रसन्न करने के लिए नहीं करते हैं, पर आपके इष्टदेव को प्रसन्न करने के लिए करते हैं। आपका भजन सरकार को अच्छा लगता है और इससे उनकी प्राप्ति होती है। अब तो आपको बुरा नहीं मानना चाहिए और आपके अमानी गुण में इस भजन या चालीसा से कोई अन्तर नहीं पड़ता है। अब कवि को खुली छूट उनकी प्रशंसा के निमित्त मिल गयी :–

जनम जनम के दुख बिसरावै।।

अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि–भक्त कहाई।।

तुम्हारे भजन से भगवान का धाम और भक्ति दोनों मिलते हैं, प्रशंसा कहने की छूट तो है ही :–

और देवता चित्त न धरई। हनुमान सेइ सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

हनुमान चालीसा पढ़ने वाले को सिद्धि प्राप्त होगी। यह बात इतनी सत्य है कि संत श्रीतुलसीदास ने शंकर की साक्षी देकर कह डाला। आप समझ लें कि इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं–संत श्रीतुलसीदास साक्षी देकर कोई बात कहें तो वह अटल सत्य है :–

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

संत श्रीतुलसीदास अपने लिए कहते हैं कि महाराज! हम तो सदा से आपके इष्टदेव भगवान राम के दास हैं, इसलिए आप हृदय में वास करें। अन्तिम दोहे में जन समुदाय से संत श्रीतुलसीदास कहलवाते हैं :–

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।

राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

यदि हम मारुतनन्दन से हृदय में अकेले आने को और बसने को कहेंगे तो सम्भवतः वे न मानें, यदि राम, लखन और सीता सहित कहेंगे तो अवश्य आयेंगे। जहाँ राम, लखन, सीता होंगे वहाँ हनुमानजी अवश्य होंगे।

बोलो केसरी–नन्दन की जय।

पृष्ठ 93 का शेष

संत सिद्ध कोटि के प्रेमी थे, श्रीसीतारामजी उनसे संवाद भी किया करते थे। पंडितजी बोले, महाराज हम बहुत गरीब हैं, हमें बहुत सारा धन मिल जाये। संत ने प्रार्थना की कि प्रभु इसे कृपा करके धन दे दीजिए। भगवान मुस्करा दिये, संत बोले तथास्तु, फिर संत ने पूछा, मांगो और क्या चाहते हो? पंडितजी बोले, हमारे घर पुत्र का जन्म हो जाए। संत ने पुनः प्रार्थना की और श्रीरामजी मुस्करा दिए। संत बोले तथास्तु, तुम्हें बहुत अच्छा ज्ञानी पुत्र होगा। फिर संत बोले और कुछ माँगना है तो मांग लो। पंडितजी बोले, श्रीसीतारामजी की अखण्ड भक्ति, प्रेम हमें प्राप्त हो। संत बोले, नहीं! यह नहीं मिलेगा।

पंडितजी आश्चर्य में पड़ गए की महात्मा क्या बोल गए। पंडितजी ने पूछा, संत भगवान्! यह बात समझ नहीं आयी। संत बोले तुम्हारे मन में प्रथम प्राथमिकता धन, सम्मान, घर की है। दूसरी प्राथमिकता पुत्र की है और अन्तिम प्राथमिकता भगवान की भक्ति की है।

जब तक हम संसार को, परिवार, धन, पुत्र आदि को प्राथमिकता देते हैं, तब तक भक्ति नहीं मिलती। भगवान ने जब केवट से पूछा की तुम्हें क्या चाहिए? केवट ने कुछ नहीं माँगा। प्रभु ने कहा, तुम्हें बहुत सा धन देते हैं, केवट बोला नहीं, प्रभु ने कहा ध्रुव पद ले लो, केवट बोला नहीं, इंद्र पद, पृथ्वी का राजा और मोक्ष तक देने की बात की, परंतु केवट ने कुछ नहीं लिया, तब जाकर प्रभु ने उसे भक्ति प्रदान की।

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ।

बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरू देइ।। (मानस 2/102)

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की

डॉ. भगवान दास पटैरया, नोएडा, फोनः 9899004263

प्राणी जब तक अपना लक्ष्य निर्धारित नहीं कर लेता है, तब तक वह इधर–उधर भटकता ही रहता है, अतः हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य है – जीवन के लक्ष्य का निर्धारण। अपना तथा अपने परिवार का भरण–पोषण करना, अपने लिए सुख–सुविधाएँ जुटाना आदि यह सब हमारे जीवन का लक्ष्य नहीं है। यह तो सभी जीव, पशु–पक्षी, कीट–पतंग आदि अपने सामर्थ्यानुसार कर ही लेते हैं। विचारणीय है कि फिर हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है अर्थात् किस उद्देश्य से यह मानव जीवन मिला है। इस संदर्भ में श्रीरामजी अयोध्यावासियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं –

एहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई।।
नर तनु पाइ बिषयँ मन देहीं। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं।। (7/44/1–2)

अर्थात् मानव शरीर पाकर विषयभोगों में लिप्त रहना ठीक वैसे ही है, जैसे कोई अमृत के बदले विष ले लेता है। अब विचार करना है कि हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए। लक्ष्य निर्धारण करना अत्यावश्यक है। वेद–पुराण शास्त्र सभी का एकमत है कि ईश्वर से बिछुड़ा हुआ जीव जब तक ईश्वर को प्राप्त नहीं कर लेता है, तब तक वह चौरासी लाख योनियों में चक्कर काटता रहता है। मनुष्य योनि भोग योनि के साथ–साथ कर्म योनि भी है, अन्य सभी योनियाँ, चींटी से लेकर ब्रह्मा तक भोग योनियाँ हैं।

श्रीरामजी के बाण से जब रावण का अंत हुआ, तब उसका तेज प्रभु के मुख में समा गया। यह दृश्य देखकर ब्रह्माजी और शिवजी हर्षित हुए, किंतु अन्य देवगणों ने इसे आश्चर्यचकित होकर देखा। यह तथ्य उन्होंने उस समय प्रकट किया, जब वे रणांगण में श्रीरामजी की स्तुति करने आए। वे कहते हैं –

यह खल मलिन सदा सुरद्रोही। काम लोभ मद रत अति कोही।।
अधम सिरोमनि तव पद पावा। यह हमरें मन बिसमय आवा।।
हम देवता परम अधिकारी। स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी।।

भव प्रबाहँ संतत हम परे। अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे।। (6/110/9–12)

अर्थात् देवता कह रहे हैं कि इस परमगति के अधिकारी तो हम हैं, किंतु स्वार्थवश हमने आपकी भक्ति भुला दी, इसीलिए संसार सागर में अर्थात् भव प्रवाह (आवागमन–जन्म मृत्यु के चक्र) में पड़े हुए हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि संभवतः उन देवताओं के संज्ञान में वह ईश्वरीय विधान नहीं होगा जो गीता में भगवान श्रीकृष्णजी ने अर्जुन को बताया था, यथा –

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ।। (8/6–7)

अर्थात् मनुष्य अन्तकाल में जिस–जिस भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर का त्याग करता है, उस–उसको ही प्राप्त होता है। इसलिए तू सब समय में निरंतर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर। इस प्रकार मुझमें अर्पण किए हुए मन–बुद्धि से युक्त होकर तू निःसन्देह मुझको ही प्राप्त होगा। उपर्युक्त सिद्धांत ब्रह्माजी और शिवजी जानते थे। वे जानते थे कि रावण अंतकाल में श्रीरामजी का ही स्मरण कर रहा था। मरते समय उसने कहा था, '**कहाँ रामु रन हतौं पचारी' (6/103/4)**। इस कारण से रावण को परमगति प्राप्त होते देखकर उन्होंने आश्चर्य नहीं माना, बल्कि सुख का अनुभव किया, यथा –

तासु तेज समान प्रभु आनन। हरषे देखि संभु चतुरानन।। (6/103/9)

एक चींटी से लेकर ब्रह्मा तक सभी जीव हैं और भव प्रवाह में फँसे हुए हैं। इस तथ्य को स्वयं श्रीरामजी ने काकभुशुंडिजी को इस प्रकार से बताया है –

सम मम प्रिय सब मम उपजाए। सब ते अधिक मनुज मोहि भाए।।
पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं। मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं।।
भगति हीन बिरंचि किन होई। सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई।।
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी। मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी।। (7/86/4, 8–10)

अर्थात् भगवान कहते हैं कि भक्ति विहीन ब्रह्मा भी मुझे अन्य सभी जीवों के समान ही प्रिय हैं, किंतु मेरा भक्त वह चाहे अति नीच प्राणी हो, मुझे सर्वाधिक प्रिय है।

विचारणीय है कि यदि साधना करते–करते ब्रह्मा भी बना दिए जाएँ, तब भी कोई लाभ नहीं है, क्योंकि वह भी तो अन्य जीवों की तरह भवसागर में फँसे हुए हैं, अतः मानव शरीर पाकर परम लक्ष्य यही है कि इस शरीर में जीवात्मा के रहते हुए भगवत्प्राप्ति हो जाए। इस हेतु शास्त्रों ने तीन मार्ग निर्धारित किए हैं –ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग। कर्मयोग तो उभयनिष्ठ है अर्थात् चाहे ज्ञानयोग का आश्रय लिया जाए और चाहे भक्तियोग का, कर्मयोग तो करना ही पड़ेगा, पर सकाम कर्म बंधन का कारण है और निष्काम कर्मयोग बंधन का कारण नहीं बनता, ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार भुने हुए चना से अंकुर नहीं निकलता। अपनी–अपनी रुचि और पूर्व जन्मों के संस्कारों से जिसमें जिसकी रुचि हो अर्थात् ज्ञानयोग या भक्तियोग अपनाकर भवसागर से पार जाने का परम लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए। श्रीरामचरितमानस के अनुसार भक्तियोग (भक्तिमार्ग) सरल है, यथा –

भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी। बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी।। (7/45/5)

इस प्रकार यह सूत्र समझ में आता है कि आत्मोद्धार हेतु सत्संग आवश्यक है, पर सत्संग कहाँ मिलेगा, इसका उत्तर मानस के प्रारंभ में लिखा है कि यह–सभी को सब समय सभी देशों में उपलब्ध है, यथा –

सबहि सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा।। (1/2/12)

यदि किसी तत्वज्ञानी, भक्त, सज्जन पुरुष आदि का साथ न मिल सके तो सद्ग्रन्थ का सहारा लीजिए और इसमें सर्वोत्तम सहारा है – श्रीरामचरितमानस का। 'मानस' में हरि–कथा है और हरिकथा श्रवण से मोह दूर होगा और मोह दूर होते ही श्रीरघुनाथजी के चरणों में प्रेम उत्पन्न हो जाएगा, यही इस जीवन का परम लक्ष्य है, यथा –

बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग।। (7/61)
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा। किएँ जोग तप ग्यान बिरागा। ।(7/62/1)

श्रीरामजी के चरणों में अनुराग हो जाए इसके लिए श्रीरामचरितमानस का पठन–पाठन, वाचन, मनन चिंतन और गायन एक उत्तम साधन है, यथा –

जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता।।
होइहहिं राम चरन अनुरागी। कलि मल रहित सुमंगल भागी।। (1/15/10–11)

युगधर्म के अनुसार भगवत्प्राप्ति (परम लक्ष्य) के साधन अलग–अलग हैं। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

कृतजुग सब जोगी बिग्यानी। करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी।।
त्रेताँ बिबिध जग्य नर करहीं। प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं।।
द्वापर करि रघुपति पद पूजा। नर भव तरहिं उपाय न दूजा।।
कलिजुग केवल हरि गुन गाहा। गावत नर पावहिं भव थाहा।। (7/103/1–4)

अर्थात् सत्ययुग में ध्यान से, त्रेता में यज्ञ से, द्वापर में पूजा से प्राणी भवसागर से पार हो जाते हैं, किंतु कलियुग में 'हरिगुण–गान' ही सहारा है। उल्लेखनीय है कि 'राम–राम–राम' या श्रीरामजी के किसी मंत्र जैसे ''ॐ रां रामाय नमः'' या ''श्रीराम जय राम जय जय राम'' का जप करना अथवा श्रीरामचरितमानस का पाठ एवं इसका मनन–चिंतन एक ही बात है, क्योंकि इसमें सर्वत्र श्रीरामजी का नाम व्याप्त है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने 'मानस' के प्रारंभ में ही इस सिद्धांत को निरूपित किया है, यथा –

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।। (1/10/1)

जीवन का परम लक्ष्य परमगति प्राप्त करने हेतु श्रीरामकथा का पठन–पाठन, श्रवण, गायन या मनन–चिंतन को श्रीरामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों में निरूपित किया गया है। कुछ प्रसंग यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं –

(1) जगजननी पार्वती द्वारा भगवान शिव से अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम के अवतार (जन्म) का हेतु पूछने पर शिवजी यह कहते हैं –

असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु।। (1/121)
सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं। कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं।। (1/122/1)

इस प्रसंग में यही भाव है कि श्रीराम कथा गायन से भक्तगण सहज ही भवसागर पार हो जाते हैं।

(2) अहल्या–उद्धार के प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं कि बिना कारण के दया करने वाले दीनबंधु भगवान श्रीराम का सभी प्रकार के कपट और जंजाल त्यागकर मूर्ख मन भजन कर, यथा –

अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल।। (1/211)

(3) भक्तिमती शबरी के प्रसंग में लिखते हैं कि सब कुछ त्यागकर अर्थात् सबसे आसक्ति का त्याग करके विश्वास करके श्रीरामजी के चरणकमलों में अनुराग उत्पन्न हो, वही कर्म किया जाए, यथा –

नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू।
बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू।। (3/36/छंद)

(4) अरण्यकाण्ड के समापन में लिखा है कि जो लोग भगवान के इस पावन चरित्र का श्रवण–गायन करेंगे उन्हें दृढ़ भक्ति अर्थात् अविरल रामभक्ति प्राप्त होगी, यथा –

रावनारि जसु पावन गावहिं सुनहिं जे लोग।
राम भगति दृढ़ पावहिं बिनु बिराग जप जोग।। (3/46क)

(5) सीतान्वेषण को तत्पर वानर–भालुओं को सम्बोधित करते हुए वानरराज सुग्रीव कहते हैं कि मन–वचन–कर्म से सब लोग ऐसा करो कि रामचन्द्रजी का यह कार्य पूर्ण हो जाए। बालि–वध से सुग्रीव यह समझ गए थे कि श्रीरामजी भगवान के अवतार हैं, अतः वे यह उपदेश भी वानर–भालुओं को देते हैं –

देह धरे कर यह फल भाई। भजिअ राम सब काम बिहाई।। (4/23/6)

अर्थात् शरीर धारण का यही फल (उद्‌देश्य) है कि सभी कामनाओं का त्याग करके श्रीरामजी का भजन किया जाए।

(6) सीताजी की खोज करने जाते हुए श्रीहनुमानजी को श्रीजामवंतजी ने सलाह दी कि तुम केवल सीताजी का समाचार लेकर आओ। तत्पश्चात् स्वयं श्रीरामजी हम सबके साथ लंका में जाकर राक्षसों का संहार करेंगे। उनका यह सुजस त्रिलोकी में व्याप्त हो जाएगा और जो इस कथा को कहेंगे, सुनेंगे और समझेंगे वे परमपद (जीवन का परम लक्ष्य) के अधिकारी हो जाएँगे, यथा –

कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं।
त्रैलोक पावन सुजसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं।।
जो <u>सुनत गावत कहत समुझत</u> परम पद नर पावई।

रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई।। (4/30/छंद)

(7) सुन्दरकाण्ड के समापन पर लिखा है कि जो आदरपूर्वक अर्थात् श्रद्धा–विश्वास के साथ श्रीरामजी का गुणगान (श्रीरामचरितमानस) को सुनेंगे वे सहज ही इस भवसागर से पार हो जाएँगे, यथा –

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान।। (5/60)

(8) लंकाकाण्ड के समापन में भी यही संदेश है कि इस कलियुग में भव पार जाने का श्रीरघुनाथजी के 'नाम' को छोड़कर और कोई आधार नहीं है अर्थात् और कोई साधन नहीं है, यथा –

यह कलिकाल मलायतन मन करि देखु बिचार।
श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अधार ।। (6/121ख)

(9) काकभुशुंडिजी श्रीरामकथा का महत्व समझाते हुए गरुड़जी से कहते हैं कि सकाम भाव से भी श्रीरामकथा श्रवण और गायन से इस संसार में प्राणी सुर दुर्लभ सुख प्राप्त करके अंतकाल में श्रीरघुनाथजी के लोक साकेतधाम को जाते हैं अर्थात् जीवन का परम लक्ष्य (परमगति) प्राप्त करते हैं, यथा –

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना बिधि पावहिं।।
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अंतकाल रघुपति पुर जाहीं।। (7/15/3–4)

(10) कलियुग के गुण–दोषों का वर्णन करते हुए गोस्वामीजी लिखते हैं कि अगणित दोष होते हुए भी कलियुग में एक विशिष्ट गुण यह है –

कलिजुग सम जुग आन नहिं जौं नर कर बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहिं प्रयास।। (7/103क)

(11) श्रीरामचरितमानस के समापन पर अंतिम चौपाइयों के रूप में गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं कि इस कलिकाल में योग, यज्ञ, जप, तप, व्रत पूजा कोई भी साधन सुलभ नहीं है, क्योंकि मानव के पास न इतना समय है और न साधन, अतः एक ही उपाय है जीवन के परम लक्ष्य प्राप्त करने का कि श्रीरामजी का स्मरण करें और उन्हीं का गुणगान करें, यथा –

एहिं कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा।।

रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि।। (7/130/5–6)

कई लोग कहा करते हैं कि हम इतना 'नाम जप' करते हैं, इतनी कथा कहते–सुनते हैं, फिर भी मन को शांति नहीं मिलती है। इसका प्रमुख कारण है मन के अंदर का विक्षेप (मल)। गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं कि मन–वचन–कर्म से चतुराई (छल–कपट) त्यागकर भजन करने से ही भगवान कृपा करते हैं और भगवान की कृपा के बिना सुख–शांति प्राप्त करना संभव नहीं है –

मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई।। (1/200/6)

स्वयं श्रीरामजी ने कहा है कि उन्हें छल कपट पसंद नहीं है, उन्हें निर्मल मन वाला प्राणी ही पा सकता है, यथा –

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।। (5/44/5)

अब प्रश्न उठता है कि निर्मल मन कैसे बने। इसका समाधान करते हुए श्रीरामचरितमानस के अंतिम छंद के रूप में लिखा है कि श्रीरघुनाथजी के इस पावन चरित्र को जो कहेंगे, सुनेंगे और गायन करेंगे, वे बिना श्रम के ही कलियुग के तथा मन के मल (विक्षेप) को दूर करके श्रीरघुनाथजी के धाम को जाएँगे, यथा –

रघुबंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं।

कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं।। (7/130/छंद)

श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में भी यही सिद्धांत लिखा है –

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की। (1/10/छंद)

अर्थात् श्रीरघुनाथजी की कथा मंगलकारिणी और कलियुग के मल को हरण करने वाली है।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट हो जाता है कि जीवन के परम लक्ष्य भगवत् प्राप्ति (परमगति) तक पहुँचने हेतु इस कलियुग में श्रद्धा–विश्वास के साथ **श्रीरामचरितमानस का नित्य–नियमित पाठ करना तथा उसी का सतत चिंतन–मनन करना ही सर्वोत्तम उपाय है।**

अगर मैं सोचूँ कि मुझे किसी की भी जरूरत नहीं, तो यह मेरा **'अहम'** है और
अगर मैं सोचूँ कि सबको मेरी जरूरत है, तो यह मेरा **'वहम'** है।

माँ जगजननी जानकीजी

पं. राजेश तिवारी 'मक्खन', झाँसी (उ.प्र.), फोनः 9451131195

जिनसे प्रकट होतीं अगणित उमा रमा ब्रह्मानी।
राम प्रिया जय जनकनन्दिनी श्रीसीता महारानी।।

जिस मानव का निर्मल मन हो वही राम को पाता है।
निर्मल मन पाने के लिए शरण सिया की जाता है।।

जिनके चरण शरण को चाहें सबरे ज्ञानी ध्यानी।
जिनसे प्रकट होतीं अगणित उमा रमा ब्रह्मानी।।1।।

उद्भव व पालन की शक्ती संहारकारिणी ही तुम हो।
शक्तिमान की शक्ति तुम्हीं हो विश्वव्यापिनी ही तुम हो।।

केवल कृपा आपकी पाकर भव तर जाते प्रानी।
जिनसे प्रकट होतीं अगणित उमा रमा ब्रह्मानी।।2।।

सुन्दरता को सुन्दर करतीं तुम ही हो जग माता।
वेद शास्त्र सब सुर नर मुनि जन तेरा ही यश गाता।।

नेति नेति श्रुति वरणन करतीं तुम्हरी अकथ कहानी।
जिनसे प्रकट होतीं अगणित उमा रमा ब्रह्मानी।।3।।

त्याग तपस्या दयामयी तुम जीवन कठिन जिया है।
सबै सुधारस पान कराया खुद तो गरल पिया है।।

जगत जननि तेरी जश गाथा कह न सकें ब्रह्मज्ञानी।
जिनसे प्रकट होतीं अगणित उमा रमा ब्रह्मानी।।4।।

मातु मैथिली कंज पग, उर आंगन पधराय।
जासु कृपा कटाक्ष ते, मन निर्मल हो जाय।।
मन निर्मल हो जाय, पाय श्रीपति की भक्ति।
अजर अमर वर पाय, पवन सुत पाये शक्ति।।
'मक्खन' मन कर मोद, उन्हीं के गुन गन गा तु।
करहहिं लाड़ दुलार, मान मन मैथिली मातु।।

विभीषण शरणागति

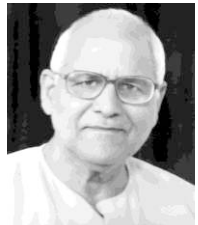

श्री राम जन्म सिंह, ग्राम/पोस्ट–दामा, जिला–आजमगढ़ (उ.प्र.), फोनः 9839453851

श्रीराम अवतरण से पूर्व श्रेष्ठ चरित्र वाले अनेक महापुरुष थे। विश्वामित्र जैसे महान ऋषि, वसिष्ठ जैसे ब्रह्मर्षि, जनक जैसे ब्रह्म ज्ञानी, दशरथ जैसे कुशल शासक तथा त्रिलोकविजयी रावण को पराजित करने वाले बाली जैसे योद्धा उस समय थे। सहस्रार्जुन ने भी रावण को हराया था, परशुराम ने सहस्रार्जुन का वध किया था। रावण ने शस्त्र–शास्त्र दोनों के ज्ञान का दुरुपयोग किया। रावण के चरित्र में **ब्राह्म** तेज–शस्त्र तेज दोनों का समन्वय था। दशरथ–दशमुख दोनों नाम में समानता है, दोनों चक्रवर्ती सम्राट थे। एक समय में दो चक्रवर्ती कैसे? यही तो जगत की सच्चाई है। कुछ समय के लिए हम सबके मन में त्याग–सेवा की वृत्ति रहती है, तब हमारे अन्तःकरण पर दशरथ का शासन। दूसरे को नीचा दिखाना–कष्ट देना यह दशमुख का शासन था।

मानस के सांकेतिक प्रतीकों पर ध्यान देना होगा। लक्ष्मण को वैराग्य के रूप में दर्शाया गया है। रावण मोह का प्रतीक है, कुम्भकर्ण अहंकार का, श्रीराम सच्चिदानंद ब्रह्म हैं, सीताजी भक्ति–शक्ति स्वरूपा हैं, विभीषण जीव का प्रतीक है। भक्तिस्वरूपा सीताजी की खोज में हनुमानजी ने लंका के एक शिखर के ऊपर खड़े होकर लंका को देखा। उनके मन में आया कि बाहर से तो लंका को दिन में देख लिया, अब रात में लंका को भीतर से देखा जाये। हनुमानजी विभीषण के घर के पास एक सुन्दर मंदिर देखते हैं।

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ। (5/5)

हनुमानजी सोचने लगे,

लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा।। (5/6/1)

लंका में सुरा–सुन्दरी–भोग का वातावरण है, पर विभीषण के घर के पास का वातावरण भिन्न है। उनके भवन के बगल में अलग से मंदिर बना हुआ है। मंदिर का निर्माण रावण ने ही कराया था। रावण पूर्व जन्म का हिरण्यकश्यपु था, जिसने प्रह्लाद को भजन करने से रोका था। वह पहले जन्म की भूल को इस जन्म में नहीं दुहराना चाहता

था, अतः उसने विभीषण के लिए श्रीराम मंदिर बनवाया और पूजा–पाठ से भी कभी नहीं रोका।

इस प्रकार से माता सीता की खोज करते हुए भोर में हनुमानजी विभीषण के द्वार पर पहुँचे। उसी समय विभीषण जाग गए। उन्हें सीता हरण की पूरी कथा सुना दी गई। विभीषण ने परिचय पूँछा। अपना नाम बताकर हनुमानजी ने कहा नाम सुन लिया, नाम का फल भी सुन लीजिए।

प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा।। (5/7/8)

विभीषण अपनी व्यथा सुनाते हुए हनुमानजी से कहते हैं –

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी।। (5/7/1)

दोनों की आत्मीयता बढ़ती गई। विभीषण ने पूछा–क्या राम मुझ पर दया करेंगे? हनुमानजी ने श्रीरामजी के स्वभाव–गुण का वर्णन करते हुए कहा– 'सुग्रीव भी बड़े भाई से त्रस्त था, श्रीराम ने उन्हें शरण में लिया, बाली–वध कर सुग्रीव को राजा बनाया। आप भी श्रीरामजी की शरण में जाइए। वे शरणागतवत्सल हैं। फिर हनुमानजी ने उनसे अशोक वाटिका में सीताजी का पता पूछा–

तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखी चहउँ जानकी माता।। (5/8/4)

हनुमानजी को सीताजी का दर्शन मिल गया, दोनों में लम्बा संवाद हुआ, हनुमानजी ने माता सीता से फल खाने की आज्ञा माँगी। पहरेदारों से युद्ध हुआ। अन्त में मेघनाद द्वारा बाँधकर हनुमानजी को लंका के दरबार में लाया गया। हनुमान–रावण संवाद हुआ। हनुमानजी ने रावण को इस प्रकार से समझाया–

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू।। (5/23/1)

यह बात रावण की समझ में नहीं आई, पर विभीषण ने इसे समझ लिया।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।। (हनुमान चालीसा)

समय पाकर विभीषण जब रावण को समझाने लगा, तभी भरी सभा में उसने भाई की छाती पर चरण प्रहार किया। रावण के सेनापति–मंत्री बैठे थे, सबके सामने विभीषण ने रामजी की शरण में जाने की घोषणा की। विभीषण द्वारा रावण का त्याग अर्थात् जीव द्वारा मोह का त्याग। विनय पत्रिका के अनुसार –

जीव भवदंघ्रि सेवक विभीषन, बसत मध्य दुष्टाटवी ग्रसित चिंता।

विभीषण समझ बैठा था कि प्रकृति पर रावण का अधिकार है, परन्तु लंका–दहन से स्पष्ट हो गया था कि अग्नि, जल, वायु पर अब रावण का नियंत्रण नहीं है। इस प्रकार से अब विभीषण श्रीहनुमानजी के वचनों का स्मरण करके अर्थात् श्रीरामजी के शरणागत वत्सल स्वभाव को समझकर उनकी शरण में चल दिया। वे सोचते हैं –

देखिहउँ जाइ चरन जलजाता। अरुन मृदुल सेवक सुखदाता।।
जे पद परसि तरी रिषिनारी। दंडक कानन पावनकारी।।
जे पद जनकसुताँ उर लाए। कपट कुरंग संग धर धाए।।
हर उर सर सरोज पद जेई। अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई।। (5/42/5–8)
जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ।। (5/42)

आकाश मार्ग से विभीषण को आते देखकर वानर दल ने उन्हें रोक दिया। सुग्रीव ने श्रीरामजी को सूचना दी कि रावण का भाई आपसे मिलने आया है। श्रीरामजी ने उनसे परामर्श किया, तब सूर्यपुत्र सुग्रीव ने रामजी को सुझाव दिया कि विभीषण को कैदी बना लिया जाये।

कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दसानन भाई।।
भेद हमार लेन सठ आवा। राखिअ बाँधि मोहि अस भावा।। (5/43/4 एवं 7)

सुग्रीव ने कहा प्रभु आपने प्रतिज्ञा की है–

निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह।। (3/9)

और विभीषण राक्षस वंश का है। सुग्रीव की बात सुनकर रामजी ने हँसकर लक्ष्मणजी की ओर निहारा, तात्पर्य शत्रु दशानन का भाई है और मैं सहस्रानन (शेषनाग) का बड़ा भाई हूँ। अगर बालि का छोटा भाई शरण में आ सकता है तो रावण का छोटा भाई क्यों नहीं। उल्लेखनीय है कि सुग्रीव ने जब पहली बार रामजी को देखा तो उसे संदेह था कि उन्हें बालि द्वारा भेजा गया होगा और सही जानकारी के लिए हनुमानजी को विप्र रूप में भेजा। इस प्रकरण में भी हनुमानजी द्वारा प्रेरणा प्राप्त करके ही विभीषण शरण में आए हैं।

श्रीराम सुग्रीव से कहते हैं कि तुम्हारी सलाह नीतिपरक है, किंतु मेरा प्रण है कि जो मेरी शरण में आ जाता है, मैं उसका त्याग नहीं कर सकता। जहाँ तक राक्षसों के संहार का प्रश्न है, लक्ष्मण अकेले ही संसार के सभी राक्षसों का संहार क्षणमात्र में करने में समर्थ हैं, अतः विभीषण को शरण में आने दीजिए। वानर दल सम्मानपूर्वक विभीषण को श्रीरामजी के पास लाते हैं। दूर से ही विभीषण ने श्रीरामजी की मुखछवि देखी तो वह मंत्रमुग्ध हो गया। मार्ग में वह विचार करता आ रहा था कि वह उन चरणों का दर्शन करेगा जिनकी चरणरज से ऋषि पत्नी अहल्या का उद्धार हो गया, जो चरण शिवजी के उर–सरोवर में विराजते हैं, आदि आदि, किंतु उनका मन श्रीरामजी के मुखमंडल पर ही अटक गया, यथा–

बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी।।
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन।।
सिंध कंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा।।(5/45/3–5)

धैर्य धारण करके विभीषण **"त्राहि त्राहि आरति हरन"** कहते हुए श्रीरामजी के चरणों में दंडवत् प्रणाम करते हैं। प्रभु उन्हें उठाकर हृदय से लगा लेते हैं। श्रीरामजी उनका कुशल–क्षेम पूछते हैं, विभीषण कहते हैं –

तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम।। (5/46)

विभीषण ने कहा कि प्रभु पहले तो मन में सांसारिक सुखभोग की लालसा थी, किंतु अब वह आपके चरणों की प्रीति सरिता में बह गई है। अब तो आप अपने चरण–कमलों की पावन भक्ति प्रदान कीजिए। एवमस्तु कहकर भगवान ने उनका राजतिलक कर दिया अर्थात् उनकी अब इच्छा न होते हुए भी मन की वासना की पूर्ति भी कर दी, यथा–

जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मोर दरसु अमोघ जग माहीं।।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा।। (5/49/9–10)

विभीषण–शरणागति के प्रसंग के माध्यम से श्रीरामजी के चरित्र में नीति, प्रीति, परमार्थ, स्वार्थ का अनोखा सामंजस्य मिलता है, क्योंकि श्रीरामजी के समान इसे और कोई चरितार्थ नहीं कर सकता है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोउ न राम सम जान जथारथु।। (2/254/5)

विभीषण–शरणागति प्रसंग से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि जब तक प्राणी को संत का संग न मिले, तब तक वह प्रभु शरणागत नहीं हो सकता है। विभीषण ने संभवतः रावण को संकेत रूप में पहले भी बताया होगा कि 'सीताहरण' अनुचित कार्य है, किंतु श्रीहनुमानजी से सत्संग के पश्चात् उन्होंने दृढ़तापूर्वक रावण को सीताजी को ससम्मान लौटाने का आग्रह किया था, जिसके परिणामस्वरूप उनका भरी सभा में तिरस्कार हुआ। इस कारण विभीषण श्रीरामजी की शरण में आए। कहावत है **संत की बात और जगत की लात** ही जीव को ईश्वर की शरण में भेज सकती है। विभीषण शरणागति के संदर्भ में यह कहावत पूर्णतया चरितार्थ हुई है।

एक गरीब की दर्द भरी दास्तान

एक पाँच–छः साल का मासूम सा बच्चा अपनी छोटी बहिन को लेकर गुरुद्वारे के एक तरफ कोने में बैठा हाथ जोड़कर भगवान से न जाने क्या माँग रहा था। कपड़े में मैल लगा हुआ था, मगर निहायत साफ, उसके नन्हे–नन्हे से गाल आँसुओं से भीग चुके थे। बहुत लोग उसकी तरफ आकर्षित थे, पर वह इससे बिल्कुल अनजान अपने भगवान से बातों में लगा हुआ था। जैसे ही वह उठा, एक अजनबी ने बढ़कर उसका नन्हा सा हाथ पकड़ा और पूँछा :– ''क्या माँगा भगवान से'', उसने कहा– ''मेरे पापा मर गए हैं उनके लिए स्वर्ग माँगा, मेरी माँ रोती रहती है उनके लिए सब्र और मेरी बहिन माँ से कपड़े–सामान माँगती है, उसके लिए पैसे माँगे''। तुम स्कूल जाते हो? अजनबी का सवाल स्वाभाविक सा सवाल था। हाँ जाता हूँ, उसने कहा। किस क्लास में पढ़ते हो? अजनबी ने पूँछा, नहीं अंकल पढ़ने नहीं जाता, माँ चने बना देती है उन्हें स्कूल के बच्चों को बेचता हूँ। बहुत सारे बच्चे मुझसे चने खरीदते हैं, हमारा यही काम–धंधा है। बच्चे का एक–एक शब्द मेरी रूह में उतर रहा था। तुम्हारा कोई रिश्तेदार, न चाहते हुए भी अजनबी बच्चे से पूँछ बैठा। पता नहीं, माँ कहती है गरीब का कोई रिश्तेदार नहीं होता, माँ झूठ नहीं बोलती, पर अंकल, मुझे लगता है मेरी माँ कभी–कभी झूठ बोलती है। जब हम खाना खाते हैं, हमें देखती रहती है और जब कहता हूँ, माँ तुम भी खाओ,

शेष पृष्ठ 135 पर

पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा

श्री अवध किशोर दूबे, झारखण्ड, फोनः 8409925271

विश्वामित्रजी की यज्ञ रक्षा के पश्चात् श्रीराम–लक्ष्मण उनके साथ धनुष–यज्ञ देखने के लिए जनकपुर पधारे। महाराज जनक ने उनका बहुत आदर–सत्कार किया और अपने महलों में ही उन्हें प्रवास दिया। भोजन विश्राम के पश्चात् विश्वामित्रजी से आज्ञा लेकर श्रीराम–लक्ष्मण जनकपुर देखने जाते हैं। उनके अनुपम रूप को देखकर जनकपुरवासी मोहित हो जाते हैं। दूसरे दिन विश्वामित्रजी उन्हें पूजार्थ पुष्प लेने महाराज जनक की पुष्प वाटिका में भेजते हैं, यथा –

समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई।। (1/227/2)

यहाँ पर विचारणीय है कि **'समय जानि'** से क्या आशय है? वास्तव में विश्वामित्रजी ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा कि इसी समय सीताजी गौरी–पूजन हेतु पुष्प वाटिका में आएंगी, अतः उस समय को जानकर ही उन्होंने श्रीराम–लक्ष्मण को पुष्प लेने भेजा। इसका वर्णन मानस में इस प्रकार से है –

तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई।। (1/228/2)

सीताजी ने सखियों के साथ पुष्प वाटिका के सरोवर में स्नान किया और प्रसन्नचित से भवानी के भवन में जाकर अत्यंत प्रेम से उनकी पूजा की और अपने अनुरूप सुंदर वर (दूल्हा) माँगा, यथा –

मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता।। (1/228/5)

विचार करें कि मन की प्रसन्नता का कारण क्या है, जबकि आगे का भविष्य स्पष्ट नहीं है, फिर भी **'मुदित मन'** कहा। जब राम के आगमन होने की संभावना मात्र से अयोध्या में **मन प्रसन्न सब केर (7/0),** सभी के मन प्रसन्न हो जाते हैं तो यहाँ इस पुष्प वाटिका में तो सीताजी के इष्ट एवं अभीष्ट दोनों की उपस्थिति है। विद्वज्जन विचार करें कि सीताजी की इष्ट–भवानी और अभीष्ट राम हैं कि नहीं? आज भवानी मंदिर में स्वयं भवानी ही उस विग्रह में उपस्थित हो गई हैं, इसलिए उन्होंने अपनी माला सीताजी के गले में

डाल दी। **'खसी माल मूरति मुसुकानी' (1/236/5)।** अर्थात् माला को यहाँ से वहाँ करना, मुस्कराना यह पाषाण विग्रह नहीं कर सकता। सीताजी के अंश से असंख्य उमा, रमा, ब्रह्माणी उत्पन्न होती हैं और वही सीताजी अपने ऐश्वर्य को भूलकर इतने अनुराग से पूरी तन्मयता एवं भाव पूर्वक पूजा करती हैं कि स्वयं भवानी (पार्वतीजी) ही उस मंदिर में, विग्रह में निवास करने लगीं, अर्थात् वहाँ पर भवानी सदेह उपस्थित हैं तो फिर वह भवानी भवन, गौरि निकेता न होकर मंदिर कैसे लिखा जाए? गौरि निकेता अर्थात् सीताजी के अनुराग के कारण स्वयं गौरी यहाँ निवास करने लगी हैं।

अच्छा यह विचित्र बात नहीं है कि जो पूजा छोड़कर फुलवारी देखने गई, उसे भगवान मिल गए और जो मंदिर में पूजा कर रही हैं, उन्हें वही सखी भगवान के दर्शन कराने के लिए भगवान के पास ले जाती है।

एक सखी सिय संगु बिहाई। गई रही देखन फुलवाई।। (1/228/7)

यदि पूजा छोड़कर जो इधर उधर देखने लग जाए, यदि उसे ही भगवान मिलने लगें तो फिर पूजा करने की क्या आवश्यकता? सीताजी की एक सखी है वह तो पूजा छोड़कर (**सिय संगु बिहाई**) पुष्प वाटिका देखने गई और उसे भगवान मिल गए कि नहीं? सीताजी की उस सखी के शुद्ध हृदय पर विचार करें तो भाव सरिता प्राप्त होगी। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

एक सखी सिय संगु बिहाई। गई रही देखन फुलवाई।।
तेहिं दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहिं आई।। (1/228/7–8)
तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नैन।
कहु कारन निज हरष कर पूछहिं सब मृदु बैन।। (1/228)

सीताजी की सखी ने राम व लक्ष्मण दोनों भाइयों को देखा, किंतु उसके द्वारा दर्शन के बाद जो प्रतिक्रिया है वह भगवद्दर्शन करने के बाद वाली है। प्रेम विवश, पुलक गात, जल नैन, निज हरष और यह सब तब हो रहा है, जबकि वह मंदिर न जाकर बाहर देख रही है, क्योंकि सीताजी के सामने भवानी के साक्षात् दर्शन वाली स्थिति, इस सखी द्वारा उन्हें रामजी को दिखाने एवं वहाँ से पुनः वापस भवानी भवन आने पर हुई –

गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी।। (1/235/4)
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी।।

सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरऊ।। (1/236/4–6)

अर्थात् जब बाहर दर्शन हुआ तो फिर मंदिर के अंदर भी हुआ। इसका अर्थ बड़ा ही सांकेतिक और सूत्रात्मक यह है कि आवश्यक नहीं कि भगवान तुझे मंदिर के अंदर ही मिलेंगे, भगवान केवल दाता के रूप में ही मिलेंगे, बल्कि वे तो माली जैसे छोटे सेवक से माँगते हुए भी हो सकते हैं, यथा –

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन।। (1/228/1)

केवट को भी दाता के रूप में नहीं, बल्कि माँगने वाले के रूप में मिले, यथा –

मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।। (2/100/3)

कथन स्पष्ट है कि हम भगवद्दर्शन के लिए उनके मंदिर में तो जाते हैं इस विश्वास के साथ कि वहाँ भगवान मिलेंगे, किंतु यह भूल जाते हैं कि वे न जाने किस रूप में वहीं बाहर भी होंगे। मंदिर का स्थान अपने स्थान पर सही है, किंतु वे तो सर्वत्र व्याप्त हैं, यथा–

जहँ न होहु तहँ देहु कहि (2/127), न जाने किस रूप में मंदिर के बाहर भी याचक के रूप में भी मिल सकते हैं, क्योंकि '**जिन्हहि परम प्रिय खिन्न**'। **(1/18)**। इस संदर्भ में एक कवि की निम्नांकित पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं –

मैं खोजता तुझे था जब कुंज और वन में।
तू ढूँढ़ता मुझे था तब दीन के वतन में।।

मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता।।
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा।।
एक सखी सिय संगु बिहाई। गई रही देखन फुलवाई।। (1/228/5–7)

विचार करें कि सीताजी के साथ जो सखियाँ गई हैं वे तो सीमित हैं और उनमें से एक वहाँ से निकल गई, फिर भी किसी को पता नहीं चला अर्थात् मन चंचल नहीं हुआ, बल्कि **'पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा'** और अधिक अनुराग से पूजा की। वहीं हम लोग भी पूजा करने जाते हैं अथवा कथा श्रवण करने जाते हैं, किंतु ऐसी एकाग्रता रहती है क्या? इधर–उधर थोड़ी सी हलचल हुई कि पूजा से ध्यान भटक जाता है, किंतु सीताजी एवं उनकी उस सखी के अतिरिक्त जो सखियाँ हैं, उस एक सखी के चले जाने से ध्यान भंग

नहीं हुआ, बल्कि **पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा।** इसलिए चाहे पूजा कर रहे हो या कथा श्रवण, चित्त एवं मति को नियंत्रण में रखने पर ही उत्तम फल की प्राप्ति होती है, यथा –

लोकचिंता धनागार पुत्र चिंता व्युदस्य च।
कथा चित्त शुद्धमतिः स लभेत्फलमुत्तमम्।। (पद्म पुराण)

सीताजी ने **'पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा'** तो भगवान ने उस सखी के माध्यम से स्वयं की प्राप्ति अर्थात् अनुराग पूर्वक पूजा करने का फल (भगवद्दर्शन) का मार्ग प्रशस्त कर दिया। सीताजी द्वारा पूजा करने में पत्र, पुष्प आदि की अपेक्षा अनुराग की मात्रा अधिक है, क्योंकि रामजी को पाने के लिए केवल पूजन सामग्री ही नहीं, बल्कि अधिक से अधिक अनुराग की आवश्यकता होती है, क्योंकि **मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा (7/62/1)।** यही बात स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन से कही है कि जो कोई भक्त मेरे लिए पत्र–पुष्प या केवल जल ही प्रेमपूर्वक (अनुराग सहित) अर्पण करता है उसे मैं प्रीतिसहित ग्रहण करता हूँ, यथा –

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।। (गीता 9/26)

पूजन सामग्री बहुत हो लेकिन रामजी के प्रति अनुराग न हो तो सब व्यर्थ है और चूँकि सीताजी के अभीष्ट रामजी हैं, (देवर्षि नारदजी एवं याज्ञवल्क्यजी की भविष्यवाणी के अनुसार) अतः जो रामजी को प्रिय है पूजा में उन्होंने उसी की मात्रा अधिक रखी है। तो सीताजी ने **पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा।**

जिस प्रकार से काल स्वयं अपने हाथों किसी को नहीं मारता, बल्कि किसी को माध्यम बनाकर कार्य करता है, यथा –

काल दंड गहि काहु न मारा। हरइ धर्म बलु बुद्धि बिचारा।। (6/37/7)

इसी प्रकार से सफलता में भी भगवान किसी न किसी को माध्यम बना देते हैं। इसे इस प्रकार से कह सकते हैं कि **वह एक सखी भगवत्प्राप्ति का माध्यम बन गई।**

इस आलेख से यह संदेश देना चाहता हूँ कि **हमें पूजा करते समय या कथा श्रवण के समय एकाग्रता पर विशेष ध्यान देना चाहिए और यह एकाग्रता भगवत्प्रेम जाग्रत होने पर स्वतः आ जाएगी।**

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें

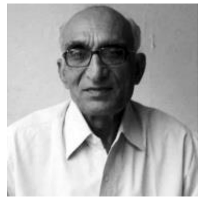

पं0 राधा कृष्ण पाठक (अतीत), भांडेर (दतिया) म0प्र0, फोनः 8770436182

परमपूज्य गोस्वामी तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस की रचना कर मानव समाज को जीवन की दिशाएँ प्रदान की हैं। हमें इस ग्रंथ का सतत अध्ययन करते रहना चाहिए। जीवन जीने के लिए जिन जिन सूत्रों की आवश्यकता है, उन सभी का समावेश श्रीरामचरितमानस में है और समाधान का उत्तम रास्ता भी दर्शाया गया है। हमारा अध्ययन केवल और केवल श्रीरामचरितमानस के पाठ तक सीमित नहीं होना चाहिए, मनन आवश्यक है, श्रद्धा रखना प्रथम सोपान है, लेकिन उन प्रासंगिक विषयों की गहराई में डुबकी लगाना जीवन की सार्थकता है। जब तक साहित्य हमारे अंदर जीवन में उतरता नहीं, पूर्ण लाभप्रद नहीं हो सकता। महात्मा तुलसीदासजी की लेखनी विनम्रता की सीढ़ी चढ़कर किस ऊँचाई तक पहुँची, यह उनका समर्पण भाव ही है, जिसने उस विषम काल में भी उनकी कृति को प्रतिष्ठा के उच्चतम सिंहासन पर बैठाया। वे दुर्जनों की भी वंदना करते हैं :–

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ। जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ।।
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें। उजरें हरष बिषाद बसेरें।। (1/4/1–2)

विनम्रता अवगुणों को गौण कर देती है तथा तब अप्रसन्न व्यक्ति भी कृपा कर देता है, किंतु माँगना केवल ईश्वर से ही चाहिए, क्योंकि मनुष्य से माँगी वस्तु भीख कहलाती है। यदि माँगना पड़े तो केवल ईश्वर से ही माँगना चाहिए, किंतु जहाँ सदैव कृपा ही बरसती रहती है, उससे संसार की चाहना उचित नहीं कही जा सकती। जो समर्थ है और हम उसी के हैं, तब अपना कष्ट किसको बताएँ, तब केवल समर्पण ही रास्ता है। श्रीरामचरितमानस के मंगलाचरण में तुलसीदासजी विनम्र भाव से भगवान शंकर पार्वती से माँग रहे हैं।

सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ।। (1/15)

पूज्य तुलसीदासजी की शब्द रचना का यदि हम विमर्श करें, तब उसके गूढ़ से गूढ़ भाव को ग्रहण कर सकते हैं। लिखते हैं ''**जो हर गौर पसाउ**'' यहाँ केवल इस ''पसाउ'' शब्द को प्रसन्नता के अर्थ में यदि सोचें तो विचार श्रद्धा और भाव को प्रदर्शित करता है। शब्द ''पसाउ'' का जब हम और विमर्श करते हैं, तब उसकी गहराई का पता लगता है। पसाउ या पसराना, प्रसिद्ध शब्द हमारे बुंदेलखंड के जन–जन में समाहित है। महात्मा तुलसीदासजी का जन्म और कर्म क्षेत्र भी यही धरा रही है। जनमानस की भाषा बोलियों का समावेश चाहे वह अवधी हो या बुंदेली हो, उन्होंने अपनी रचना में समाहित किया है, ताकि श्रीरामचरितमानस जन–जन तक पहुँचे। पसाउ या पसराना शब्द का स्रोत इस प्रकार से है। जब तक हमारी गौ माता पसरती नहीं, उसके थनों में दूध रहते हुए भी नहीं निकलता और वह तभी पसरती है जब उसके अंदर वात्सल्य उमड़ता है और वात्सल्य तभी उमड़ता है जब उसका बछड़ा या बछड़ी उसके समीप पहुँच जाते हैं। यही आशय है ''पसाउ'' का। इस प्रेम को या तो गाय माता समझती है या उसका बछड़ा बछड़ी, हम तो केवल क्रिया देखकर अंदाजा लगा लेते हैं। तुलसीदासजी अपनी रचना के लिए शिवा–शिव से ऐसी प्रसन्नता का प्रसाद माँग रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि माँगना हमारी आदत बन गई है। कर्म करने में सावधानी नहीं, ईश्वर के प्रति समर्पण नहीं, अपने कर्तापन का अहंकार लिए भटक रहे हैं। लेकिन जो इस बात को समझते हैं कि जब वह हमारा है, तब हम यदि उसके बताए रास्ते पर चलेंगे, तो संसार क्या? स्वर्ग भी दुर्लभ नहीं। नर–लीला करते हुए भगवान श्रीराम गंगा–पार जाने के लिए केवट से नाव माँगते हैं, देखिए जो राजपुत्र है, सर्वशक्तिमान है, वे केवट को आदेश न देते हुए नाव माँग रहे हैं, यही है आदर्श।' तुलसीदासजी की लेखनी का यही है सौंदर्य।

मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना। (2/100/3)

नाव से गंगाजी पार कर प्रभु श्रीराम केवट को उतराई स्वरूप मुद्रिका प्रदान कर रहे हैं, केवट से उतराई लेने को कहते हैं, तब देखिए केवट का भाव कितना प्रेरणादायक है। केवट क्या कोई भी समर्थ व्यक्ति से मूल्य से अधिक लेने की अपेक्षा करता है और फिर राजपुत्र से क्यों ना हो? लेकिन केवट जो कहता है, समझता है, स्वीकारता है, ईश्वर

का मरम जानता है और यही कारण है उसके माँगने के ढंग में सर्वश्रेष्ठता है। वह कहता है:–

नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा।।
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आज दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी।।
अब कुछ नाथ न चाहिए मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें ।। (2/102/5–7)

यही है माँगने का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण, एक निर्धन मजदूरी करने वाला विचारों का कितना श्रेष्ठ धनी है। श्रीरामचरितमानस के जो पात्र भगवान श्रीराम के संपर्क में आए, उन पात्रों में जो यह मानते हैं कि श्रीराम ब्रह्म का अवतार हैं, उन सभी पात्रों ने सांसारिक सुख भोग, अपनी समस्याओं का हल नहीं माँगा, अपितु भगवान के चरणों में अनुराग और भक्ति ही माँगी। लेकिन जिनके मन में उनके ईश्वर होने की शंका थी, उन्होंने संसार की पीड़ा हरण की माँग की। हमारे अंदर भी दो प्रकार की धारणाएँ चलती रहती हैं, द्वंद है, कभी भगवान पर विश्वास, कभी किसी चमत्कार पर विश्वास, मगर जो ईश्वर को समर्पित हो जाता है, उसका समस्त भार ईश्वर ले लेते हैं। उनकी घोषणा है :–

करउँ सदा तिन्ह कै रखबारी। जिमि बालक राखइ महतारी।। (3/43/5)

श्रीतुलसीदासजी के रामचरितमानस में अनुकरणीय चरित्रों की भरमार है। यही इस ग्रंथ का मूल है। यह प्राणियों को दिशा प्रदान करता है। प्रत्येक प्रसंग अनुकरणीय है। प्रसंग अरण्यकाण्ड का है। जनकनंदिनी सीता का हरण कर रावण ले जा रहा है, लेकिन रावण के बल से भयभीत जनकनंदिनी सीता की पीड़ा को जानते हुए भी सहायतार्थ कोई सामने नहीं आ रहा है। वहीं एक पक्षीराज जटायु यह जानते हुए कि रावण मेरा वध कर देगा, प्राणों की परवाह न करते हुए अपनी सामर्थ्यानुसार एक असहाय स्त्री को बलात ले जाने का विरोध करता है।

गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुलतिलक नारि पहिचानी।।
अधम निसाचर लीन्हें जाई। जिमि मलेछ बस कपिला गाई।। (3/29/7–8)

रावण गीधराज जटायु को पंख–विहीन कर घायल अवस्था में छोड़कर चला गया। जो होना था वही हुआ। आज समाज में हो रही ऐसी घटनाओं को मानव अकसर अनदेखा कर देता है। श्रीराम लक्ष्मण सीताजी को खोजते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं। जटायु–गीधराज

को राम राम सुमिरन करते देखकर वृत्तांत जाना, भगवान श्रीराम कहते हैं, हे! पक्षीराज जटायु..

राम कहा तनु राखहु ताता। मुख मुसुकाइ कही तेहिं बाता।।

जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा।।(3/31/5,6)

अवरिल भगति मागि बर गीध गयउ हरिधाम।

तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम।। (3/32)

जीवन जीने का मोह किसे नहीं? ज्ञानी से ज्ञानी, काल के भय से भयभीत हो जाता है। इधर गीधराज अपने को धन्य मान रहा है, अविरल भक्ति ऐसी भक्ति जो कभी भिन्न न हो, माँग रहा है। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य बात है, भाव भी है कि गीधराज जटायु अधम योनि से मुक्ति पाने के लिए भक्ति के ही रास्ते पर था।

भगवान श्रीराम आगे बढ़ते हैं, माता शबरी के आश्रम पर पधारते हैं। यहाँ माता शबरी के संकल्पित जीवन में केवल प्रभु श्रीराम के दर्शन की लालसा थी, वह पूरी हुई, अनिर्वचनीय हो गई, सुध बुध भूल गई, सेवा में लग गई। वह क्या माँगती? जो पाना था मिल गया। जब राम मिल गए फिर और कामना कैसे बनी रहती। भगवान के चरणानुराग में लीन हो गई। परमधाम मिल गया, जहाँ से आवागमन नहीं होता। श्रीरामचरितमानस के अनुसार–

सबरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए।। (3/34/6)

कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदयँ पद पंकज धरे।

तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहिं फिरे।।

नर बिबिध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू।

बिस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू।। (3/36/छंद)

जिसके जीवन का लक्ष्य ईश्वर को पाना है, उसकी अन्य याचनाएँ समाप्त हो जाती हैं। यही भक्ति का स्वरूप है। रामचरितमानस के पात्र पूर्ण ब्रह्मज्ञानी हैं, ब्रह्म के गुण धर्म को जानते हैं, लेकिन कर्म के प्रभाव से अहंकार का आवरण उनकी भक्ति में अवरोध बन गया था, क्योंकि अहंकार की प्रबलता इतनी बढ़ गई थी कि उससे उबरना कठिन हो गया था। फिर भी चाहत तो ईश्वर को पाने की ही थी। इसीलिए अहंकार का आवरण हटाने

के लिए दूसरी विधि के रास्ते का सहारा लेकर लक्ष्य तक पहुँचने में लगे थे। प्रसंग है सुग्रीव मिलन एवं मित्रता का, श्रीहनुमानजी महाराज का काम ईश्वर से मिलवाना है। बाली का वध, लेकिन बाली ने जब ब्रह्म को साक्षात सामने पाया, तब श्रीरामजी द्वारा उसके प्रश्न का उत्तर देने के बाद भी क्या कह रहा है देखिएः–

सुनत राम अति कोमल बानी। बालि सीस परसेउ निज पानी।।
अचल करौं तनु राखहु प्राना। बालि कहा सुनु कृपानिधाना।।
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं।।
जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अबिनासी।।
मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनाबा।। (4/10/1–5)

बाली ने माँगा तो वही जिसकी चाहत थी, संसार, कालिमा भरे अहंकार को और बढ़ाने क्यों मांगता। जिससे छुटकारा पाने के लिए दूसरी विधि को माध्यम बनाया था, देखिए बाली वही माँग रहा है।

अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ।
जेहिं जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ।। (4/10/छंद)

उपर्युक्त सभी प्रसंगों में पात्रों के चरित्र और समर्पण के भावों का दर्शन होता है। भगवत चरणों में समर्पण ही भवपार जाने का एक रास्ता है। जब भी माँगने की कामना हो, मुक्ति के लिए अविरल भक्ति ही माँगिए, जो कभी भिन्न नहीं होती। यही कल्याण का रास्ता है।

उल्लेखनीय है कि सभी प्रसंग, श्रीहनुमानजी महाराज, जो भगवान के अनन्य भक्तशिरोमणि हैं, की कृपा के बिना अधूरे हैं। उत्तरकाण्ड का प्रसंग–श्रीहनुमानजी सुग्रीव से क्या कह रहे हैं और उत्तर में सुग्रीव हनुमानजी को क्या कहते हैं, देखिए समर्पण और कर्तव्य परायण का आदर्श –

तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना।।
दिन दस करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरन देखिहउँ देवा।।
पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा।। (7/19/7–9)

उपर्युक्त सभी प्रसंगों से एक तथ्य स्पष्ट रूप से उभर कर आ रहा है कि भगवान से सांसारिक सुख भोग की माँग न करके केवल उनकी अविरल भक्ति ही माँगी जाए। जिन्होंने इसके अनुसार माँगा है, उनका जीवन धन्य हो गया और वे भवसागर पार करके भगवान के परमधाम के अधिकारी बन गए। अतः **मैं तो कहता हूँ, मत माँगिए कुछ, केवल भक्ति भाव से समर्पित हो जाइए, फिर आपको कुछ भी माँगना ही नहीं पड़ेगा।**

पृष्ठ 89 का शेष

होते हैं। राम–रावण युद्ध कई दिनों से चल रहा था और रामजी बहुत पहले से पैदल नंगे पांव रहे कि नहीं? देवतागण युद्ध को पहले दिन से ही देख रहे थे, किन्तु वे तब तक मदद करने को आगे नहीं आए, जब तक उन्होंने रामजी के सामर्थ्य का पलड़ा भारी नहीं देखा। देवन्ह प्रभुहि प्यादें देखा–'प्रभुहि' अर्थात् समर्थ को, सक्षम को देखा और युद्ध के इस पड़ाव पर अब देख लिया कि रामजी की विजय अब निश्चित है तब सहयोग को आगे आए।

जब मेघनाद–कुंभकर्ण सहित रावण की सारी सेना मारी गई और रावण अकेला बच गया तब :–

रावन हृदयँ बिचारा भा निसिचर संघार।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार।। (6/88)

इसके बाद देवताओं ने – **देवन्ह प्रभुहि प्यादें देखा।**

इसलिए कहा गया है कि :–

सबहिं जगावत सबल को निर्बल कोउ न सहाय।
पवन जगावत आग को दीपहिं देइ बुझाय।।

अर्थात् हवा सबल आग को जगा देती है और निर्बल दीपक को बुझा देती है। निर्बल की, असमर्थ की, भला कौन सहायता करता है? जी हाँ, इसलिए सबल बनें क्योंकि :–**निर्बल कोउ न सहाय।**

आँख में आँख डालकर देखें, आपको कैसा महसूस होता है। स्वयं में व समाज में बदलाव लाने के प्रयास जारी रखें।

मानस में वर्णित वंदनाएँ

डॉ. विनोद कुमार शर्मा ''पट्टोजी'' आगरा, फोनः 9897467073

तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस स्वयं में अथाह सागर है। रत्नों जैसी चमक लिए वर्णित **वंदनाएँ उसकी बहुमूल्य निधि** हैं। वे कलात्मक व भावनात्मक रूप से साधक को साध्य से जोड़ने का साधन हैं। उनका सस्वर गायन मन के तारों को झंकृत कर एक अद्भुत आनंद की अनुभूति प्रदान करता है। शब्द रूपी पुष्प गुथकर रूप, रंग व गंध से सुसज्जित सुंदर माला का निर्माण करते हैं। रूप छंद है, कला पक्ष रंग व भाव सुगंध है। मानस में वर्णित एक–एक वंदना भाँति–भाँति के शब्द रूपी फूलों से गुथित सुंदर–सुंदर हार है। मानस में विभिन्न प्रसंगों में प्रभु श्रीरामजी की वंदना की गई है। भक्तों द्वारा भगवान से की गईं **कुछ वंदनाएँ यहाँ प्रस्तुत** हैं :–

(1) माता कौसल्या द्वारा पुत्र जन्म पर जो वंदना की गयी है उसका आज भी राम नवमी के पावन पर्व पर भक्तों द्वारा घर–घर गायन कर राम जन्मोत्सव मनाया जाता है –

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।। (1/192/छंद)

माँ कौसल्या के मन में सर्वप्रथम पुत्र में ईश्वर का दर्शन और तदुपरांत बालक का रोदन सुन वात्सल्य भाव की उत्पत्ति एक अद्भुत घटना है।

(2) सच्चे मन से आराधना का भाव आते ही वाणी का अवरुद्ध होना, चक्षुओं से अश्रुधार बहना, सब कुछ स्थिर सा लगना, बहुत रोमांचक स्थिति होती है। भक्त की वह मूक हालत हो जाती है जैसे कोई स्वाद चख तो लेता है, पर बोल नहीं सकता। अमृत पान करते हुए भी बता नहीं सकता। अत्रि मुनि की भी भगवान राम के दर्शनोपरांत यही दशा थी। कुछ समय पश्चात् होश आने पर उनके मुखारविंद से जो वंदना निकली, उसके कुछ अंश प्रस्तुत हैं –

प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि।
मुनिबर परम प्रबीन जोरि पानि अस्तुति करत।। (3/3)
नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं।।
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं।। (3/4/छंद)
बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि।। (3/4)

(3) ऋषि अगस्त्य के शिष्य सुतीक्ष्ण द्वारा की गयी स्तुति में उनके द्वारा गायन व नृत्य ने भगवान राम को भी मोहित कर दिया और फिर उन्होंने श्रीरामजी को अपने आश्रम में ले जाकर उनकी विविध प्रकार से पूजा की, यथा –

तब मुनि हृदयँ धीर धरि गहि पद बारहिं बार।
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा बिबिध प्रकार।। (3/10)

तत्पश्चात् वे पुनः इस प्रकार से प्रभु की वंदना करते हैं –

कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी।। (3/11/1)

उनकी यह वंदना सुनकर श्रीरामजी ने उनसे वरदान माँगने को कहा। मुनि ने कहा कि प्रभु मैंने कभी कोई वर नहीं माँगा, क्योंकि मेरी समझ में यह नहीं आता कि क्या सच है और क्या झूठ है। यह सुनकर प्रभु ने उन्हें अविरल भक्ति का वरदान दिया, जिसे प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने कहा कि प्रभु अब मुझे आप यह वरदान दीजिए –

अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम।
मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम।। (3/11)

(4) भक्ति में धैर्य एवं प्रतीक्षा की बहुत आवश्यकता होती है। अनिश्चितकालीन इंतजार भी भक्तिमती शबरी के मनोबल को न डिगा सका। इसके परिणामस्वरूप एक दिन उसकी कुटिया पर श्रीरामजी पधारे, तब –

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि ।। (3/34)

शबरी कहती हैं –

अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी।। (3/35/3)

श्रीरामजी शबरी माता को समझाते हुए कहते हैं –

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता।। (3/35/4)

फिर नवधा भक्ति के उपदेश के साथ कवि ने उत्तम प्रसंग के माध्यम से भक्ति के नौ स्वरूपों का निरूपण किया है।

(5) उत्तरकांड में वर्णित गुरु व शिष्य के बीच अटूट प्रेम व स्नेह के बंधन का चित्रण अत्यंत ही मार्मिक रूप से किया गया है। गुरुजी की अवहेलना से रुष्ट शंकरजी द्वारा शापित अपने शिष्य को शाप से मुक्ति हेतु उनके द्वारा शिव की वंदना अति अतुलनीय है।

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।। (7/108/छंद)

(6) इसी प्रकार नारदजी, सनकादि, इंद्र, ब्रह्माजी, शिवजी वेद आदि द्वारा की गई वंदनाओं से महाकवि तुलसीदासजी ने श्रीरामचरितमानस को सुसज्जित किया है। महाकवि द्वारा बीच–बीच में प्रसंगानुसार हिंदी में वर्णित वंदनाओं के अतिरिक्त मानस के प्रत्येक काण्ड के प्रारंभ में संस्कृत भाषा में प्रस्तुत वंदनाएँ सौने में सुहागे की तरह हैं। बालकाण्ड में वर्णित कुछ वंदनाएँ प्रस्तुत हैं –

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि ।
मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ।।
भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वांतःस्थमीश्वरम्।।
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ।।

उपर्युक्त श्लोकों में क्रमशः सरस्वतीजी, गणेशजी, शंकर–पार्वतीजी आदिकवि वाल्मीकिजी व हनुमानजी की वंदना है। देववाणी संस्कृत में रचित इसी प्रकार की वंदनाओं से श्रीरामचरितमानस का प्रत्येक काण्ड झिलमिला रहा है। यह ग्रंथ विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है। तुलसी के आराध्य ''राम'' जनमानस के आराध्य हैं।

(7) **मैं भी अपने आराध्य को निम्नांकित प्रकार से कुछ श्रद्धासुमन अर्पित कर रहा हूँ –**

लेकर राम नाम का आश्रय तुलसी ने अलख जगाई है।
पैदा करके भक्ति भाव को धर्म की ज्योति जलाई है।।
बुझने नहिं देना है इसको सदा प्रज्वलित रखना है।
राम नाम की दियाबाती से अंधकार मिटाना है।।
जग है एक सरासर मिथ्या नाम राम ही सत्य है।
हृदय –कमल की खोल गांठ को देखो जग अनित्य है।।
राम नाम को रटते–रटते तर गए वाल्मीकि हनुमतादि।
रटता रहूँ यही नाम मैं फरियाद पट्टोजी की।।

पृष्ठ 121 का शेष

तो कहती है मैंने खा लिया था, उस समय लगता है झूठ बोलती है। बेटा अगर तुम्हारे घर का खर्च मिल जाये तो पढ़ाई करोगे? बिल्कुल नहीं, क्यों? पढ़ाई करने वाले गरीबों से नफरत करते हैं। अंकल, हमें किसी पढ़े हुए ने आज तक कभी नहीं पूछा, पास से गुजर जाते हैं। अजनबी हैरान भी था और शर्मिंदा भी।

फिर उसने कहा, हर दिन इस गुरुद्वारे में आता हूँ, कभी किसी ने नहीं पूछा – यहाँ सब आने वाले मेरे पिताजी को जानते थे, मगर हमें कोई नहीं जानता। बच्चा जोर–जोर से रोने लगा। अंकल जब बाप मर जाता है तो सब अजनबी क्यों हो जाते हैं? मेरे पास इसका कोई जबाव नहीं था। ऐसे कितने मासूम होंगे जो हसरतों से घायल हैं। बस एक कोशिश कीजिए और अपने आसपास ऐसे जरूरतमंद यतीमों, बेसहाराओं को ढूँढ़िए और उनकी मदद कीजिए।

मंदिर/गुरुद्वारे में सीमेंट या अन्न की बोरी देने से पहले अपने आस–पास किसी गरीब को देख लेना, शायद उसको आटे की बोरी की ज्यादा जरूरत हो, ऐसा करने से कहीं ऐसे बच्चों को अपना भगवान मिल जाए। कुछ समय के लिए एक गरीब–बेसहारा की आँख में आँख डालकर देखें, आपको कैसा महसूस होता है। स्वयं में व समाज में बदलाव लाने के प्रयास जारी रखें।

दोस्त, किताब, रास्ता और सोच! ये चारों जो जीवन में सही मिलें तो, जिंदगी निखर जाती है, वरना बिखर जाती है।

पन हमार सेवक हितकारी

श्रीमती कुसुम पटैरया, नोएडा, फोनः 9811201847

अखिल ब्रह्माण्ड नायक, कण–कण में व्याप्त निराकार ब्रह्म श्रीरामजी के रूप में सगुण–साकार क्यों हुए? इस प्रश्न का उत्तर देने हेतु भगवान शिवजी ने विभिन्न कारणों का वर्णन किया और पार्वतीजी से कहते हैं कि एक बार नारदजी का शाप भी श्रीरामावतार का कारण बना। यह सुनकर आश्चर्यचकित होकर पार्वतीजी कहती हैं कि ऐसा कौन सा अपराध रमापति ने कर दिया कि नारद जैसे ज्ञानी विष्णु भक्त को शाप देने के लिए बाध्य होना पड़ा। यहाँ पर यह विचारणीय है कि नारदजी गुरु हैं पार्वतीजी के और उनकी अपने गुरु के प्रति अटूट विश्वास के साथ इतनी निष्ठा है कि वे यह सोच ही नहीं सकतीं कि उनसे यह अपराध हो सकता है, बल्कि अपराध तो विष्णुजी ने किया होगा। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा।। (1/124/7)

इस प्रश्न के उत्तरस्वरूप शिवजी समझाते हैं कि किसी भक्त के हित में ईश्वर को जब कुछ करना होता है, तब वही होता है जो भगवान चाहते हैं, फिर उसमें इसका कोई मतलब नहीं होता कि कोई ज्ञानी है या मूढ़, यथा –

बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ न कोइ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ।। (1/124क)
राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई।। (1/128/1)

अब शिवजी नारद–शाप की कथा सुनाते हुए कहते हैं कि एक बार नारदजी हिमालय पर्वत की एक पवित्र गुफा के समीप गए। वहाँ पर बगल में ही गंगाजी की निर्मल धारा कल–कल करती हुई बह रही थी, बड़ा ही मनोरम प्राकृतिक दृश्य था। उस पावन गुफा में बैठकर नारदजी 'हरिस्मरण' करने लगे और उनकी समाधि लग गई। यद्यपि वे शापित थे कि एक घटी (24 मिनट) से अधिक किसी स्थान पर नहीं रुक सकते थे, किंतु 'हरिस्मरण' से शाप निष्प्रभाव हो गया, यथा –

सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी। सहज बिमल मन लागि समाधी।। (1/125/4)

नारदजी को समाधिस्थ देखकर देवराज इन्द्र को चिंता हुई कि कहीं नारदजी इन्द्रासन प्राप्ति की इच्छा से तो तप नहीं कर रहे और इस शंकाग्रस्त होने पर उन्होंने कामदेव को नारदजी की समाधि भंग करने को भेजा। उसने अनेक उपाय किए, पर नारदजी की समाधि भंग नहीं हुई। अंत में हारकर मुनि की शरण में जाकर क्षमायाचना करने लगा। इस घटना से नारदजी को अभिमान हो गया कि उन्होंने कामदेव को जीत लिया है। नारदजी ने विचार किया कि शिवजी पर भी कामदेव ने प्रहार किया था और उन्हें क्षोभ हो गया, किंतु मुझे तो ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, अतः यह समाचार सबसे पहले शिवजी को सुनाना चाहिए, यथा –

तब नारद गवने सिव पाहीं। जिता काम अहमिति मन माहीं।। (1/127/5)

उन्होंने संपूर्ण वृत्तांत शिवजी को सुनाया। तब शिवजी ने उनको समझाया कि जिस प्रकार यह कथा मुझसे कही है उस प्रकार से कभी भी विष्णुजी से नहीं कहना और यदि प्रसंग चले भी तो इसे छिपाने का प्रयास करना। शिवजी ने उचित शिक्षा दी, किंतु यह नारदजी को नहीं भाई और वे स्वयं क्षीरसागर पहुँच गए और अभिमान पूर्वक पूर्ण वृत्तांत सुनाने लगे। श्रीहरि समझ गए कि नारद के मन में अभिमान रूपी विशाल वृक्ष का अंकुर उत्पन्न हो गया है और उन्होंने निश्चय किया कि इस गर्वतरु के अंकुर को शीघ्र ही उखाड़ दूँगा, क्योंकि अपने भक्त के हित की रक्षा करना मेरा प्रण है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार–

करुनानिधि मन दीख बिचारी। उर अंकुरेउ गरब तरु भारी।।
बेगि सो मैं डारिहउँ उखारी। पन हमार सेवक हितकारी।। (1/129/4–5)

श्रीहरि की इच्छा के आगे फिर किसी की नहीं चलती। वे जिसको जैसे नचाना चाहें, नचाते हैं। ईश्वर की माया ने नारदजी के मार्ग में एक विशाल नगरी का निर्माण कर दिया और उस समय राजा शीलनिधि की कन्या विश्वमोहिनी का स्वयंवर रचा जा रहा था। ईश्वरीय प्रेरणा से नारदजी वहाँ पहुँच गए। शीलनिधि राजा ने उनका भव्य स्वागत किया और फिर अपनी पुत्री को बुलाकर उसकी हस्तरेखा देखने का निवेदन किया। हस्तरेखा देखकर नारदजी चकित होकर उसके गुण हृदय में धारण करके कुछ बनावटी गुण राजा को बताये, यथा–

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी। बड़ी बार लगि रहे निहारी।।
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने। हृदयँ हरष नहिं प्रगट बखाने।।
जो एहि बरइ अमर सोइ होई। समरभूमि तेहि जीत न कोई।।
सेवहिं सकल चराचर ताही। बरइ सीलनिधि कन्या जाही।।
लच्छन सब बिचारि उर राखे। कछुक बनाइ भूप सन भाषे।। (1/131/1–5)

यहाँ पर यह विचारणीय है कि नारदजी ने हस्तरेखा में क्या देखा। विद्वानों का मत है कि माया विमोहित होने के कारण उन्होंने उल्टा समझ लिया। वास्तव में वह कन्या और कोई नहीं, बल्कि ईश्वर की माया ही थी और माया का वरण तो केवल भगवान ही कर सकते हैं, पर अब नारदजी ने ठान लिया कि कैसे भी हो इस कन्या को मैं ही वरण करूँगा। उन्होंने विचार किया कि इस समय जप–तप करने का तो समय ही नहीं है, अतः केवल श्रीहरि को ही पुकारना चाहिए। उन्होंने भगवान को आर्त्त हृदय से स्मरण किया, तो श्रीहरि प्रकट हो गए। नारदजी ने पूर्ण वृत्तांत सुनाया और उनका रूप माँग लिया, ताकि वह कन्या उन्हें वरण कर सके। नारदजी ने इस प्रकार प्रार्थना की थी –

आपन रूप देहु प्रभु मोही। आन भाँति नहिं पावौं ओही।।
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।। (1/132/6–7)

यहाँ पर विचारणीय है कि नारदजी ने श्रीहरि से उनका रूप तो माँगा, पर साथ ही यह भी प्रार्थना की कि जिसमें मेरा कल्याण हो, वही आप करें। हमारे लिए भी यह संदेश है कि हम भगवान से अपनी इच्छानुसार मांग तो करें, पर यह भी साथ में प्रार्थना करें कि जिसमें हमारा कल्याण हो वही कीजिए। नारदजी को श्रीहरि ने अपना रूप हरि (बंदर) का दे दिया। वे हर्षित होकर स्वयंवर में पहुँचे। वहाँ पर शिवजी के दो गण भी उपस्थित थे, क्योंकि वे कौतुक देखना चाहते थे। कुछ विद्वानों का मत है कि ये दो शिवगण तभी से नारदजी के पीछे पड़े थे कि कुछ कौतुक देखने को मिलेगा। अब वे नारदजी की हँसी उड़ा रहे हैं। कहते हैं कि आपकी सुन्दरता को देखकर कन्या आपके गले में ही जयमाला डालेगी, पर ऐसा नहीं हुआ। उनके कुरूप को देखकर वह कन्या उस पंक्ति में ही नहीं गई जहाँ नारदजी बैठे थे। उसी समय श्रीहरि राजा के रूप में पधारे और उस कन्या ने उनके गले में वरमाला डाल दी, जिसे देखकर नारदजी अत्यंत विकल हो गए, तब शिवगणों

ने बताया कि अपना मुख तो दर्पण में देख लीजिए और ऐसा कहकर वे भाग गए। अब नारदजी ने जल में अपना मुख देखा तो बंदर का मुख दिखाई दिया, पर पुनः देखा तो अपना असली रूप देखा। इस घटना से नारदजी अत्यंत क्रोधित होकर श्रीहरि को शाप देने के उद्‌देश्य से चल दिए, यथा –

फरकत अधर कोप मन माहीं। सपदि चले कमलापति पाहीं।।

देहउँ श्राप कि मरिहउँ जाई। जगत मोरि उपहास कराई।। (1/136/2–3)

इस प्रसंग में यह विचारणीय है कि यदि एक सद्‌गुण हमारे अंदर आता है तो दूसरे सद्‌गुण स्वतः आने लगते हैं। इसी प्रकार से एक दुर्गुण आते ही अन्य दुर्गुण स्वतः आने लगते हैं। विचार कीजिए–नारदजी को अभिमान हुआ कामदेव विजय पर तो फिर मोह हो गया, मोहित हो गए विश्वमोहिनी को देखकर। इसके बाद इच्छा जाग्रत हुई उसे पाने की अर्थात् एक आशा लेकर श्रीहरि से प्रार्थना की। विश्वमोहिनी के न मिलने पर क्रोध हुआ और जब काम–मोह–क्रोध तीन शत्रु आ गए, तब वे भगवान के मार्ग पर कैसे चल सकते थे। काम–क्रोध आदि विचारों का पंथ तो नरक का बताया गया है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।

सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।। (5/38)

यही भाव गीता में भी कहा गया है, यथा –

क्रोधाद्भवति संमोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। (2/63)

इसीलिए श्रीहरि बीच रास्ते में ही प्रकट हो गए, क्योंकि जिस रास्ते (काम–मोह–क्रोध) पर वे चल रहे थे, उससे तो वे श्रीहरि तक कभी भी नहीं पहुँच सकते थे। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

बीचहिं पंथ मिले दनुजारी। संग रमा सोइ राजकुमारी।। (1/136/4)

विश्वमोहिनी के साथ श्रीहरि को देखकर नारदजी का क्रोध अत्यंत प्रबल हो गया और उन्होंने बहुत सी अनर्गल बातें करते हुए श्रीहरि को इस प्रकार से शाप दे दिया –

बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा। सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा।।
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी। करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी।।
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी। नारि बिरहँ तुम्ह होब दुखारी।। (1/137/6–8)

श्रीहरि ने शाप धारण करके अपनी माया की प्रबलता को रोक दिया और तब वहाँ से लक्ष्मी और विश्वमोहिनी अन्तर्धान हो गईं। श्रीहरि की माया का प्रभाव समाप्त होते ही नारदजी भगवान के चरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगे। श्रीहरि ने कहा कि यह सब मेरी इच्छा से हुआ है, ऐसा कहकर श्रीहरि भी अन्तर्धान हो गए। मुनि को शांत मन देखकर अब वे दोनों शिवगण आए और शाप निवारण हेतु प्रार्थना करने लगे। नारदजी ने कहा कि तुम दोनों राक्षस तो होओगे, किंतु बहुत वैभवशाली और बलवान होने से संपूर्ण विश्व को जीत लोगे और तब श्रीहरि मानव तन धारण करके तुम्हारा संहार करेंगे, जिससे तुम मुक्ति प्राप्त करोगे।

इस प्रसंग में विचारणीय है कि नारदजी को काम–विजय का अभिमान इसलिए हुआ कि उन्होंने इस पर विचार नहीं किया कि वे समाधिस्थ कैसे हो सके, क्योंकि उन्हें तो एक घटी (24 मिनट) से अधिक एक स्थान पर न टिक पाने का शाप था, पर **'सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी'** (1/125/4) इस तथ्य पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया अर्थात् यदि समाधिस्थ न होते तो फिर कुछ नहीं होता और समाधिस्थ हुए श्रीहरि के स्मरण से (ईश्वर कृपा से)। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि काम–विजय का श्रेय तो उनके **'हरिस्मरण'** का है, फिर व्यर्थ ही उन्होंने अभिमान किया और इतना कष्ट पाया। यही हाल हमारा है। कुछ भी सफलता हाथ लगी तो कहते हैं कि यह मेरा पुरुषार्थ है और यदि कुछ गड़बड़ हुआ तो अपनी त्रुटियों पर ध्यान न देकर कहते हैं, ऐसी ही होगी प्रभु इच्छा। इस संदर्भ में मानस की यह चौपाई अनुकरणीय है –

गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा।। (2/131/3)

अर्थात् यह समझना चाहिए कि यदि मुझमें कोई गुण है तो वह भगवत्कृपा से है और यदि कोई दोष है तो वह मेरे कारण है। इस भाव में रहने से कभी अभिमान नहीं होगा। विचार कीजिए बैंक का कैशियर दिन भर लाखों–करोड़ों रुपयों की गिनती करता है, पर उसको उस धनराशि से कोई लगाव नहीं रहता, बल्कि यह ध्यान रखता है कि यदि

लेन–देन में कोई भूल–चूक हो गई तो उसका हरजाना मुझे भुगतना पड़ेगा। इसी प्रकार से यदि हमें धन–सम्पत्ति प्राप्त हुई है तो उसका उचित ढंग से इस्तेमाल करना चाहिए, यह समझना चाहिए कि यह सब भगवान का है मैं तो उनके एक प्रबंधक के रूप में कार्य कर रहा हूँ। सदैव इस भाव में रहने से कभी धनवान होने का अभिमान नहीं आएगा।

हम सामान्य जन की तो कोई गिनती ही नहीं है, बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों को भी मायावश होकर काम–क्रोध–लोभ में फँसते देखा गया है। विश्वामित्रजी जैसे महान मुनि को मेनका ने मोह लिया और उनकी साधना भंग कर दी। मानस रोगों का वर्णन करते हुए काकभुशुण्डिजी कहते हैं कि सभी रोगी हैं, किंतु विरले ही इनको अपने में देख पाते हैं और देख लेने पर कुछ उपचार कर लेते हैं, पर ये मानस रोग जड़ से समाप्त नहीं होते हैं। सामान्य मानव की बात ही क्या, मुनियों के हृदय में भी ये बीज रूप में रहते हैं और विषयरूपी कुपथ्य पाकर अंकुरित हो जाते हैं। ईश्वर की कृपा से ही इनका नाश संभव है, यथा –

मानस रोग कछुक मैं गाए। हहिं सब कें लखि बिरलेन्ह पाए।।
जाने ते छीजहिं कछु पापी। नास न पावहिं जन परितापी।।
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे। मुनिहु हृदयँ का नर बापुरे।।
राम कृपाँ नासहिं सब रोगा। जौं एहि भाँति बनै संजोगा।। (7/122/2–5)

इस संदर्भ में कुछ लोगों का विचार है कि जब सब रामकृपा से ही होना है और वही होता है जो रामजी चाहते हैं, **'होइहि सोइ जो राम रचि राखा' (1/52/7),** तब फिर हमारे पुरुषार्थ करने से क्या लाभ, पर वे कर्म के सिद्धांत, **'करम प्रधान बिस्व करि राखा' (2/219/4)** को भूल जाते हैं, **अतः हमें पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। गीता में भी यही उपदेश है,** यथा –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।। (2/47)

दुनियाँ से बात करने के लिए फोन की जरूरत होती है, पर परमपिता परमात्मा से बात करने के लिए मौन की जरूरत होती है।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

स्थानीय कार्यालय : ए–447, सेक्टर–47, नोएडा–201 301

दूरभाष : 0120–4305457, 9811056467

वित्तीय वर्ष 2021–22 का आय–व्यय विवरण (राशि भारतीय रुपयों में)

क्र0सं0	आय विवरण	2021–22	क्र0सं0	व्यय विवरण	2021–22
1)	वर्ष के प्रथम दिन की स्थिति		1)	स्मारिका छपाई व्यय	1,10,000.00
	क) मियादी जमा खाता	4,47,000.00			
	ख) बैंक में चालू खाता	13,029.34			
	ग) नकद राशि	26,991.00			
2)	स्मारिका में विज्ञापन से प्राप्त राशि	–	2)	स्रोत पर आयकर (TDS)	–
3)	दान / आरती–मानस पाठ एवं सदस्यता शुल्क से प्राप्त राशि	51,227.00	3)	श्रीरामनवमी उत्सव एवं श्रीराम कथा आयोजन पर व्यय	8,871.00
4)	अन्य प्राप्तियाँ, आयकर रिफण्ड, बैंक ब्याज आदि	7,036.00	4)	टेलीफोन बिलों का भुगतान	10,433.09
5)	आयकर वापसी आवेदित (Applied for)	–	5)	विविध व्यय (बैंक चार्ज, डाक खर्च, वैबसाइट रखरखाव, संदेशवाहक पर खर्च आदि)	13,091.00 649.00
6)	प्रतिभूति वापसी (Security Refund)	–	6)	दान (Charity)	–
			7)	प्रतिभूति जमा	–
			8)	वर्ष के अंतिम दिन की स्थिति	
				क) मियादी जमा खाता	3,35,000.00
				ख) बैंक में बचत खाता	38,865.25
				ग) नकद राशि	28,374.00
	कुल योग	**5,45,283.34**		**कुल योग**	**5,45,283.34**

अध्यक्ष **महासचिव** **कोषाध्यक्ष** **कार्यकारी सदस्य** **चार्टर्ड लेखाकार**

श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र

श्रीरामचरितमानस एक महाकाव्य ही नहीं, बल्कि अखिल ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्रीराम का ग्रन्थावतार है। इसकी चौपाइयाँ, दोहे आदि सशक्त मंत्रों का संकलन है। इसकी चौपाइयाँ, दोहे, सोरठे सभी सरल मंत्र हैं। संस्कृत के मंत्र कठिन होते हैं, इससे हर एक को उनके उच्चारण में सुगमता नहीं होती, इसलिये जापक का मन उनमें पूरा नहीं लगता। साबर–मंत्र रूखे और कठिन शब्दावली से भरे होते हैं। उनमें भी मन नहीं लगता, परन्तु श्रीरामचरितमानस के ये मंत्र सरल, सरस और सार्थक हैं। जापक इनमें तन्मय हो जाता है। इच्छाशक्ति तल्लीन हो जाती है। इससे मनवांछित फल शीघ्र प्राप्त होता है।

रक्षा–रेखा :

मन्त्र सिद्ध करने के लिये या किसी संकटपूर्ण जगह पर रात्रि व्यतीत करने के लिये अपने चारों ओर रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिए। लक्ष्मणजी ने सीताजी की कुटी के आसपास जो रक्षा रेखा खींची थी, उसी लक्ष्य पर निम्नांकित रक्षा–मन्त्र बनाया गया है। इसे एक सौ आठ आहुति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिए।

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक।। (मानस 7/115/छंद)

इन मंत्रों को सिद्ध करके उनका जप करना अथवा मानस पाठ करते समय दोहा/सोरठा एवं चौपाइयों के बीच संपुट लगाने से इष्ट फल की अवश्य ही प्राप्ति होती है। मंत्र सिद्ध करने के लिए उपयुक्त मुहूर्त में रात्रि 10 बजे के बाद अष्टांग हवन सामग्री से इष्ट चौपाई अथवा दोहा/सोरठा से 108 आहुतियाँ देनी चाहिए। अष्टांग हवन सामग्री में चन्दन का बुरादा, तिल, शुद्ध घी, शक्कर, अगर, तगर, कपूर, शुद्ध केशर, नागर मोथा, पंच मेवा, जौ और चावल आते हैं। एक दिन हवन करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मंत्र (दोहा/चौपाई आदि) का प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिए, पर किसी भी स्थिति में 21 बार से कम जप न हो, इसका ध्यान रखें। सामान्यतया सवा लाख जप किया जाता है, पर इससे पहले ही यदि कार्य सिद्ध हो जाए तब भी अनुष्ठान पूरा करना चाहिए और जीवन पर्यन्त उस मंत्र को रोज स्मरण कर लेना चाहिए, ताकि मंत्र सिद्ध रहे।

इस सम्बन्ध में निम्नांकित नियम महत्त्वपूर्ण हैं :

1. पूर्ण श्रद्धा–विश्वास एवं समर्पण भाव से जप करें।
2. वाराणसी में भगवान शंकरजी ने मानस की चौपाइयों को मन्त्र शक्ति प्रदान की है, इसलिये वाराणसी की ओर मुख करके शंकरजी को साक्षी मानकर श्रद्धा से जप करना चाहिये।

3. जिस उद्देश्य के लिये जो चौपाई, दोहा या सोरठा जप करना बताया गया है, उसको सिद्ध करने के लिये अष्टांग हवन की सामग्री से उसी चौपाई, दोहे या सोरठे के द्वारा 108 आहुतियाँ देनी चाहिये। यह हवन केवल एक ही दिन करना है। शुद्ध मिट्टी की वेदी बनाकर उस पर अग्नि स्थापित करके उसमें आहुति देनी चाहिये। प्रत्येक आहुति के साथ चौपाई, दोहा, सोरठा आदि के अन्त में 'स्वाहा' बोलना चाहिये।

4. प्रत्येक आहुति लगभग 10 ग्राम की (सब चीजें मिलाकर) होनी चाहिये। इस हिसाब से 108 आहुति के लिये लगभग एक किलोग्राम सामग्री सब चीजें मिलाकर बना लेनी चाहिये। कोई चीज कम–ज्यादा हो तो कुछ आपत्ति नहीं। पंचमेवा में पिस्ता, बादाम, किशमिश (द्राक्षा), अखरोट और काजू ले सकते हैं। इनमें से कोई चीज न मिले तो उसके बदले में मिस्री मिला सकते हैं। केसर शुद्ध 3 ग्राम ही डालने से काम चल जायेगा, अधिक की आवश्यकता नहीं है।

5. हवन करते समय माला रखने की आवश्यकता एक सौ आठ की संख्या गिनने भर के लिये है। माला रखने में असुविधा हो तो गेहूँ, जौ या चावल आदि के 108 दाने रखकर उनसे गिनती की जा सकती है। करमाला का भी उपयोग कर सकते हैं।

6. बैठने के लिये आसन ऊन का अथवा कुशा का होना चाहिये।

7. मन्त्र सिद्ध करने के लिये यदि लंकाकाण्ड की चौपाई या दोहा हो तो उसका हवन शनिवार को करना चाहिये। दूसरे काण्डों के चौपाई–दोहे किसी भी दिन उपयुक्त मुहूर्त में हवन करके सिद्ध किये जा सकते हैं।

8. एक दिन हवन करने से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो, तब तक उस मन्त्र (चौपाई–दोहे आदि) का प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को, जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिये, अधिक कर सकें तो अधिक उत्तम। आप चाहें तो नियमित जप के अलावा भी दिनभर चलते–फिरते हुए उस चौपाई या दोहे का जप कर सकते हैं। जितना अधिक जप हो, उतना ही उत्तम है।

9. कोई दो तीन कार्यों के लिये दो तीन मन्त्रों का अनुष्ठान एक साथ करना चाहें तो कर सकते हैं, पर उन मन्त्रों को पहले अलग–अलग हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिये। हवन के द्वारा एक ही दिन में दो या तीन मंत्रों को सिद्ध कर सकते हैं।

10. स्त्रियाँ भी इस अनुष्ठान को कर सकती हैं, परन्तु रजस्वला होने की स्थिति में मानसिक जप किया जा सकता है, पर इस अवस्था में हवन नहीं करना चाहिये।

11. जप करते समय मन में यह विश्वास अवश्य रखना चाहिये कि भगवान श्रीसीताराम की अहैतुकी कृपा से मेरा कार्य अवश्य सफल होगा। विश्वासपूर्वक जप करने पर सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी।

12. अधिकांश मंत्र तथा उपर्युक्त नियम कल्याण के मासिक अंकों से लिए गए हैं।

13. जप करते समय यदि निम्नांकित बिन्दुओं का पालन करें तो सफलता शीघ्रता से प्राप्त होगी

(क) जप सूर्योदय से पूर्व करें।

(ख) पूर्व की ओर अथवा वाराणसी की ओर मुँह करके जप करें।

(ग) ऊन के आसन पर बैठें।

(घ) अपने सामने श्रीरामदरबार का चित्र रखें। एक लोटा जल अपने बाईं ओर रखें जिसे जप के पश्चात् किसी पौधे में डाल दें या सूर्य को अर्घ्य दें।

(ङ) अपनी दाईं ओर घी का दीपक जलाकर रखें।

विभिन्न कामनाओं की प्राप्ति हेतु मानस के कुछ सिद्ध मंत्र इस प्रकार हैं–

1. **असमंजस की स्थिति में परम कल्याण हेतु**

जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।। (1/132/7)

2. **शरणागत होकर संकट निवारणार्थ**

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ। एहि अवसर सहाय सोइ होऊ।। (1/132/2)

3. **सर्व मंगल कामना हेतु**

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी।। (1/112/4)

4. **श्रेष्ठ भक्ति की कामना**

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें।। (2/102/7)

5. **मानस का गायत्री मन्त्र**

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।। (1/18/7–8)

6. **संकट निवारणार्थ**

दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।। (5/27/4)

7. **जीविका प्राप्ति के लिए**

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।। (1/197/7)

8. **लक्ष्मी प्राप्ति हेतु**

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ। धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ।। (1/294/2–3)

9. शत्रुता नाश के लिए

बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।। (7/20/8)

10. यात्रा की सफलता के लिए

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।। (5/5/1)

11. परीक्षा में पास होने के लिए

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी।। (1/105/6)

मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती।। (1/28/3)

12. विद्या प्राप्ति के लिए

गुरुगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई।। (1/204/4)

13. आपसी सद्भाव (प्रेम) बढ़ाने के लिए

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।। (7/21/2)

14. विविध रोगों एवं उपद्रवों की शांति के लिए

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।। (7/21/1)

15. ईश्वर से अपराध क्षमा कराने के लिए

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता।। (1/285/6)

16. मन पसन्द वर की प्राप्ति हेतु

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।। (1/236/7)

17. मन पसन्द वधू की प्राप्ति हेतु

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।। (1/237/4)

18. अपने इष्ट की प्राप्ति हेतु

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।। (1/259/6)

19. विपत्ति निवारणार्थ

राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुखदायक।। (1/18/10)

20. भूत–प्रेत भगाने हेतु

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।। (1/17)

21. दरिद्रता नाश के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दबारि के।। (1/32/8)

22. सन्तान प्राप्ति के लिए

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना।। (1/193/3)

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।

सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान।। (1/200)

23. सुख सम्पत्ति प्राप्ति हेतु

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख सम्पति नाना बिधि पावहिं।। (7/15/3)

24. मुकदमा जीतने के लिए

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।। (4/30/4)

25. शत्रु को मित्र बनाने हेतु

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।। (5/5/2)

26. निन्दा निवृत्ति के लिए

रामकृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी।। (2/317/3)

27. विघ्न निवारणार्थ

सकल विघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही।। (1/39/5)

28. अकाल मृत्यु निवारणार्थ

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।

लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।। (5/30)

29. नजर झाड़ने के लिए

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननीं तृन तोरी।। (1/198/5)

30. खोयी हुई चीज पुनः प्राप्त करने हेतु

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू।। (1/13/7)

31. ऋद्धि–सिद्धि प्राप्त करने के लिए

साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।। (1/22/4)

32. उत्सव के अवसर प्राप्त करने हेतु

सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।

तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु।। (1/361)

33. मंगलमय विदेश यात्रा हेतु

चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई। चले हृदयँ अवधहिं सिरु नाई।। (2/83/2)

34. विरक्ति तथा श्रीसीताराम चरणों में प्रेम प्राप्ति के लिए

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति।। (2/326)

35. ज्ञान प्राप्ति के लिए

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।। (4/11/4)

36. भक्ति की प्राप्ति के लिए

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम।। (7/84 ख)

37. श्रीहनुमानजी को प्रसन्न करने के लिए

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।। (1/26/6)

38. श्रीसीतारामजी के दर्शन के लिए

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम।। (1/146)

39. सहज स्वरूप दर्शन के लिए

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना।। (1/146/8)

40. भगवत्स्मरण करते हुए आराम से शरीर त्याग करने के लिए

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग।। (4/10)

41. संशय निवृत्ति के लिए

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।। (1/114/1)

42. प्रभु–प्रेम में निरन्तर वृद्धि हेतु

सीता रामचरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें।। (2/205/2)

43. सुखद एवं ऐश्वर्यपूर्ण यात्रा के लिए

चलत बिमान कोलाहल होई। जय रघुबीर कहइ सबु कोई। (7/119/3)

हमारे भीतर जो सांस चल रही है वही परमेश्वर का सबसे बड़ा उपहार है कृपया कृतज्ञ हो जाएँ, जिंदगी ही समस्या है और जिंदगी ही निदान है।

शिक्षा और संस्कार जिंदगी जीने के मूल मंत्र हैं, शिक्षा कभी झुकने नहीं देगी और संस्कार कभी गिरने नहीं देंगे।

श्रीरामशलाका–प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावों को श्रीरामशलाका–प्रश्नावली का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, उसकी महत्ता एवं उपयोगिता से प्रायः सभी मानस प्रेमी परिचित होंगे। अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अंकित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालने की विधि तथा उसके उत्तर–फलों का उल्लेख कर दिया जाता हैं। श्रीरामशलाका–प्रश्नावली का स्वरूप इस प्रकार है–

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रहिं	बस	हि	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	इ	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म*	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	हुँ	ह	ब	ब	प	चि	स	हिं	स	तु
म	का	ा	र	र	म	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	ा
ता	रा	रे	री	ह्व	का	फ	खा	जू	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	जो	गो	न	मु	जि	यँ	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	मि	स	रि	ग	द	न्मु	ख	म	खि	जि	म	त	जं
सिं	ख	नु	न	को	मि	निज	र्क	ग	धु	ध	सु	का	स	र
गु	ब	म	अ	रि	नि	म	ल	ा	न	ढ़	ती	न	क	भ
ना	पु	व	अ	ा	र	ल	ा	ए	तु	र	न	नु	वै	थ
सि	हुँ	सु	म्ह	रा	र	स	स	र	त	न	ख	ा	ज	ा
र	ा	ा	ला	धी	ा	री	ा	हू	हीं	खा	जू	ई	रा	रे

इस रामशलाका–प्रश्नावली के द्वारा जिस किसी को जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान करना चाहिये।

तदनन्तर श्रद्धा–विश्वास पूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में अंगुली या कोई शलाका रख देनी चाहिये और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाये। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है, उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े, उसे भी लिख लेना चाहिये। इस प्रकार प्रति नवें अक्षर को क्रम से लिखते जाना चाहिये और तब तक लिखते जाना चाहिये, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अंगुली अथवा शलाका न पहुँच जाये। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते–पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायेगी, ये प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि किसी–किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (ा) और किसी–किसी कोष्ठक में दो–दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देनी चाहिये और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार गिनना चाहिये। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे, वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेनी चाहिये और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे, वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेने चाहिये।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई निकाल दी जाती है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के * इस चिह्न से संयुक्त 'म' वाले कोष्ठक में अँगुली या शलाका रखी और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन–गिनकर लिखता गया तो उत्तर स्वरूप चौपाई बन जायेगी–

हो इ है सो ई जो रा म * र चि रा खा । को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा षा ।।

यह चौपाई बालकाण्डान्र्तगत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्ता को इस उत्तर स्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होने में संदेह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

1. सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।।

स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में श्री सीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरी जी ने श्रीसीता जी को आशीर्वाद दिया है।

फल– प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

2. प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

स्थान– यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

फल– भगवान का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

3. उधरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।
स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग वर्णन के प्रसंग में है।

फल– इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में संदेह है।

4. बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।
स्थान– यह चौपाई भी बालकाण्ड के आरम्भ में ही सत्संग वर्णन के प्रसंग की है।

फल– खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होने में संदेह है।

5. मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू।।
स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में संत–समाज रूपी तीर्थ के वर्णन में है।

फल– प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

6. गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।
स्थान– यह चौपाई श्रीहनुमान जी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।

फल– प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

7. बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा।।
स्थान– यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावण की मृत्यु के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।

फल– कार्य पूर्ण होने में संदेह है।

8. सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।।
स्थान– यह चौपाई बालकाण्ड में पुष्प वाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्र जी का आशीर्वाद है।

फल– प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

इस प्रकार रामशलाका–प्रश्नावली से कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं; जिनमें सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तराशय संन्निहित हैं।

हनुमानजी को जानकी माता ने अनेक वरदान दिए, बल, बुद्धि, सिद्धि, अमरत्व आदि परंतु उन्हें प्रसन्नता नहीं हुई। अंत में जानकीजी ने श्रीरामजी का प्रेम, अखंड भक्ति का वर दिया। यह सुनकर वे अति प्रसन्न हो गए –

...। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।।
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना।। (5/17/3–4)

प्रह्लादजी ने भी कहा था कि हमारे मन में माँगने की कभी कोई इच्छा ही न उत्पन्न हो, **तब भगवान् ने अखंड भक्ति प्रदान की।**

विक्रम संवत् 2080 (सन् 2023–24) की प्रमुख तिथियाँ : एक दृष्टि में

मास/पक्ष	गणेशचतुर्थी	एकादशीव्रत	प्रदोषव्रत	मासशिव रात्रि	अमावस्या	व्रत की पूर्णिमा	संक्रान्ति
चैत्र शुक्ल		01.04.23	03.04.23			05.04.23	
वैशाख कृष्ण	09.04.23	16.04.23	17.04.23	18.04.23	20.04.23		14.04.23
वैशाख शुक्ल		01.05.23	03.05.23			05.05.23	
ज्येष्ठ कृष्ण	08.05.23	15.05.23	17.05.23	17.05.23	19.05.23		15.05.23
ज्येष्ठ शुक्ल		31.05.23	01.06.23			03.06.23	
आषाढ़ कृष्ण	07.06.23	14.06.23	15.06.23	16.06.23	18.06.23		15.06.23
आषाढ़ शुक्ल		29.06.23	01.07.23			02.07.23	
प्र.श्रावण कृष्ण	06.07.23	13.07.23	14.07.23	15.07.23	17.07.23		16.07.23
प्र.श्रावण शुक्ल		29.07.23	30.07.23			01.08.23	
द्वि.श्रावण कृष्ण	04.08.23	11.08.23	13.08.23	14.08.23	16.08.23		17.08.23
द्वि.श्रावण शुक्ल	20.08.23	27.08.23	28.08.23			30.08.23	
भाद्रपद कृष्ण	03.09.23	10.09.23	12.09.23	13.09.23	15.09.23		17.09.23
भाद्रपद शुक्ल	19.09.23	25.09.23	27.09.23			28.09.23	
आश्विन कृष्ण	02.10.23	10.10.23	12.10.23	12.10.23	14.10.23		17.10.23
आश्विन शुक्ल		25.10.23	26.10.23			28.10.23	
कार्तिक कृष्ण	01.11.23	09.11.23	10.11.23	11.11.23	13.11.23		16.11.23
कार्तिक शुक्ल		23.11.23	25.11.23			26.11.23	
मार्गशीर्ष कृष्ण	30.11.23	08.12.23	10.12.23	11.12.23	12.12.23		16.12.23
मार्गशीर्ष शुक्ल	16.12.23	22.12.23	24.12.23			26.12.23	
पौष कृष्ण	30.12.23	07.01.24	09.01.24	09.01.24	11.01.24		14.01.24
पौष शुक्ल		21.01.24	23.01.24			25.01.24	
माघ कृष्ण	29.01.24	06.02.24	07.02.24	08.02.24	09.02.24		13.02.24
माघ शुक्ल	13.02.24	20.02.24	21.02.24			23.02.24	
फाल्गुन कृष्ण	28.02.24	06.03.24	08.03.24	08.03.24	10.03.24		14.03.24
फाल्गुन शुक्ल		20.03.24	22.03.24			24.03.24	
चैत्र कृष्ण	28.03.24	05.04.24	06.04.24	07.04.24	08.04.24		

विक्रम संवत् 2080 वर्ष के व्रत एवं त्योहारों की सूची

शुभ संवत् 2080 शाके 1945 राजा बुधमन्त्री शुक्र समय वास रजक गृहे वाहन सिंचाणु रोहिणी का निवास तटे संवत्सर का नाम पिंगल

22 मार्च से 6 अप्रैल 2023 तक (चैत्र शुक्ल पक्ष) वसंत ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	बुधवार	22.03.2023	चैत्र नवरात्रारम्भ, संवत्सरारम्भ, कलश स्थापना, गुडी पड़वा, श्री झूलेलाल ज0, गौतम जयन्ती, जल दिवस
द्वितीया	गुरुवार	23.03.2023	पंचक समाप्त 14/7, चन्द्रदर्शन, सिंधारा दोज, मीरा ज0
तृतीया	शुक्रवार	24.03.2023	गणगौर पूजन मेला (राज0) श्रीमत्स्य जयन्ती
चतुर्थी	शनिवार	25.03.2023	दमनक चतुर्थी व्रत
पंचमी	रविवार	26.03.2023	श्रीपंचमी, हयव्रत, रोहिणीव्रत, श्रीरामजन्मोत्सवारंभ
षष्ठी	सोमवार	27.03.2023	यमुना–स्कन्दषष्ठी
अष्टमी	बुधवार	29.03.2023	नवपद ओलीप्रा. जैन, अशोकाष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, तारा जयन्ती, मनसादेवी, अन्नपूर्णा पूजा
नवमी	गुरुवार	30.03.2023	श्रीरामनवमीव्रतोत्सव, मानस जयन्ती, बुधोदयपश्चिम
दशमी	शुक्रवार	31.03.2023	धर्मराजदशमी
एकादशी	शनिवार	01.04.2023	कामदाएकादशी व्रतस्मार्त, फूलडोल 11
द्वादशी	रविवार	02.04.2023	श्रीविष्णु 12 हरिदमनोत्सव
त्रयोदशी	सोमवार	03.04.2023	सोम प्रदोष व्रत, अनंग 13,
त्रयोदशी	मंगलवार	04.04.2023	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)
चतुर्दशी	बुधवार	05.04.2023	सत्यव्रत, श्रीशिवदमनक 14, बालासुन्दरीदेवी
पूणिमा	गुरुवार	06.04.2023	चैत्री पूर्णिमा, श्रीहनुमान जयंती, वैशाखस्नान प्रा.

7 अप्रैल से 20 अप्रैल 2023 तक (वैशाख कृष्ण पक्ष) वसंत ऋतु रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शुक्रवार	07.04.2023	गुडफ्राईडे, विश्व स्वास्थ्य दिवस
द्वितीया	शनिवार	08.04.2023	जल संसाधन दिवस
तृतीया	रविवार	09.04.2023	ईस्टरसन्डे, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 22/3, सौर्य दिवस
पंचमी	मंगलवार	11.04.2023	गुरुतेगबहादुर जयंती
सप्तमी	बुधवार	12.04.2023	श्री गुरुअर्जनदेव जयंती
अष्टमी	गुरुवार	13.04.2023	श्रीशीतलापूजा, बूढ़ाबासोड़ा, कालाष्टमी
नवमी	शुक्रवार	14.04.2023	श्रीचण्डिकानवमी
दशमी	शनिवार	15.04.2023	पंचक प्रा. 18/42
एकादशी	रविवार	16.04.2023	वरूथिनीएकादशीव्रत सर्वे, श्रीबल्लभाचार्य जयंती
द्वादशी	सोमवार	17.04.2023	सोम प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	मंगलवार	18.04.2023	मास शिवरात्रिव्रत, पुरातत्वरक्षणदिवस
चतुदर्शी	बुधवार	19.04.2023	पंचक समाप्त 23/52, पितृकार्येऽमापुण्यः
अमावस्या	गुरुवार	20.04.2023	श्रीशुकदेवमुनि जयन्ती, देवकार्येऽमापुण्यः
21 अप्रैल से 5मई 2023 तक (वैशाख शुक्ल पक्ष) ग्रीष्म ऋतु रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शुक्रवार	21.04.2023	ऋषिपाराशर ज0, गुरुअंगददेव जयन्ती
द्वितीया	शनिवार	22.04.2023	वीरशिवाजी ज0, अक्ष्यतृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती,
तृतीया	रविवार	23.04.2023	बाबूकुँवरसिंह जयन्ती, रोहिणी व्रत
पंचमी	मंगलवार	25.04.2023	आदिशंकराचार्य जयन्ती, श्रीसूरदास जयन्ती
षष्ठी	बुधवार	26.04.2023	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीगंगासप्तमी, गंगोत्पतिः
अष्टमी	शुक्रवार	28.04.2023	देवीबगलामुखी जयन्ती
नवमी	शनिवार	29.04.2023	श्रीजानकी नवमी, वैष्णोत्सवः
दशमी	रविवार	30.04.2023	श्रीमहावीरकेवलज्ञान जैन
एकादशी	सोमवार	01.05.2023	मोहिनी एकादशी व्रत सर्वे, श्रमिक दिवस
त्रयोदशी	बुधवार	03.05.2023	प्रदोषव्रत, देवीछिन्नमस्ता ज0, सौर ऊर्जा दिवस
चतुर्दशी	गुरुवार	04.05.2023	श्रीनृसिंह जयन्ती, गुरुअमरदास जयंती
पूणिमा	शुक्रवार	05.05.2023	वैशाखस्नानपूर्ण, सत्यव्रत पूनो, बुधपूर्णिमा ज0, पीपल पूजनं, कूर्म ज0, यमप्रीतियर्थ जलकुम्भ दानं

6 मई से 19 मई 2023 तक (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष) ग्रीष्म ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शनिवार	06.05.2023	जिनवरव्रत प्रारम्भ (जैन)
द्वितीया	रविवार	07.05.2023	श्रीनारद जयन्ती, वीणा–दान, कविटैगोर जयंती, वृन्दावन परिक्रमा
तृतीया	सोमवार	08.05.2023	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 22/5, मदर्सडे
चतुर्थी	मंगलवार	09.05.2023	बुढ़वामंगल
सप्तमी	शुक्रवार	12.05.2023	पंचक प्रारम्भ 24/18, कालाष्टमी, संतदादूदयाल पुण्यः
अष्टमी	शनिवार	13.05.2023	एकता दिवस
एकादशी	सोमवार	15.05.2023	अपराएकादशीव्रत, विश्व परिवार दिवस, रूकमणी हरण लीला
त्रयोदशी	बुधवार	17.05.2023	प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि, पंचक समाप्त 07/38, सावित्री व्रतारम्भः
चतुर्दशी	गुरुवार	18.05.2023	जयगुरुदेव पुण्यः, फलाहारिणी कालिका पूजा
अमावस्या	शुक्रवार	19.05.2023	भावुका अमावस्या, वटसावित्रीव्रत, शनि जयन्ती, मेला शनि शिंगणापुर

20 मई से 4 जून 2023 तक (ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष) ग्रीष्म ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शनिवार	20.05.2023	करवीर व्रत, रोहिणीव्रत, दशाश्वमेधघाट स्नानारंभ
द्वितीया	रविवार	21.05.2023	चन्द्रदर्शन
तृतीया	सोमवार	22.05.2023	रम्भातीजव्रत, श्रीमहाराणा प्रताप ज0 484वीं मेवाड़
चतुर्थी	मंगलवार	23.05.2023	शहीदी गुरुअर्जुनदेव, बुढ़वा मंगल
पंचमी	बुधवार	24.05.2023	श्रुतिपंचमी (जैन)
षष्ठी	गुरुवार	25.05.2023	अरण्यषष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, जामित्रषष्ठी
सप्तमी	शुक्रवार	26.05.2023	बड़ पूजा (भिंड)
सप्तमी	शनिवार	27.05.2023	श्रीनेहरूपुण्यः
अष्टमी	रविवार	28.05.2023	श्रीदुर्गाष्टमी, देवी धूमावतीतीज, मेला क्षीरभवानी, वीर सावरकर जयंती
नवमी	सोमवार	29.05.2023	श्रीमहेश नवमी, माहेश्वरीवंशे, दहीचूड़ामहोत्सवारंभ
दशमी	मंगलवार	30.05.2023	श्रीगंगादशहरा, बटुकभैरव जयन्ती, रामेश्वरप्रतिष्ठा दिवस, आचार्य श्रीरामपुण्यः
एकादशी	बुधवार	31.05.2023	निर्जलाएकादशीव्रत सर्वे, भीमसैनी ग्यारस, तम्बाकू निषेध दिवस
द्वादशी	गुरुवार	01.06.2023	प्रदोषव्रत, चम्पक द्वादशी, मेला खाटूश्याम
त्रयोदशी	शुक्रवार	02.06.2023	सावित्री व्रतारम्भः, बाबाबालकनाथ जयंती
चतुर्दशी	शनिवार	03.06.2023	सत्यव्रत
पूणिमा	रविवार	04.06.2023	पूर्णिमापुण्यः, संतकबीर जयंती, बाबाअमरनाथपूजा, श्रीजगन्नाथस्नान यात्रारंभः

5 जून से 18 जून 2023 तक (आषाढ़ कृष्ण पक्ष) ग्रीष्म ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	सोमवार	05.06.2023	गुरुहरगोविन्द जयन्ती, विश्वपर्यावरण दिवस, सघनवृक्षासंकल्पे
चतुर्थी	बुधवार	07.06.2023	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 22/51
षष्ठी	शुक्रवार	09.06.2023	पंचक प्रारम्भ 6/03
सप्तमी	शनिवार	10.06.2023	कालाष्टमी व्रत
नवमी	सोमवार	12.06.2023	बालश्रम निषेध दिवस
दशमी	मंगलवार	13.06.2023	पंचक समाप्त 13/31
एकादशी	बुधवार	14.06.2023	योगिनीएकादशीव्रत सर्वे, बाबा देवराहापुण्यः, रक्तदान दिवस
द्वादशी	गुरुवार	15.06.2023	प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	शुक्रवार	16.06.2023	मासशिवरात्रि, सौभाग्य सूचक रोहिणव्रत
चतुर्दशी	शनिवार	17.06.2023	पितृकार्येअमावस्या
अमावस्या	रविवार	18.06.2023	देवकार्येऽपुण्यः, रानी झांसी पुण्यः

19 जून से 3 जुलाई 2023 तक (आषाढ़ शुक्ल पक्ष) ग्रीष्म ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	सोमवार	19.06.2023	गुप्तनवरात्रविधान (मिथिलांचल)
द्वितीया	मंगलवार	20.06.2023	स्पष्ट चन्द्रदर्शन, श्री जगन्नाथजी रथयात्रा, मनोरथ द्वितीया
तृतीया	बुधवार	21.06.2023	गुड़ीचाउत्सव (पुरी), श्रीबल्लभाचार्य पुण्यः, योगदिवस
चतुर्थी	गुरुवार	22.06.2023	स्वामीविवेकानंद स्मृतिदिवस
पंचमी	शुक्रवार	23.06.2023	द्वारकाधीश पाटोत्सव, हेरापंचमी (उड़ीसा)
षष्ठी	शनिवार	24.06.2023	कौमारिकीषष्ठी, महावीरस्वामी गर्भकल्याणक जैन
सप्तमी	रविवार	25.06.2023	विवस्वत सप्तमी सूर्यपूजा
अष्टमी	सोमवार	26.06.2023	अष्ट्राह्विकापर्व जैन, नशानिरोधदिवस
नवमी	मंगलवार	27.06.2023	भड्डली नवमी, मेला शरीफ भवानी
दशमी	बुधवार	28.06.2023	उल्टारथ बहुडायात्रा (पुरी)
एकादशी	गुरुवार	29.06.2023	शयनीएकादशीव्रत, देवशयनोत्सव
त्रयोदशी	शनिवार	01.07.2023	प्रदोषव्रत, डाक्टर्सडे
चतुर्दशी	रविवार	02.07.2023	चौमासी 14, कोकिलाव्रत, जैनमुनीनांचातुर्मास प्रारंभ
पूणिमा	सोमवार	03.07.2023	गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, शिवश्यनोत्सव, वायु परीक्षा, परिक्रमा गोवर्धन

4 जुलाई से 17 जुलाई 2023 तक (प्र0 श्रावण कृष्ण पक्ष) वर्षा ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	मंगलवार	04.07.2023	अशून्यशयनव्रतारंभ, महर्षिविवेकानंदपुण्यः
तृतीया	गुरुवार	06.07.2023	पंचक प्रारम्भ 13/40, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 22/13
पंचमी	शुक्रवार	07.07.2023	नागपंचमी
सप्तमी	रविवार	09.07.2023	कालाष्टमी
अष्टमी	सोमवार	10.07.2023	पंचक समाप्त 18/58, राजेश्वरानंदमहादेव पूजा (आगरा)
नवमी	मंगलवार	11.07.2023	गुरु हरकिशन जयंती, विश्व जनसंख्यादिवस
एकादशी	गुरुवार	13.07.2023	कामिका एकादशीव्रत सर्वे, स्वामीकल्याणकदेवपुण्यः
द्वादशी	शुक्रवार	14.07.2023	प्रदोषव्रत, रोहिणीव्रत
त्रयोदशी	शनिवार	15.07.2023	मास शिवरात्रिव्रत, श्रीगंगाजल से रूद्राभिषेक
अमावस्या	सोमवार	17.07.2023	सोमोती हरियाली अमावस्या, बलकेशमंदिरपूजा आगरा

18 जुलाई से 1 अगस्त 2023 तक (प्र0 श्रावण शुक्ल पक्ष) वर्षा ऋतु,रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	मंगलवार	18.07.2023	पुरुषोत्तम (अधिक) मासारम्भः
पंचमी	रविवार	23.07.2023	श्रीतिलकजयंती, श्रीचन्द्रशेखर जयंती
सप्तमी	मंगलवार	25.07.2023	स्वामीअखण्डानन्द जयंती
एकादशी	शनिवार	29.07.2023	कमलापुरुषोत्तमाएकादशीव्रत सर्वे
द्वादशी	रविवार	30.07.2023	प्रदोषव्रत
पूणिमा	मंगलवार	01.08.2023	सत्यव्रतपूर्णिमा, श्रीतिलकपुण्यः

सिर्फ धोखा देना ही धोखा नहीं होता, बल्कि किसी के साथ अपनेपन का नाटक करना उससे भी बड़ा धोखा होता है।

2 अगस्त से 16 अगस्त 2023 तक (द्वि श्रावणकृष्ण पक्ष) वर्षा ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	बुधवार	02.08.2023	पंचक प्रारंभ 23/26
तृतीया	शुक्रवार	04.08.2023	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 21/22
पंचमी	रविवार	06.08.2023	पंचक समाप्त 25/43
सप्तमी	सोमवार	07.08.2023	श्रीटैगोर पुण्यः
अष्टमी	मंगलवार	08.08.2023	कालाष्टमीव्रत
नवमी	बुधवार	09.08.2023	राष्ट्रीय क्रांति दिवस
दशमी	गुरुवार	10.08.2023	सौभाग्य सूचक रोहिणव्रत
एकादशी	शुक्रवार	11.08.2023	कमलापुरुषोत्तमाएकादशीव्रत स्मार्त्तनाम्
एकादशी	शनिवार	12.08.2023	कमलापुरुषोत्तमाएकादशी वैष्णवानाम्
द्वादशी	रविवार	13.08.2023	प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	सोमवार	14.08.2023	मासशिवरात्रि
चतुर्दशी	मंगलवार	15.08.2023	स्वतंत्रतादिवस 77वाँ, ध्वजारोहणम्
अमावस्या	बुधवार	16.08.2023	अमापुण्यः, पुरुषोत्तममास समाप्त
17 अगस्त से 31 अगस्त 2023 तक (द्वि श्रावणशुक्ल पक्ष) वर्षा ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	गुरुवार	17.08.2023	नक्तव्रतारम्भ
द्वितीया	शुक्रवार	18.08.2023	चन्द्रदर्शन, सिंधारा 2, स्वामीकरपात्री जयंती
तृतीया	शनिवार	19.08.2023	मधुश्रवातीज, हरियाली तीज, स्वर्णगौरीव्रत
चतुर्थी	रविवार	20.08.2023	विनायक चतुर्थी, वरद 4, श्रवणतपजैन
पंचमी	सोमवार	21.08.2023	नागपंचमी देशाचारे, श्रीअमरनाथ यात्रारम्भः, बुजुर्गदिवस
षष्ठी	मंगलवार	22.08.2023	वर्णश्रृयालषष्ठी, श्रीकल्कि जयंती
सप्तमी	बुधवार	23.08.2023	श्रीतुलसीदास जयंती, शीतला सप्तमी
अष्टमी	गुरुवार	24.08.2023	दुर्गाष्टमी (सिंध), मेलानयनादेवी, दुर्वाष्टमी, चिंतपूर्णी
एकादशी	रविवार	27.08.2023	पवित्राएकादशीव्रत
द्वादशी	सोमवार	28.08.2023	श्रीविष्णुपवित्रार्पण, दधित्यागव्रत प्रा., सोमप्रदोषव्रत
त्रयोदशी	मंगलवार	29.08.2023	अगस्ततारा उदय, ओनम पर्व, हयग्रीवोत्पत्तिय दैनीमं मंदिर में पूजा
चतुर्दशी	बुधवार	30.08.2023	पंचक प्रारंभ 10/17, श्रावणी उपाकर्म, रक्षाबंधन, सत्यव्रत
अमावस्या	गुरुवार	31.08.2023	ऋषितर्पण, श्रीगायत्री जयंती, अमरनाथ दर्शन, संस्कृत दिवस कोकिलाव्रत पूर्ण।

1 सितम्बर से 15 सितम्बर 2023 तक (भाद्रपद कृष्ण पक्ष) शरद ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
द्वितीया	शुक्रवार	01.09.2023	अशून्यशयनव्रत पूर्ण, भीमचण्डी, विन्ध्या जयन्ती
तृतीया	शनिवार	02.09.2023	कज्जलीतीज, सम्राटमिहिरगूर्जर जयंती
चतुर्थी	रविवार	03.09.2023	पंचक समाप्त 10 / 37, बहुला चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 20 / 59
पंचमी	सोमवार	04.09.2023	हलचन्दन षष्ठी, चन्द्रोदय 21 / 35
षष्ठी	मंगलवार	05.09.2023	ललहीछटि, पूजा गोरखपुर, शिक्षकदिवस, विश्वशांतिदिवस
सप्तमी	बुधवार	06.09.2023	द्रोण मेला दनकौर, श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत स्मार्त्त, चन्द्रोदय 22 / 57
अष्टमी	गुरुवार	07.09.2023	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत वैष्णव, चन्द्रोदय 23 / 45, रोहणीव्रत,संतज्ञानेश्वर जयन्ती
नवमी	शुक्रवार	08.09.2023	गोगा नवमी, नन्दोत्सवः नन्दगाँव, विश्व साक्षतरतादिवस, स्वामीशिवानंद जयंती
दशमी	शनिवार	09.09.2023	पंतजयंती
एकादशी	रविवार	10.09.2023	अजाएकादशीव्रत सर्वे
द्वादशी	सोमवार	11.09.2023	गोवत्सपूजा, बछबारस, पर्यूषण पर्व जैन, विनोबा ज0
त्रयोदशी	मंगलवार	12.09.2023	भौम प्रदोषव्रत, कृष्ण छटी पूजन
चतुर्दशी	बुधवार	13.09.2023	अघोरा चौदस, कैलाश यात्रा, मास शिवरात्रि
अमावस्या	गुरुवार	14.09.2023	कुशोत्पाटिनी, पिठौरी 30, हिंदीदिवस
अमावस्या	शुक्रवार	15.09.2023	स्नानादिअमापुण्यः सती पूजा, मेला सुथरेशाह मंदिर दिल्ली
16 सितम्बर से 29 सितम्बर 2023 तक (भाद्रपद शुक्ल पक्ष) शरद ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शनिवार	16.09.2023	नक्तव्रत पूर्ण, चन्द्रदर्शन
द्वितीया	रविवार	17.09.2023	सामवेदीयउपाकर्म, विश्वकर्मा पूजा
तृतीया	सेमवार	18.09.2023	हरितालिका व्रत, वराह जयन्ती
चतुर्थी	मंगलवार	19.09.2023	श्रीगणेशजन्मोत्सव, पत्थर चौथ, कलंक चौथ, चन्द्रदर्शन निषेध
पंचमी	बुधवार	20.09.2023	ऋषि पंचमी, जैन संवत्सरी, पर्युषण प्रा0, क्षमावाणी पर्व
षष्ठी	गुरुवार	21.09.2023	सूर्यषष्ठीव्रत, बलदेवछटि, मेला वाराणसी, महालक्ष्मी व्रतारम्भ
सप्तमी	शुक्रवार	22.09.2023	मुक्ताभरण संतान सप्तमी
अष्टमी	शनिवार	23.09.2023	महालक्ष्मीव्रत पूर्ण, श्रीराधाष्टमी व्रतोत्सव, श्रीदधीच जयन्ती, स्वामी हरिदास जयन्ती
नवमी	रविवार	24.09.2023	श्रीचन्दनवमी जन्मोत्सव, श्रीभागवत सप्ताह प्रा0
दशमी	सोमवार	25.09.2023	जलझूलनीएकादशीव्रत स्मार्त्त, श्रीनवल दुर्ग मेला।
द्वादशी	मंगलवार	26.09.2023	श्रीवामन जयन्ती, दधित्याग व्रत पूर्ण, पंचक प्रारम्भ 20 / 25
त्रयोदशी	बुधवार	27.09.2023	प्रदोषव्रत, पर्यटन दिवस
चतुर्दर्शी	गुरुवार	28.09.2023	सत्यव्रत, भगत सिंह ज0, अनन्त चतुर्दशी, श्रीगणेशविसर्जन
पूणिमा	शुक्रवार	29.09.2023	प्रौष्ठपदी पूर्णिमा, महालयारम्भ

30 सितम्बर से 14 अक्टूबर 2023 तक (आश्विन कृष्ण पक्ष) शरद ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शनिवार	30.09.2023	पितरपक्षारम्भः, प्रतिपदा–द्वितीया श्राद्ध, पंचक समाप्त 21/7
द्वितीया	रविवार	01.10.2023	तृतीया श्राद्ध, रक्तदान दिवस
तृतीया	सोमवार	02.10.2023	चतुर्थी श्राद्ध, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 20/7, गांधी व शास्त्री ज0
पंचमी	मंगलवार	03.10.2023	पंचमी का श्राद्ध
षष्ठी	बुधवार	04.10.2023	षष्ठी का श्राद्ध, रोहिणीव्रत, पशुकल्याण दिवस
सप्तमी	गुरुवार	05.10.2023	सप्तमी का श्राद्ध, वरिष्ठ नागरिकदिवस
सप्तमी	शुक्रवार	06.10.2023	अष्टमी का श्राद्ध, जीवितपुत्रिकाव्रत, कालाष्टमीव्रत
अष्टमी	शनिवार	07.10.2023	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध
नवमी	रविवार	08.10.2023	दशमी का श्राद्ध, वायुसेना दिवस
दशमी	सोमवार	09.10.2023	एकादशी श्राद्ध, विश्व डाक दिवस, गुरु रामदास जयंती
एकादशी	मंगलवार	10.10.2023	इन्दराएकादशीव्रत श्राद्ध, श्रीरामबरात मेला आगरा
द्वादशी	बुधवार	11.10.2023	सन्यासीनां द्वादशी श्राद्ध
त्रयोदशी	गुरुवार	12.10.2023	प्रदोषव्रत, त्रयोदशी श्राद्धं, मास शिवरात्रि
चतुर्दशी	शुक्रवार	13.10.2023	असाम्यक दुर्मरण–चतुर्दशी श्राद्ध, देवी कात्यायनी जयन्ती,
अमावस्या	शनिवार	14.10.2023	सर्वपितृअमावस्या श्राद्ध, पितरविसर्जन, भूलेबिसरो का श्राद्ध

15 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 2023 तक (आश्विन शुक्ल पक्ष) शरद ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	रविवार	15.10.2023	शारदीय नवरात्रारम्भः, कलशस्थापन, मातामह श्राद्ध, श्री अग्रसेन जयन्ती
द्वितीया	सोमवार	16.10.2023	विश्वखाद्यदिवस
तृतीया	मंगलवार	17.10.2023	सिन्दूर तृतीया
पंचमी	गुरुवार	19.10.2023	उपांगललिताव्रत
षष्ठी	शुक्रवार	20.10.2023	सरस्वतीआवाहनं, नवपद ओली प्रा0, जैन मुनि पुष्कर जयन्ती
सप्तमी	शनिवार	21.10.2023	सरस्वती पूजनं, भद्रकाल्यावतारः
अष्टमी	रविवार	22.10.2023	श्रीदुर्गाष्टमी पूजा, मेला ज्वालामुखी तारा देवी, सरस्वती विसर्जन
नवमी	सोमवार	23.10.2023	पंचक प्रारंभ 28/20, महानवमी, आयुध पूजा
दशमी	मंगलवार	24.10.2023	विजयादशमी, दशहरा मेला अपराजिताशमी पूजा, माध्वाचार्य जयन्ती
एकादशी	बुधवार	25.10.2023	पापांकुशा एकादशीव्रत सर्वे, भरत मिलाप
द्वादशी	गुरुवार	26.10.2023	प्रदोषव्रत, विलय दिवस
त्रयोदशी	शुक्रवार	27.10.2023	शाकुंभरी देवी दर्शन मेला सहारनपुर
पूर्णिमा	शनिवार	28.10.2023	पंचक समाप्त 7/30, रासपूर्णिमा, सत्यव्रत, कोजागरी व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती

29 अक्टूबर से 13 नवम्बर 2023 तक (कार्तिक कृष्ण पक्ष) हेमन्त ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	रविवार	29.10.2023	कृष्क भूमि पूजा
द्वितीया	सोमवार	30.10.2023	गुरुरामदासजयंती
तृतीया	मंगलवार	31.10.2023	सरदार पटेल जयंती, एकता दिवस, रोहिणीव्रत
चतुर्थी	बुधवार	01.11.2023	करवाचौथव्रत चन्द्रोदय रात्रि 20/17
अष्टमी	रविवार	05.11.2023	अहोई अष्टमीव्रत पूजा, चन्द्रोदय 24/5, कालाष्टमी
एकादशी	गुरुवार	09.11.2023	रमाएकादशीव्रत सर्वे
द्वादशी	शुक्रवार	10.11.2023	गोवत्सद्वादशी, धनत्रयोदशी, श्री धन्वन्तरि जयंती
त्रयोदशी	शनिवार	11.11.2023	नरक १४, दीपोत्सवदर्शन (काशी), मासशिवरात्रि
चतुर्दशी	रविवार	12.11.2023	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजा, दीपोत्सव, रा0 प्रसारदिवस
अमावस्या	सोमवार	13.11.2023	कार्तिक अमावस्या, महावीरनिर्वाण दिवस, महर्षि दयानंद पुण्यः, पुष्कर मेला प्रारंभ।
14 नवम्बर से 27 नवम्बर 2023 तक (कार्तिक शुक्ल पक्ष) हेमन्त ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	मंगलवार	14.11.2023	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलि पूजा, बालदिवस
द्वितीया	बुधवार	15.11.2023	चन्द्रदर्शन, भाईदूज, यमद्वितीया, विश्वकर्मा पूजा
चतुर्थी	शुक्रवार	17.11.2023	छटि पर्व प्रा0, लाजपतराय पुण्यः
पंचमी	शनिवार	18.11.2023	सौभाग्य एवं ज्ञान पंचमी, नहायखाय छटि महापर्व प्रा0
षष्ठी	रविवार	19.11.2023	सूर्यषष्ठी, डालाछटि, सहस्रार्जुन जयंती
अष्टमी	सोमवार	20.11.2023	पंचक प्रा0 10/6, गोपाष्टमी पर्व गोपूजन, यवन्नादिदान
नवमी	मंगलवार	21.11.2023	अक्षय–आंवला–कूष्माण्डनवमी, जुगल जोड़ी परिक्रमा वृन्दावन
दशमी	बुधवार	22.11.2023	आशादशमी, आरोग्य व्रत, कंसवध लीला मथुरा
एकादशी	गुरुवार	23.11.2023	प्रबोधिनीएकादशीव्रत (देवउठान) तुलसी विवाह, भीष्म पंचक
द्वादशी	शुक्रवार	24.11.2023	पंचक समाप्त 16/0, श्रीकालीदास जयंती, श्रीखाटू श्याम मेला
त्रयोदशी	शनिवार	25.11.2023	प्रदोषव्रत, बैकुण्ठ चतुर्दशी
चतुर्दर्शी	रविवार	26.11.2023	चौमासी 14 जैन, सत्यव्रत
पूणिमा	सोमवार	27.11.2023	कार्तिक पूर्णिमा, स्नानपूर्ण, भीष्म पंचक समाप्त, श्री श्रीगुरुनानक जयंती

28 नवम्बर से 12 दिसम्बर 2023 तक (मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष) हेमन्त ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
तृतीया	गुरुवार	30.11.2023	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 19/56
सप्तमी	सोमवार	04.12.2023	नौसेना दिवस
अष्टमी	मंगलवार	05.12.2023	महाकाल भैरवाष्टमी
नवमी	बुधवार	06.12.2023	डॉ. अम्बेड़कर पुण्यः
दशमी	गुरुवार	07.12.2023	महावीर स्वामी दीक्षाकल्याणंक, सशस्त्र सेनादिवस
एकादशी	शुक्रवार	08.12.2023	उत्पत्तिएकादशीव्रत
द्वादशी	शनिवार	09.12.2023	उत्पन्नाएकादशी व्रत, रामानुज–बल्लभ–निम्बार्क
द्वादशी	रविवार	10.12.2023	प्रदोषव्रत, मानवाधिकार दिवस
त्रयोदशी	सोमवार	11.12.2023	मासशिवरात्रि, श्रीबालाजी जयंती
अमावस्या	मंगलवार	12.12.2023	भौमवासरीमावस, देवपितृकार्येऽमापुण्यः, अन्वाधान

13 दिसम्बर से 26 दिसम्बर 2023 तक (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष) हेमन्त ऋतु, रविदक्षिणायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
द्वितीया	गुरुवार	14.12.2023	चन्द्रदर्शन
तृतीया	शुक्रवार	15.12.2023	पटेल पुण्यः
चतुर्थी	शनिवार	16.12.2023	वैनायकीचौथव्रत, विजय दिवस
पंचमी	रविवार	17.12.2023	पंचक प्रारंभ 15/44, श्रीपंचमी, श्रीरामजानकी विवाहोत्सव, श्रीबांके बिहारी प्राकटयोत्सव, गुरुतेगबहादुर बलिदान दिवस,
षष्ठी	सोमवार	18.12.2023	स्कन्दषष्ठी, चम्पाषष्ठी
सप्तमी	मंगलवार	19.12.2023	मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती, विष्णु–नंदा–भद्रा ७
नवमी	गुरुवार	21.12.2023	पंचक समाप्त 22/8, नन्दिनवमी
दशमी	शुक्रवार	22.12.2023	मोक्षदाएकादशीव्रत स्मार्त्त
द्वादशी	शनिवार	23.12.2023	अखण्डा १२, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, किसान दिवस
त्रयोदशी	रविवार	24.12.2023	प्रदोषव्रत, राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस
चतुर्दर्शी	सोमवार	25.12.2023	पिशाचमोचन श्राद्ध, क्रिसमसडे (बड़ा दिन), रोहिणीव्रत, अटल जयंती, पं0 मालवीय जयंती
पूणिमा	मंगलवार	26.12.2023	सत्यव्रत पूर्णिमा, श्रीदत्तजयंती, श्रीविद्याजयंती, अन्नपूर्णा जयंती।

27 दिसम्बर से 11जनवरी 2024 तक (पौष कृष्ण पक्ष) शिशिर ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
तृतीया	शनिवार	30.12.2023	चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 20 / 39
अष्टमी	गुरुवार	04.01.2024	कालाष्टमीव्रत, अष्टका श्राद्ध
दशमी	शनिवार	06.01.2024	पत्रकार दिवस
एकादशी	रविवार	07.01.2024	सफलाएकादशीव्रत सर्वे, कल्पवास प्रारम्भ प्रयागराज
त्रयोदशी	मंगलवार	09.01.2024	भौमप्रदोषव्रत, बाबा नागपाल पुण्यः, मासशिवरात्रि, प्रवासी भारतीय दिवस
चतुर्दशी	बुधवार	10.01.2024	विश्व हिंदी दिवस, श्रीजयप्रभविजय पुण्यः
अमावस्या	गुरुवार	11.01.2024	शास्त्रीजी पुण्यः, पौषीदेव पितृ अमावस्या पुण्यः वकुलामावस (उड़ीसा)
12 जनवरी से 25 जनवरी 2024 तक (पौष शुक्ल पक्ष) शिशिर ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शुक्रवार	12.01.2024	स्वामी विवेकानंद जयंती, युवा दिवस
द्वितीया	शनिवार	13.01.2024	पंचक प्रारम्भ 23 / 35, चन्द्रदर्शन, लोहडी पर्व
तृतीया	रविवार	14.01.2024	मकर संक्रान्ति, पौंगल पर्व, गंगासागर यात्रारम्भः
पंचमी	सोमवार	15.01.2024	सेना दिवस
सप्तमी	बुधवार	17.01.2024	पंचक समाप्त 27 / 33, गुरुगोविन्द सिंह जयंती, श्रीनंदबाबा जयंती
एकादशी	रविवार	21.01.2024	पुत्रदाएकादशीव्रत सर्वे, रोहिणी व्रत
द्वादशी	सोमवार	22.01.2024	कल्पवास समाप्त
त्रयोदशी	मंगलवार	23.01.2024	भौम प्रदोष व्रत, नेताजी सुभाष जयंती, पराक्रम दिवस
चतुर्दशी	बुधवार	24.01.2024	उत्तर प्रदेश दिवस
पूणिमा	गुरुवार	25.01.2024	पौषी सत्यव्रतपूर्णिमा, माघस्नानारंभः, देवीशाकुम्भरी जयंती

26 जनवरी से 9 फरवरी 2024 तक (माघ कृष्ण पक्ष) शिशिर ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शुक्रवार	26.01.2024	दशाश्वमेघघाट स्नानारम्भः, भारतीय गणतंत्र दिवस 75वाँ
तृतीया	रविवार	28.01.2024	लाला लाजपतराय जयंती
चतुर्थी	सोमवार	29.01.2024	संकष्ठी श्रीगणेश चतुर्थीव्रत (सकट चौथ) चन्द्रोदय 20/11
चतुर्थी	मंगलवार	30.01.2024	गांधीजी पुण्यः,सर्वोदय पखवारा शुरू
सप्तमी	शुक्रवार	02.02.2024	श्रीरामानन्दाचार्य जयंती, कालाष्टमीव्रत
अष्टमी	शनिवार	03.02.2024	अष्टका श्राद्ध
एकादशी	मंगलवार	06.02.2024	षट्तिलाएकादशीव्रत सर्वे
द्वादशी	बुधवार	07.02.2024	प्रदोषव्रत, शीतलनाथ जयंती जैन
त्रयोदशी	गुरुवार	08.02.2024	मेरुत्रयोदशी, पितृकार्यअमावस्या, मासशिवरात्रि
चतुर्दशी	शुक्रवार	09.02.2024	मौनी अमावस्या, रटन्तीकालिका पूजन

10 फरवरी से 24 फरवरी 2024 तक (माघ शुक्ल पक्ष) शिशिर ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	शनिवार	10.02.2024	गुप्तनवरात्रि विधान, पंचक प्रारम्भ 10/0
द्वितीया	रविवार	11.02.2024	बाबा लालदयाल जयंती
तृतीया	सोमवार	12.02.2024	गौरी तृतीया, सर्वोदयदिवस
चतुर्थी	मंगलवार	13.02.2024	वरद्चतुर्थी तिल –4, रेडियो दिवस
पंचमी	बुधवार	14.02.2024	वसन्तपंचमी, श्रीपंचमी, पंचक समाप्त 10/42, श्रीसरस्वती जयंती
षष्ठी	गुरुवार	15.02.2024	मन्दार षष्ठी, दारिद्रय षष्ठी, शीतला 6
सप्तमी	शुक्रवार	16.02.2024	अचला सप्तमी, भीष्माष्टमी श्राद्ध
अष्टमी	शनिवार	17.02.2024	रोहिणीव्रत
दशमी	सोमवार	19.02.2024	दामोदरप्राकटयोत्सवः वृन्दावन,
एकादशी	मंगलवार	20.02.2024	जयाएकादशीव्रत सर्वे
द्वादशी	बुधवार	21.02.2024	भीष्म द्वादशी, प्रदोषव्रत, हिंदी दिवस
त्रयोदशी	गुरुवार	22.02.2024	गुरुहरराय जयंती
चतुर्दशी	शुक्रवार	23.02.2024	श्रीभागवतपाठारंभ, सत्यव्रत, श्रीरामचरण स्नेही जयंती
पूर्णिमा	शनिवार	24.02.2024	माघी पूर्णिमा, गुरुरविदास जयंती, माघस्नान समाप्त, श्री ललिता जयंती

25 फरवरी से 10 मार्च 2024 तक (फाल्गुन कृष्ण पक्ष) वसंत ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
चतुर्थी	बुधवार	28.02.2024	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 21/42, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
पंचमी	गुरुवार	29.02.2024	माता यशोदा जयंती, महाकाल शिवरात्रारम्भ, उज्जैन
षष्ठी	शुक्रवार	01.03.2024	महाकाल पूजा विशेष
सप्तमी	रविवार	03.03.2024	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
अष्टमी	सोमवार	04.03.2024	श्रीजानकीव्रत
नवमी	मंगलवार	05.03.2024	समर्थ गुरु रामदास नवमी, महर्षि दयानंद जयंती
एकादशी	गुरुवार	06.03.2024	विजयाएकादशीव्रत स्मार्त्त
त्रयोदशी	शुक्रवार	08.03.2024	पंचक समाप्त 21/17, महाशिवरात्रिव्रत, प्रदोषव्रत, विश्व महिला दिवस, श्री वैद्यनाथ जयंती
अमावस्या	रविवार	10.03.2024	देवकार्ये अमावस्या, शिव खप्पर पूजा
11मार्च से 25 मार्च 2024 तक (फाल्गुन शुक्ल पक्ष) वसंत ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
द्वितीया	मंगलवार	12.03.2024	पंचक समाप्त 20/28, फुलेरादूज लोक प्रसिद्ध मुहुर्त, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती, लेखरामवीर तृतीया
षष्ठी	शुक्रवार	15.03.2024	रोहिणीव्रत
अष्टमी	रविवार	17.03.2024	संतदादूदयाल जयन्ती, होलाष्टक प्रारम्भ
नवमी	सोमवार	18.03.2024	लट्ठमार होली बरसाना
एकादशी	बुधवार	20.03.2024	अमलाएकादशीव्रत सर्वे, मेला खाटूश्यामजी (राज0)
द्वादशी	गुरुवार	21.03.2024	गोविन्द द्वादशी, कठपुतली दिवस
त्रयोदशी	शुक्रवार	22.03.2024	प्रदोषव्रत, विश्व जल दिवस
त्रयोदशी	शनिवार	23.03.2024	शहीद दिवस, भक्त मीराबाई जयंती
चतुर्दशी	रविवार	24.03.2024	होलिका दहन 23/12 उपरांत
पूर्णिमा	सोमवार	25.03.2024	चैतन्य महाप्रभु जयंती, छरेंडी, घुलैण्डी

26 मार्च से 8 अप्रैल 2024 तक (चैत्र कृष्ण पक्ष) वसंत ऋतु, रविउत्तरायणे			
तिथि	**वार**	**दिनांक**	**व्रत, पर्व, त्यौहार**
प्रतिपदा	मंगलवार	26.03.2024	वसंतप्रतिपदा, वसन्तोत्सव
द्वितीया	बुधवार	27.03.2024	संततुकाराम जयन्ती
तृतीया	गुरुवार	28.03.2024	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय 21/28
चतुर्थी	शुक्रवार	29.03.2024	गुड फ्राइडे
पंचमी	शनिवार	30.03.2024	श्रीरंग पंचमी
षष्ठी	रविवार	31.03.2024	एकनाथ षष्ठी, नौचन्दी मेला मेरठ
सप्तमी	सोमवार	01.04.2024	शीतला पूजन (बासौड़ा)
अष्टमी	मंगलवार	02.04.2024	श्रीऋषभदेव जयंती
दशमी	गुरुवार	04.04.2024	दशमाता पूजनं, महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती
एकादशी	शुक्रवार	05.04.2024	पंचक प्रारम्भ 7/09, पापमोचनीएकादशीव्रत सर्वे
द्वादशी	शनिवार	06.04.2024	प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	रविवार	07.04.2024	मास शिवरात्रि, रंगतेरस, विश्व स्वास्थ्य दिवस
अमावस्या	सोमवार	08.04.2024	सोमोतीमावस, देवपितर अमापुण्यः, जल संसाधन दिवस

स्वयं सिद्ध मुहूर्त (अनपूछ मुहूर्त)

नीचे दिये गये साढ़े तीन मुहूर्त स्वयं सिद्ध माने जाते हैं, जिसमें पंचांग की शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है –

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2. वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया), 3. आश्विन शुक्ल दशमी (विजयादशमी), 4. (आधा) दीपावली का प्रदोष काल।

भारतवर्ष में इनके अतिरिक्त लोकाचार और देशाचार के अनुसार निम्नलिखित तिथियों को भी स्वयंसिद्ध मुहूर्त माना जाता है।

1. भड्डली नवमी (आषाढ शुक्ल नवमी), 2. देवोत्थानी एकादशी (कार्तिक शुक्ल एकादशी), 3. वसन्त पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी), 4. फुलेरा दूज (फाल्गुन शुक्ल द्वितीया)

इनमें (स्वयंसिद्ध मुहूर्तों में) किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु विवाह आदि में तो पंचांग में दिये गये मुहूर्तों को ही स्वीकार करना श्रेयस्कर है।

दुर्गुणों का प्रवाह मोड़ने से वे साधना में सहायक

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान और मत्सर ये छः महा मानस रोग जीव को सदैव नचाते रहते हैं। इनके शमन का सरल उपाय संतों ने बताया है कि इनका प्रवाह मोड़ दो अर्थात् इन्हें साधना से जोड़ लो। फिर ये रोग हानिकारक न होकर लाभकारी होंगे, ठीक उसी प्रकार से जैसे बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का अतिरिक्त जल सूखाग्रस्त क्षेत्र की ओर मोड़ देने से होता है। उपर्युक्त रोगों के रुख मोड़ने का साधन विद्वानों ने इस प्रकार से बताया है–

कामः– काम का प्रवेश नेत्रों के माध्यम से होता है। नेत्रों को भगवान के स्वरूप दर्शन में लगा दो, क्योंकि भगवान राम और कृष्ण से सुंदर और कौन हो सकता है। श्रीरामजी के रूप को देखकर सभी मोहित हो गए थे, क्योंकि **'रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा' (1/199/12)।**

क्रोधः– क्रोध अपने दुर्गुणों पर कीजिए और उन्हें दूर करने का प्रयास कीजिए। क्रोध कीजिए अपने ही ऊपर कि मेरे कारण ही यह हुआ है, दूसरा कोई दोषी नहीं। संत कबीर के अनुसार –

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोइ।
जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोइ।।

लोभः– लोभ कीजिए समय बचाने के लिए और फिर उसे साधना में लगाने के लिए। जैसे–जैसे साधना में वृद्धि होती जाए वैसे–वैसे ही उसे और तीव्रतम करने का लोभ करने से इसकी दिशा प्रभु की ओर हो जाएगी।

मोहः– मोह की जननी है संदेह। श्रद्धा–विश्वास से संदेह दूर होता है और संदेह रहित होने पर मोह नहीं होता है। भवानी–शंकर श्रद्धा–विश्वास के स्वरूप हैं, **'भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ'**, अतः शिव–पार्वती का स्मरण करने से मोह भाग जाएगा। इस हेतु निरंतर प्रभु स्मरण (अपने इष्ट का) करने की आवश्यकता है।

मान अर्थात अभिमानः— अभिमान तीन प्रकार का होता है, सात्विक, राजसी और तामसी। श्रीहनुमानजी ने रावण को तामसी अभिमान त्याग करने को कहा था—**'त्यागहु तम अभिमान' (5/23)।** हमें यह सात्विक अभिमान करना चाहिए कि मैं सेवक हूँ और मेरे स्वामी रघुनाथजी हैं, यथा –

अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे।। (3/11/21)

मत्सर (ईर्ष्या):— हमें साधकों से ईर्ष्या इस भाव से करनी चाहिए कि अमुक साधक इतनी साधना करते हैं, मैं उनकी तुलना में कुछ नहीं कर पा रहा हूँ। मुझे सावधान रहकर साधना में वृद्धि करनी चाहिए।

इस प्रकार से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मान और मत्सर का रुख मोड़ने से ये रोग साधना में बाधक न होकर सहायक बन सकते हैं। यह सब तभी संभव होगा जब हम प्रभु शरण में रहेंगे। इसका उपाय भी श्रीरामजी ने पंपापुर सरोवर के तट पर नारदजी को उस समय बताया था जब उन्होंने प्रश्न किया कि आपने मेरा विवाह क्यों नहीं होने दिया। श्रीरामजी ने समझाया कि तुम जैसे वैराग्यवान के लिए गृहस्थ जीवन ठीक नहीं है, ऐसा सोचकर तुम्हें गृहस्थी के जंजाल में फँसने से बचा लिया। श्रीरामजी ने समझाया कि ज्ञानी लोग मेरे बड़े बच्चों की तरह से हैं, वे माया से अपनी सँभाल स्वयं कर लेते हैं, किंतु मेरे भक्त तो छोटे नादान शिशु की तरह से हैं जिनकी देखभाल मैं इस तरह से करता हूँ जैसे एक माँ अबोध बच्चे की करती है, यथा –

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा। भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा।।
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी।।
मोरे पौढ़ तनय सम ग्यानी। बालक सुत सम दास अमानी।।
(3/43/4,5 एवं 7)

इस आलेख का **सार तत्व यह है कि हम सदैव भगवत् शरण में रहें** ताकि माया के प्रभाव से प्रचालित काम, क्रोध, लोभ आदि मानस रोगों से बचकर ठीक उसी प्रकार से सुखी रह सकें जैसे अगाध जल में मछली, यथा –

सुखी मीन जे नीर अगाधा। जिमि हरि सरन न एकउ बाधा।। (4/17/1)

आरती एवं वन्दना

आरती श्री गणेशजी की

जय गणेश, जय गणेश जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।। जय गणेश ...।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय गणेश ...।।
लड्डुन का भोग लगे, सन्त करें सेवा। हार चढ़ें, फूल चढ़ें और चढ़े मेवा।। जय गणेश ...।।
दीनन की लाज रखो शम्भू–सुत वारी। कामना को पूर्ण करो हम बलिहारी।। जय गणेश ...।।

आरती श्रीरामचन्द्रजी की

जगमग जगमग जोत जली है। राम आरती होन लगी है।।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती। आरति संत करें दिन राती।।
आनन्द की सरिता उभरी है। जगमग जगमग जोत जली है।।
कनक सिंहासन सीय समेता। बैठहिं राम होइ चित चेता।।
वाम भाग में जनक लली है। जगमग जगमग जोत जली है।।
आरति हनुमत के मन भावे। राम कथा नित शंकर गावे।।
सन्तों की ये भीड़ लगी है। जगमग जगमग जोत जली है।।

आरती श्रीरामायणजी की

आरति श्रीरामायनजी की। कीरति कलित ललित सिय पी की।। आरती श्री ...
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिशारद।।
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी।। आरती श्री ...
गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबही की। आरती श्री ...
गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।। आरती श्री ...
कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की।। आरती श्री ...

आरती भगवान जगदीश्वर की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।। ॐ जय ...।।
जो ध्यावै फल पावै, दुख विनसै मन का।। स्वामी ...।।
सुख–सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का।। ॐ जय ...।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।। स्वामी ...।।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। ॐ जय ...।।
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।। स्वामी ...।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ जय ...।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।। स्वामी ...।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। ॐ जय ...।।
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपती।। स्वामी ...।।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती।। ॐ जय ...।।
दीनबन्धु दुख हरता, तुम ठाकुर मेरे।। स्वामी ...।।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ जय ...।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।। स्वामी ...।।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ॐ जय ...।।
तन, मन, धन, सब कुछ है तेरा।। स्वामी ...।।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।। ॐ जय ...।।
श्यामसुन्दरजी की आरति जो कोई नर गावै।। स्वामी ...।।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावै।। ॐ जय ...।।

आरती सरस्वतीजी की

शारदे जय हंसवाहिनी,
जयति वीणावादिनी।
जय सरस्वती ज्ञानदायिनी,
कमल हंस विराजिनी।
शारदे जय हंसवाहिनी,
ऋद्धि सिद्धि विवेकदायिनी,
कुमति शूल विनाशनी।
देवी मंद सुहास वर्षनी,
हृदय हंस विराजिनी।
शारदे जय हंसवाहिनी,
मधुर काव्य कला,
प्रणव नाद विकासिनी।
भगवती संगीत वर दे,
भुवन मानस वासिनी।
शारदे जय हंसवाहिनी,
जयति वीणावादिनी।

आरती शिवजी की

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि।।

जय शिव ओंकारा प्रभु भज शिव ओंकारा, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा। ॐ हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै, हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै। ॐ हर हर महादेव।।
दो भुज चारु चतुर्भुज दस भुज ते सोहै, तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहै। ॐ हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, चंदन मृगमद सोहै भोले शुभकारी। ॐ हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे, सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे। ॐ हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी, सुखकारी दुखहारी जग पालन कारी। ॐ हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका। ॐ हर हर महादेव।।
त्रिगुणस्वामी की आरती जो कोई नर गावै, कहत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावै। ॐ हर हर महादेव।।

आरती श्रीहनुमानजी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग–दोष जाके निकट न झाँकै।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पताल तोरि जमकारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुरदल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।। आरती ...

आरती सत्यनारायणजी की

ॐ जय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन–पातक–हरणा।। ॐ जय ...
रत्न जटित सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजै।। ॐ जय ...
प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो।। ॐ जय. ...
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, तिनकी बिपति हरी।। ॐ जय ...
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं।। ॐ जय ...
भाव–भक्ति के कारण, छिन–छिन रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीनीं, तिनको काज सर्‌यो।। ॐ जय ...
ग्वाल–बाल सँग राजा, बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी।। ॐ जय ...
चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।। ॐ जय ...
सत्यनारायणजी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी वांछित फल पावै।। ॐ जय ...

आरती अम्बेजी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।। ॐ जय अम्बे ...
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको।। ॐ जय अम्बे ...
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।। ॐ जय अम्बे ...
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी।। ॐ जय अम्बे ...
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योती।। ॐ जय अम्बे ...
शुम्भ–निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नयना, निशिदिन मदमाती।। ॐ जय अम्बे ...
चण्ड–मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे। मधु–कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। ॐ जय अम्बे ...
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम–निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। ॐ जय अम्बे ...
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरू। बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू।। ॐ जय अम्बे ...
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पति करता।। ॐ जय अम्बे ...
भुजा चार अति शोभित, वर–मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी।। ॐ जय अम्बे ...
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योती।। ॐ जय अम्बे ...
अम्बे जी की आरति, जो कोई नर गावै। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख–सम्पति पावै।। ॐ जय अम्बे ...

श्री रामचन्द्रजी की स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारुणम्।
नव कंज लोचन, कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्।।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम्।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द दशरथ–नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनम्।।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।

आरती कुंजबिहारीजी की

आरती कुंज बिहारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला।
नन्द के आनन्द, मोहन बृजचन्द, परमानन्द, राधिका रमण बिहारी की।। आरती कुंज ...
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चन्द्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की।। आरती कुंज ...
कनकमय मोर मुकुट विलसै, देवता दर्शन को तरसै।
गगन से सुमन बहुत बरसें, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल छवि गोप कुमारी की।। आरती कुंज ...
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा,
स्मरण से होत मोह भंगा, बसी शिव शीश, जटा के बीच,
हरै अघ कीच, चरण छवि श्री बनवारी की।। आरती कुंज ...
चमकती उज्ज्वल तट रेणू, बाजती वृन्दावन वेणू।
चहुँ दिशि गोप ग्वाल धेनू, हंसत मृदुमन्द, चांदनी चन्द।
कटत भव फन्द, टेर सुन दीन दुखारी की।। आरती कुंज ...

आरती लक्ष्मीजी की

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णू धाता।। जय लक्ष्मी . . .
उमा रमा ब्रह्माणी तुम ही जग–माता,
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता। जय लक्ष्मी ...
दुर्गा रूप निरंजन सुख संपति दाता,
जो कोइ तुमको ध्यावत ऋधि सिधि धन पाता। जय लक्ष्मी ...
तुम पाताल निवासिनि तुम ही शुभदाता,
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि भवनिधि की त्राता। जय लक्ष्मी ...
जिस घर तुम रहतीं तहँ सब सद्‌गुण आता,
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता। जय लक्ष्मी ...
तुम बिन यज्ञ न होते वस्त्र न हो पाता,
खान–पान का वैभव सब तुम से आता। जय लक्ष्मी ...
शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता। जय लक्ष्मी ...
श्रीलक्ष्मीजी की आरती जो कोई नर गाता,
उर आनन्द समाता पाप उतर जाता। जय लक्ष्मी ...

आरती श्रीरामजी की

हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ
आरती उतारूँ मैं तो तन मन वारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।
कनक सिंहासन राजत जोरी–दसरथ नन्दन जनक किशोरी।
युगल छवी को सदा निहारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।
वाम भाग शोभित जग जननी–चरण विराजत हैं सुत अंजनी।
इन चरणों में जीवन वारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।
चरणों से निकली गंगा प्यारी– पावन करती है दुनियाँ सारी।।
इन चरणों को सदा पखारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।
आरति हनुमत के मन भावै–रामकथा नित शिवजी गावै।
मैं सुन सुन निज जनम संवारूँ।
हे राजा राम तेरी आरती उतारूँ।।

आरती अवध बिहारी की

आरती अवध बिहारी की, लखन सिया जनक दुलारी की।
शीश पर क्रीट मुकुट सोहे। चंद्रिका की छवि मन मोहे।।
लखन सेवा बलिहारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।
कपोलन पै अलकैं झलकें। अधर पै बिजली सी चमके।।
छवि कजरारे नयनन की। लखन सिया जनक दुलारी की।।
अंग सब ज्यों निर्मल नीरा। भरत रिपुदलन महावीरा।।
चरण सेवा धनुधारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।
जिए जुग श्यामलता जोरी। भजो मन सब माया तोरी।।
दरस हित युगल बिहारी की। लखन सिया जनक दुलारी की।।

वंदना

जिस घर में हो आरती, चरण कमल चितलाय। वहाँ प्रभु वासा करें, स्वर्ग लोक से आय।।
कथा सदा होती रहे, सुनो वीर हनुमान। राम लखन सीता सहित, सदा करो कल्यान।।
बार बार वर माँगहुं, राम कृपा कर देहु। जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुँ घटे जनि नेहु।।
देवता सब आश्रम गये, शम्भु गये कैलाश। श्रोता–वक्ता जायेंगे, हरि सुमिरन की आस।।
मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर। अस विचार रघुवंश मनि, हरहु विषम भव भीर।।
हम तो कुछ जाने नहीं, तुम जानों रघुनाथ। सेवा पूजा वन्दना, सबहि तुम्हारे हाथ।।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, ग्रहण करो महाराज। कृपा दृष्टि अवलोकिए, शरण पड़े की लाज।।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।
ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्या कुमारी च धीमहि तन्नो दुर्गे प्रचोदयात्।
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।
ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
ॐ वासुदेवाय विद्महे राधाबल्लभाय धीमहि तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।
ॐ दशरथाय विद्महे सीताबल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।
ॐ रामदूताय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमत प्रचोदयात्।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वरः। यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।

श्रीरामचरितमानस पाठ आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री

सूची 1 केवल पाठ हेतु

01.	नारियल– (पानी वाला)	
02.	लाल कपड़ा 1 मीटर	
03.	सुपारी–5	
04.	धूपबत्ती	
05.	कलावा	
06.	रोली	
07.	कपूर (डली का)	
08.	इलायची 10 ग्राम	
09.	लौंग 10 ग्राम	
10.	देशी घी 250 ग्राम	
11.	मिश्री 100 ग्राम	
12.	सौंफ 50 ग्राम	
13.	काली मिर्च 10 ग्राम	
14.	गंगाजल	
15.	फल 5 तरह के	
16.	मिष्ठान	
17.	दूर्वा	
18.	तुलसी के पत्ते	
19.	रूई	
20.	पान साबुत	5
21.	फूल हार	7
22.	आम के पत्ते	
23.	कलश	1
24.	थाली	4
25.	लोटा	2
26.	चम्मच	2

सूची 2 यदि पाठ के साथ यज्ञ भी हो

01.	घी	500 ग्राम
02.	हवन सामग्री	1 कि.ग्रा.
03.	काले तिल	50 ग्राम
04.	इन्द्र जौ	25 ग्राम
05.	जौ	50 ग्राम
06.	बेलगिरी	250 ग्राम
07.	अगर	25 ग्राम
08.	तगर	25 ग्राम
09.	नागर मौथा	25 ग्राम
10.	गोला साबुत	1
11.	हवन के लिए लकड़ी ढाई कि.ग्रा. (आम/आक/ढाक की)	
12.	कच्ची खांड	250 ग्राम

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति, घर परिवार में अमन चैन तथा जीवन का परम लक्ष्य भगवत्कृपा प्राप्ति हेतु रामायण/सुंदरकाण्ड पाठ के आयोजन हेतु हमें संपर्क कर सकते हैं –

सम्पर्क सूत्र– 0120–4305457 एवं 9811056467

श्री राम जय राम जय जय राम

बधाई गीत पर नृत्य करते हुए भक्तगण

श्री राम जय राम जय जय राम

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED

(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti

WATER, POWER, INFRASTRUCTURE
MINI RATNA-1
ISO 9001: 2015

A GLOBAL LEADER
in
Consultancy & Engineering Procurement & Construction (EPC) providing Integrated and Customised Solutions for Sustainable Development of Water, Power and Infrastructure Projects

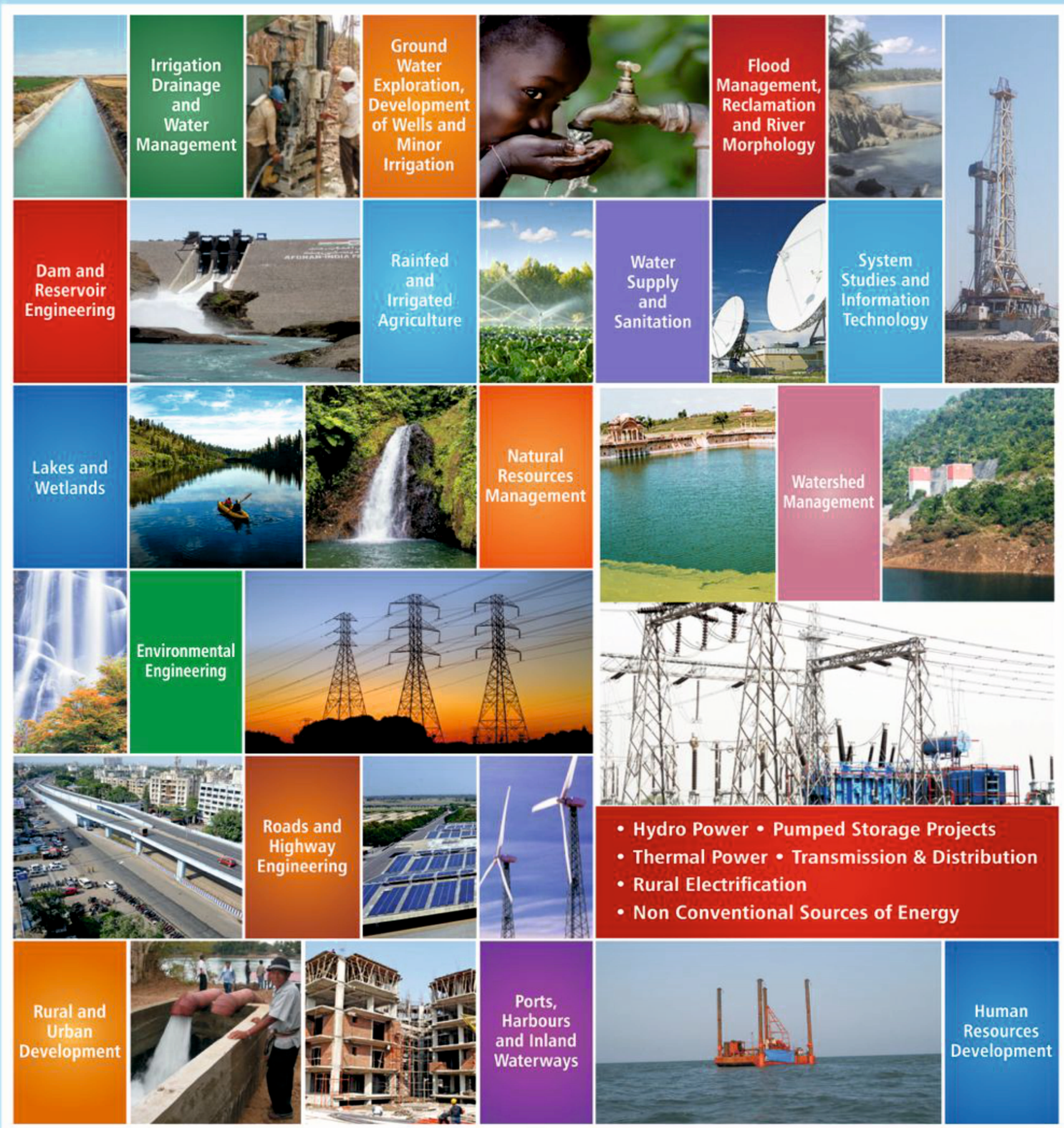

Registered Office : 5th Floor, "Kailash", 26, Kasturba Gandhi Marg, New Delhi - 110 001 (INDIA)
Tel. : +91-11-23313131-2, 23313881, Fax : +91-11-23313134, 23314924, E-mail: ho@wapcos.co.in
www.wapcos.co.in

MEETING SOCIETY'S NEEDS GLOBALLY